संगिनी

विजय कुमार सिंह

संगिनी

विजय कुमार सिंह
एम०ए० (हिन्दी), एल-एल०बी०
अमर निवास, पुलिस लाइन्स रोड
बुलन्दशहर - 203 001, उत्तर प्रदेश, भारत.
E-mail : vksingh52@hotmail.com

प्रथम संस्करण – 2013

मूल्य : 250/-

प्रकाशक एवं मुद्रक :

अखिल पब्लिशर्स एण्ड प्रिन्टर्स

11, प्रथम तल, जिला परिषद् मार्केट, कोर्ट रोड, काला आम,
बुलन्दशहर – 203 001, उत्तर प्रदेश, भारत.
मोबाइल : +91-9412744467.

लेखक द्वारा रचित अन्य पुस्तकें :

1. वल्लकी (काव्य-संग्रह)
2. स्पन्दन (काव्य-संग्रह)
3. स्तवन (काव्य-संग्रह)

गुरुदक्षिणा

....

यह पेज कोरा रहेगा

पेज नं0 भी नहीं प्रिन्ट होगा

पाकर शुभमय दान तुम्हारा.....

....

आभार

....

2/1076, Pacific Highway,
PYMBLE NSW 2076,
AUSTRALIA
E-mail : vksingh52@hotmail.com

विजय कुमार सिंह
(30.11.2011)

Prof. Sarva-Daman Singh
B. A. (Hons.), M.A., Ph.D. (London)
Ph.D. (Queensland), F.R.A.S.
Honorary Consul of India to Queensland
AUSTRALIA

प्राक्कथन

....

अनुक्रमणिका

'गणपति वन्दना'.......

हे रे गणपति हे रे गजानन....

हे रे गणपति[1] हे रे गजानन[2],
सिद्धिदाता[3] शुभगुणकानन[4] ।

एकदंत[5] हो धूम्रवर्ण[6] तुम,
लम्बोदर[7] हो शूपकर्ण[8] तुम ।
हे रे मनोमय[9] हे मृत्युंजय[10],
हो रे चतुर्भुज[11] वक्रतुण्ड[12] तुम ।

मोदकप्रिय[13] हे मूषकवाहन[14],
हे रे गणपति हे रे गजानन ।

द्वैमातुर[15] हो दयावंत[16] तुम,
रक्त-हरिद्र[17] हो भालचंद्र[18] तुम ।
हे रे गदाधर[19] हे एकाक्षर[20],
गिरिजासुत[21] हो शंभुअंश[22] तुम ।

हे शुभस्वामी[23] भात्र[24] षडानन[25],
हे रे गणपति हे रे गजानन ।

बुद्धिविधाता[26] बुद्धिदाय[27] तुम,
हो रे यशस्विन[28] यज्ञकाय[29] तुम ।
हे रे भुवनपति[30] हे प्रथमेश्वर[31],
योगाधिप[32] हो मुक्तिदाय[33] तुम ।

मंगलमूर्ति[34] हे रे सनातन[35],
हे रे गणपति हे रे गजानन ।

हो रे अलम्पट[36] ओंकार[37] तुम,
विश्वामुख[38] हो विश्वराज[39] तुम ।
हे रे विनायक[40] हे वरदाता[41],
विघ्नेश्वर[42] हो विघ्नराज[43] तुम ।

विद्यावारिधि[44] हे सर्वात्मन[45],
हे रे गणपति हे रे गजानन ।

1. गणों के स्वामी ; 2. हाथी के मुख वाले ; 3. इच्छाओं और अवसरों के स्वामी ; 4. जो सभी गुणों के गुरू हैं ; 5. एक दाँत वाले ; 6. धुएँ के रंग के, सफेद ; 7. बड़े पेट वाले ; 8. बड़े कान वाले ; 9. दिल को जीतने वाले ; 10. मौत को हराने वाले ; 11. चार भुजाओं वाले ; 12. घुमावदार सूंड ; 13. जिनको लड्डू प्रिय हैं ; 14. चूहा जिनका वाहन है ; 15. दो माताओं वाले ; 16. दया करने वाले ; 17. लाल-पीला ; 18. जिनके माथे पर चन्द्रमा है ; 19. गदा धारण करने वाले ; 20. एकल अक्षर ; 21. पार्वती के बेटे ; 22. शिव के अंश, बेटे ; 23. हर प्रकार के कल्याण के मालिक ; 24. भाई ; 25. स्कन्द कार्तिकेय ; 26. बुद्धि की रचना करने वाले ; 27. बुद्धि देने वाले ; 28. लोकप्रिय ; 29. सभी पवित्र और बलि को स्वीकार करने वाले ; 30. संसार के स्वामी ; 31. सबके बीच प्रथम आने वाले ; 32. ध्यान के प्रभु ; 33. मुक्ति देने वाले ; 34. सभी गुणों के देव ; 35. अमर, नित्य, शाश्वत ; 36. शुद्ध, यतेन्द्रिय ; 37. ॐ के आकार वाला, ईश्वर ; 38. ब्रह्माण्ड के गुरू ; 39. संसार के स्वामी ; 40. सबके भगवान ; 41. वरदान देने वाले ; 42. सभी बाधाओं को हरने वाले ; 43. सभी बाधाओं के स्वामी ; 44. बुद्धि के देवता ; 45. ब्रह्माण्ड की रक्षा करने वाले ।

(01.12.2012)
सिडनी

1. मद से भरे हैं प्रिय तेरे......

मद[1] से भरे हैं प्रिय तेरे नयना, मधु से भरे हैं अधर प्रिय तुम्हारे ।

चेहरा सजाए मृदुता[2]-औ-स्मित[3],
मन का कुसुम भी अविरल[4] है कुसुमित[5],
श्वासों भरा है सुरभित[6] समीरण[7], पंचम[8] भरे हैं वचन[9] प्रिय तुम्हारे ।

माथे सजी है बिंदिया की झिल-मिल,
ग्रीवा[10] की माला गर्वित[11] है हिल-हिल,
घने केश जैसे कि काली घटाएँ, कुंडल सजे हैं करण[12] प्रिय तुम्हारे ।

कलाई में सजते हैं चूड़ी-औ-कंगन,
रह-रह के होती है पायल की रुन-झुन,
तन में भरे हैं उर्जा-औ-स्फूर्ति, लय से भरे हैं कदम प्रिय तुम्हारे ।

1. शराब, मद्य, नशा, उन्मत्ता, गर्व, अहंकार ; 2. कोमल, मधुर, मुलायम, प्रिय और सुहावना ; 3. मुस्कराहट ; 4. लगातार, मिला या सटा हुआ, अविरत, घना ; 5. खिला हुआ ; 6. खुशबू से भरा हुआ ; 7. हवा, पवन, समीर, वात ; 8. पाँचवाँ, सरगम का पाँचवाँ स्वर ; 9. वाणी, बात ; 10. गरदन, गला ; 11. अभिमान, घमंड, अहंभाव ; 12. कर्ण, कान ।

(25.12.2011)
सिडनी

2. समवेत सभी का स्वर गूँजे......

समवेत[1] सभी का स्वर गूँजे,
समवेत सभी का हाथ उठे ।
हम एक हैं यह कह दें सबसे,
अब एक यही आवाज़ उठे ।

कह दें हम द्वेष[2] विषमता से,
कहीं और ही जाकर बस जाएँ ।
यहाँ कोई जगह नहीं उनकी,
यहाँ मैत्री समता मुस्काएँ ।

हर रोज़ नया एक उत्सव हो,
हर रोज़ नया आह्लाद[3] उठे ।
हम एक हैं यह कह दें सबसे,
अब एक यही आवाज़ उठे ।

भर लें हम अपने अंतस[4] को,
कुछ स्वप्न सजे आशाओं से ।
हों न तनिक भयभीत कभी,
हम कैसी भी बाधाओं से ।

हो फलीभूत[5] नित श्रम अपना,
हर रोज़ सृजन[6] का राग उठे ।
हम एक हैं यह कह दें सबसे,
अब एक यही आवाज़ उठे ।

हम कौन हैं क्या हैं कैसे हैं,
हमको अब सारा जग जाने ।
कितनी सामर्थ्य-औ-शक्ति[7] है,
आओ हम खुद को पहचानें ।

हम हँस दें तो कलियाँ खिल दें,
हम चल दें तो सैलाब[8] उठे ।
हम एक हैं यह कह दें सबसे,
अब एक यही आवाज़ उठे ।

1. एकत्र, संचित, मिलाया हुआ, संबद्ध ; 2. शत्रुता, विरोध, वैर, वैमनस्यता, राग का विरोधी भाव ; 3. खुशी, प्रसन्नता, हर्ष ; 4. मन, अंतः ; 5. फल रूप में परिणत, फलित ; 6. रचना, सर्जन, उत्पत्ति, सृष्टि ; 7. योग्यता और ताकत ; 8. नदी की बाढ़ ।

(29.12.2011)
सिडनी

3. ऊँचे पर्वत मैदानों से.......

ऊँचे पर्वत मैदानों से,
इन मरुथल[1] और खदानों से।
लम्बे-लम्बे इन सागर तट,
अपनी भू[2] की चट्टानों से ।

हम एक हैं यह आवाज़ उठे,
हम एक हैं यह आवाज़ उठे ।

अपने खेतों खलियानों से,
कारखानों और दुकानों से ।
तरह-तरह के उद्योगों,
सारे शिक्षण संस्थानों से ।

हम एक हैं यह आवाज़ उठे,
हम एक हैं यह आवाज़ उठे ।

दुर्गों, महलों, मीनारों से,
घर से, घर के चौबारों से ।
इन गावों, कस्बों और शहरों,
छोटे-लम्बे गलियारों से ।

हम एक हैं यह आवाज़ उठे,
हम एक हैं यह आवाज़ उठे ।

अपनी इन हिंद ज़ुबानों से,
बच्चे और वृद्ध, जवानों से ।
मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारों,
स्तुति-औ-शबद, अजानों से।

हम एक हैं यह आवाज़ उठे,
हम एक हैं यह आवाज़ उठे ।

1. रेगिस्तान ; 2. ज़मीन, धरा, पृथ्वी ।

(29.12.2011)
सिडनी

4. यह नभ तेरा सूरज तेरा......

यह नभ तेरा सूरज तेरा,
चंदा और तारे तेरे हैं ।
यह पग तेरा यह पथ तेरा,
धरती पर सारे तेरे हैं ।

फिर भय कैसा संशय कैसा,
तू आगे-आगे बढ़ता चल ।
हो निर्भय तू सीना ताने,
हर बाधा पार निकलता चल ।

आशा तेरी विश्वास तेरा,
शक्ति-औ-साहस तेरे हैं ।
स्फूर्ति तेरी उल्लास तेरा,
यह धैर्य-औ-ढाढ़स तेरे हैं ।

फिर भय कैसा संशय कैसा,
तू आगे-आगे बढ़ता चल ।
हो निर्भय तू सीना ताने,
हर बाधा पार निकलता चल ।

श्रम तेरा अभ्यास तेरा,
यह अनुभव सारे तेरे हैं ।
दृष्टि तेरी उत्साह तेरा,
गति अतिशय[1] सारे तेरे हैं ।

फिर भय कैसा संशय कैसा,
तू आगे-आगे बढ़ता चल ।
हो निर्भय तू सीना ताने,
हर बाधा पार निकलता चल ।

गौरव तेरी गरिमा तेरी,
यह कल–औ–आगत[2] तेरे हैं।
मंजिल तेरी महिमा तेरी,
यह फल–औ–स्वागत तेरे हैं।

फिर भय कैसा संशय कैसा,
तू आगे–आगे बढ़ता चल ।
हो निर्भय तू सीना ताने,
हर बाधा पार निकलता चल ।

1. अत्यधिक, अधिकता, श्रेष्ठता ; 2. आया हुआ, प्राप्त, घटित ।

(01.01.2012)
सिडनी

5. मन माँझी बन कर गाता है......

मन माँझी बन कर गाता है, मन माँझी बन कर गाता है,
सुख दु:ख के सागर में अविरल[1], जीवन नौका तैराता है ।
मेरे जीवन की यह नौका,
बिन बाधा के बढ़ती जाए ।
लहरों के शांत थपेड़ें हों,
मंथर[2] गति से चलती जाए ।
मेरे अनुकूल[3] समीरण[4] हो, तन्मय[5] सुर में दोहराता है,
मन माँझी बन कर गाता है, मन माँझी बन कर गाता है ।

चंदा को गाता गीतों में,
सूरज की किरणों को गाए ।
नभ में छाए काले बादल,
वारिद[6] की बूँदों को गाए ।
ले पुनर्मिलन के गीत सजे, कभी विरहा राग सजाता है,
मन माँझी बन कर गाता है, मन माँझी बन कर गाता है ।

है मंजिल मेरी दूर अभी,
मेरा अदृश्य किनारा है ।
कुछ और नहीं है पास मेरे,
बस आशा एक सहारा है ।
मैं अपने प्रिय से दूर अभी, उसका संदेश बुलाता है,
मन माँझी बन कर गाता है, मन माँझी बन कर गाता है ।

1. लगातार, अविरत, घना ; 2. धीमा, मंद ; 3. माफिक, मेल रखने वाला ; 4. हवा, पवन, समीर ; 5. मग्न, तल्लीन, दत्त चित्त ; 6. मेघ, जलद, जो सामने आकर उपस्थित हुआ हो, आगत ।

(05.01.2011)
सिडनी

6. एक ऋतु आए, एक ऋतु जाए......

एक ऋतु आए एक ऋतु जाए,
पल-पल युग बन बीता जाए ।

गरमी की ऋतु धूप सताए,
वन-उपवन सारे झुलसाए,

हर प्राणी पानी को तरसे,
आये रे कब सावन आए ।

बरखा की ऋतु आई सुहानी,
बादल गरजे बरसा पानी,

माटी का हर एक कण भीगे,
प्यासी धरती प्यास बुझाए ।

शीत लहर ले शिशिर डराए,
भय से तरुवर पर्ण[1] गिराए,

थर-थर काँपे हर एक प्राणी,
शीत न जाने कब तक जाए ।

लो आया ऋतुराज[2] भी आया,
सुरभि[3] समीरण[4] भर कर लाया,

फूल हँसे कलियाँ मुस्काएँ,
भू पर जीवन फिर खिल जाए ।

1. पेड़ का पत्ता ; 2. बसंत ; 3. खुशबू ; 4. हवा, पवन, समीर, वात ।

(10.01.2012)
सिडनी

7. नयनों में भर कर स्वप्न नए......

नयनों में भर कर स्वप्न नए,
श्वासों में सुरभित[1] वात[2] लिए ।
जीवन पथ पर बढ़ते जाना,
उर में अप्रतिम[3] उल्लास लिए ।

आँधी से हमको क्या डरना,
हमको क्या डर तूफानों से ।
निर्भय होकर हमको चलना,
इन वन दुर्गम चट्टानों से ।

भर कर शुचिमय[4] विश्वासों को,
शक्ति –औ–साहस साथ लिए ।
जीवन पथ पर बढ़ते जाना,
उर में अप्रतिम उल्लास लिए ।

आओ हम इस पथ पर बिखरे,
कुछ काँटों को भी कम कर दें ।
पथ भर ले शीतल छाया को,
कुछ पौधों को इसमें भर दें ।

हों जितने अपने अनुगामी[5],
आएँ आशा आह्लाद लिए ।
जीवन पथ पर बढ़ते जाना,
उर में अप्रतिम उल्लास लिए ।

दूर क्षितिज से हँस–हँस कर,
सुन मंजिल हमें बुलाती है ।
धीमे–धीमे स्वर लहरी भर,
एक अनुपम[6] गीत सुनाती है ।

सुनना है उसको हमको भी,
तन्मयता[7] अनुराग[8] लिए ।
जीवन पथ पर बढ़ते जाना,
उर में अप्रतिम उल्लास लिए ।

1. खुशबू से भरा हुआ ; 2. हवा, पवन, समीर, समीरण ; 3. अनुपम, बेजोड़ ; 4. शुद्ध, पवित्र, साफ़, स्वच्छ, निष्कपट, निश्छल ; 5. पीछे चलने वाला, आज्ञाकारी ; 6. उपमा रहित, सर्वोत्तम, बेजोड़ ; 7. मग्न होना, तल्लीन होना ; 8. प्रेम, भक्ति ।

(12.01.2012)
सिडनी

8. कुछ ख़्वाब हमारे तुम देखो.......

कुछ ख़्वाब हमारे तुम देखो, कुछ ख़्वाब तुम्हारे हम देखें,
हों जाएँ यूँ ही एक दूजे के, मिल साथ नज़ारे हम देखें ।

मिल जाएँ अगर कहीं भूले से, तो क्यूँ ऐसे कतराते हो,
नज़रों से नज़र मिलती है कभी, तो क्यूँ ऐसे घबराते हो,
जब चाँद हमारे सामने हो, फिर क्यूँ ये सितारे हम देखें,
कुछ ख़्वाब हमारे तुम देखो, कुछ ख़्वाब तुम्हारे हम देखें ।

देखे न कोई देखूँ जो तुम्हें, इस बात से दिल घबराता है,
जाने न कोई चाहूँ मैं तुम्हें, इस डर से पसीना आता है,
हो जाए पता तुम मेरे हो, फिर किसको बता रे हम देखें,
कुछ ख़्वाब हमारे तुम देखो, कुछ ख़्वाब तुम्हारे हम देखें ।

माँझी भी तुम्हीं कश्ती भी तुम्हीं, कहते हैं तुम ही साहिल[1] हो,
रस्ता भी तुम्हीं साया भी तुम्हीं, कहते हैं तुम ही मंजिल हो,
यदि साथ मेरा दो जीवन भर, मिल वक़्त के धारे हम देखें,
कुछ ख़्वाब हमारे तुम देखो, कुछ ख़्वाब तुम्हारे हम देखें ।

1. किनारा, तट ।

(13.01.2012)
सिडनी

9. यदि तुम हँसो या ज़रा मुस्करा दो......

यदि तुम हँसो या ज़रा मुस्करा दो, तो दाँतों के मोती दिखें जगमगाएँ,
अगर खोल दो तुम घने केश अपने, तो लगते हैं जैसे कि काली घटाएँ।

नम और मुलायम तुम्हारी त्वचा है,
अधरों तुम्हारे गुलाबों की लाली ।
भौंहें तुम्हारी धनुष जैसे तिरछी,
रह रह के थिरके कानों की बाली ।

आँखों में तेरी अजब सी कशिश[1] है कि अपना वे जादू सभी पर चलाएँ,
अगर खोल दो तुम घने केश अपने, तो लगते हैं जैसे कि काली घटाएँ।

पतली–औ–नाज़ुक तेरी उँगलियाँ हैं,
लम्बी तुम्हारी सुराही सी गर्दन ।
जरा सा झुके हैं तुम्हारे ये कंधे,
मांसल सजा है भरपूर यौवन ।

तुम्हें छू गुजरती हैं जब भी इधर से, तो खुशबू से भरती ये बहती हवाएँ,
अगर खोल दो तुम घने केश अपने, तो लगते हैं जैसे कि काली घटाएँ।

लम्बा–सुतीला तुम्हारा बदन है,
भरी लोच से लम्बी बाहें तुम्हारी ।
शालीनता से उठते कदम हैं,
सदा मखमली जैसे राहें तुम्हारी ।

जब तुम चलो तो पड़े पग तुम्हारे, मधुर स्वर में कोई सरगम सजाएँ,
अगर खोल दो तुम घने केश अपने, तो लगते हैं जैसे कि काली घटाएँ।

1. खिंचाव, आकर्षण शक्ति ।

(17.01.2012)
सिडनी

10. कुछ यादें घुमड़तीं हैं मन में.......

कुछ यादें घुमड़ती हैं मन में, क्या यादें घुमड़तीं तुममें भी,
एक टीस सी उठती है मन में, क्या टीस सी उठती तुममें भी ।

क्या तुमने भी मेरी तरह धागा ले पतंग उड़ाई है,
कागज की नाव बना करके पानी पर उसे तैराई है ।
आटे की चिड़ियाँ क्या तुमने कभी रचीं मेरी तरह,
क्या तुमने भी मेरी तरह मस्ती में दौड़ लगाई है ।

क्या तुमने भी मेरी तरह गुल्ली और डंडा खेला है,
गेंदतड़ी, कीलम-काटी, गुड्डी और गुड्डा खेला है ।
इप्पी-दुप्पी, छुप्पा-छिप्पी क्या खेलें हैं मेरी तरह,
क्या तुमने भी मेरी तरह कौड़ी और कंचा खेला है ।

कुछ यादें घुमड़ती हैं मन में, क्या यादें घुमड़तीं तुममें भी,
एक टीस सी उठती है मन में, क्या टीस सी उठती तुममें भी ।

क्या तुमने भी मेरी तरह दिवला और चुस्की खाई है,
माँ से पाकर एक आने में ठेले पर कुल्फी खाई है ।
बुढ़िया के बाल भी खाए हैं क्या तुमने भी मेरी तरह,
क्या तुमने भी मेरी तरह चूरन और इमली खाई है ।

क्या तुमने भी मेरी तरह बागों से आम चुराए हैं,
पकड़े जाने पर क्या तुमने माली से चाँटे खाए हैं ।
धरती पे गिरी जामुन खायी क्या तुमने भी मेरी तरह,
क्या तुमने भी मेरी तरह गूलर और निबौरी खाए हैं ।

कुछ यादें घुमड़ती हैं मन में, क्या यादें घुमड़तीं तुममें भी,
एक टीस सी उठती है मन में, क्या टीस सी उठती तुममें भी ।

क्या तुमने भी मेरी तरह बैलों से रहट चलाई है,
अपने कुत्ते भैसों के संग पोखर में डुबकी लगाई है ।

नंगी पीठ पे बैठे हो क्या ऊँट के तुम मेरी तरह,
क्या तुमने भी मेरी तरह कोल्हू पे मिठाई खाई है ।

क्या तुमने भी मेरी तरह फिरकी रूमाल खरीदे हैं,
तीर कमान खरीदे क्या तलवार और ढाल खरीदे हैं ।
कुछ रंग बिरंगे गुब्बारे मेले से लिए मेरी तरह,
क्या तुमने भी मेरी तरह चश्मे कुछ लाल खरीदे हैं ।

कुछ यादें घुमड़ती हैं मन में, क्या यादें घुमड़तीं तुममें भी,
एक टीस सी उठती है मन में, क्या टीस सी उठती तुममें भी ।

क्या तुमने भी मेरी तरह कपड़े में बस्ता बाँधा है,
पैदल-पैदल फर्लांगों तक स्कूल का रस्ता नापा है ।
पेड़ की शाख का झूला पा घर भूल गए मेरी तरह,
क्या तुमको भी मेरी तरह पापा ने अक्सर डाँटा है ।

क्या तुमने भी मेरी तरह तख्ती को रोज़ सजाया है,
कालिख पोती घोटा फेरा खड़िया भर कलम चलाया है ।
अक्षर, गिनती, पउ्आ, अद्धा क्या याद किए मेरी तरह,
क्या तुमने भी मेरी तरह बापू पर गीत सुनाया है ।

कुछ यादें घुमड़ती हैं मन में, क्या यादें घुमड़तीं तुममें भी,
एक टीस सी उठती है मन में, क्या टीस सी उठती तुममें भी ।

क्या तुमने भी मेरी तरह जुगनू को चमकते देखा है,
मोर मुँडेरी पर देखा बन्दर को घुड़कते देखा है ।
तितली के पीछे क्या तुम भी भागे हो मेरी तरह,
क्या तुमने भी मेरी तरह भालू को ठुमकते देखा है ।

क्या तुमने भी मेरी तरह अरुणाभ गगन को देखा है,
अपनी पंखुरि को बंद करते क्या तुमने सुमन को देखा है ।
कलरव[1] करते उड़ते खगदल[2] तुमने देखे मेरी तरह,
क्या तुमने भी मेरी तरह इठलाते पवन को देखा है ।

कुछ यादें घुमड़ती हैं मन में, क्या यादें घुमड़तीं तुममें भी,
एक टीस सी उठती है मन में, क्या टीस सी उठती तुममें भी ।

क्या तुमको भी मेरी तरह नानी ने कहानी सुनाई है,
नाना ने अनुभव बतलाये बाबा ने रीति सिखाई है ।
जीवन के आदर्श हैं क्या गुरु से सीखे मेरी तरह,
क्या तुमने भी मेरी तरह दादी से शिक्षा पाई है ।

क्या तुमने भी मेरी तरह सिंहासन बत्तीसी पढ़ ली है,
किस्सा तोता और मैना बैताल पच्चीसी पढ़ ली है ।
हनुमान चालीसा रट डाला क्या तुमने भी मेरी तरह,
क्या तुमने भी मेरी तरह फरहाद–औ–शीरी पढ़ ली है ।

कुछ यादें घुमड़तीं हैं मन में, क्या यादें घुमड़तीं तुममें भी,
एक टीस सी उठती है मन में, क्या टीस सी उठती तुममें भी ।

क्या तुमने भी मेरी तरह कोई हाथ पकड़ कर घूमा है,
घूमे–घूमे वह हाथ छुटा क्या सर पीड़ा से घूमा है ।
बाहों में भरकर क्या तुमको ले के उठाया मेरी तरह,
क्या तुमको भी मेरी तरह होले से किसी ने चूमा है ।

क्या तुमने भी मेरी तरह बचपन के साथी खोए हैं,
जिनके संग में खेलेकूदे हम हँसते थे कभी रोए हैं ।
कभी यूँ ही उदासी में तुम भी क्या डूबे हो मेरी तरह,
क्या तुमने भी मेरी तरह आँसू भर नयन भिगोए हैं ।

कुछ यादें घुमड़तीं हैं मन में, क्या यादें घुमड़तीं तुममें भी,
एक टीस सी उठती है मन में, क्या टीस सी उठती तुममें भी ।

1. मंद एवं मधुर स्वर वाला ; 2. पंछियों का झुंड ।

(20.01.2012)
सिडनी

11. प्यार का रिश्ता खूब निभाया.......

प्यार का रिश्ता खूब निभाया हमने भी और तुमने भी,
नेह का दीपक साथ जलाया हमने भी और तुमने भी ।

जब तक जीना संग में जीना मैंने सुर में दोहराया,
जब तक जीना संग में जीना तुमने सुर में दोहराया,

गीत वफ़ा का मिल कर गाया हमने भी और तुमने भी,
प्यार कर रिश्ता खूब निभाया हमने भी और तुमने भी ।

चोट लगी और हम रोए जो तुमने आँसू पौंछ दिए,
चोट लगी और तुम रोए जो हमने आँसू पौंछ दिए,

एक दूजे को यूँ बहलाया हमने भी और तुमने भी,
प्यार का रिश्ता खूब निभाया हमने भी और तुमने भी ।

इस आँगन की फुलवारी को आशा भर तुमने सींचा,
इस आँगन की फुलवारी को आशा भर हमने सींचा,

इस घर आँगन को महकाया हमने भी और तुमने भी,
प्यार का रिश्ता खूब निभाया हमने भी और तुमने भी ।

(23.01.2012)
सिडनी

12. जिसकी तुझको आरज़ू, जिसको बेक़रार.......

जिसकी तुझको आरजू, जिसको बेक़रार है,
आने वाला अब यहाँ, जिसका इंतज़ार है ।

हरे-हरे पात ले वृक्ष झूमता हुआ,
बह रहा मदिर पवन सबको चूमता हुआ,

कल न ये बहार थी, आज ये बहार है,
आने वाला अब यहाँ, जिसका इंतज़ार है ।

पुष्प-पुष्प घूमते भँवरे गुनगुना रहे,
पंख अपने फड़फड़ा पंछी चहचहा रहे,

आज मीठा शोर है, स्वर नया खुमार है,
आने वाला अब यहाँ, जिसका इंतज़ार है ।

कल जो मूक-मौन था आज खिलखिला रहा,
प्यार का मधुर कोई गीत सुर में गा रहा,

बाँसुरी कोई बजी, बज रहा सितार है,
आने वाला अब यहाँ, जिसका इंतज़ार है ।

(25.01.2012)
सिडनी

13. हमने भी रोज़ नया आफ़ताब......

हमने भी रोज़ नया आफ़ताब देखा है,
हमने भी चाँद–औ–तारे ज़नाब देखे हैं ।
हमने भी देखा जहाँ और ज़माना देखा,
हमने भी वक़्त के धारे ज़नाब देखे हैं ।

कोई हमको भी मेरा लाल कह बुलाता था,
कोई हमको भी कभी लोरियाँ सुनाता था ।
कोई कहता था तेरा चेहरा है चंदा जैसा,
कोई हमको भी लिए काँधे थपथपाता था ।

कोई कहता था मेरी आँख का तू तारा है,
कोई कहता था मेरा राजा है दुलारा है ।
कोई हमको भी भरी छाती लगा लेता था,
कोई कहता था मुझे जान से तू प्यारा है ।

हमने भी देखा है ये रोना मचलना अपना,
हमने भी माँ के इशारे ज़नाब देखे हैं ।
हमने भी देखा जहाँ और ज़माना देखा,
हमने भी वक़्त के धारे ज़नाब देखे हैं ।

कोई हमको भी लेने बाँहों में ललकता था,
कोई हमको भी पकड़ उँगली लिए चलता था ।
कभी बन्दर बना है घोड़ा बना वह हाथी,
कोई हमको भी लिए संग खेला करता था ।

कोई कहता था मेरा खून है दुलारा है,
कोई कहता था मेरे कल का यह सहारा है ।
कभी लाता था टॉफी, चॉकलेट, रसगुल्ले,
कोई कहता था एक तू ही तो हमारा है ।

हमने भी चढ़ के ऊँचे काँधे अपने बापू के,
हमने भी घर-ओ-चौबारे ज़नाब देखे है ।
हमने भी देखा जहाँ और ज़माना देखा,
हमने भी वक़्त के धारे ज़नाब देखे हैं ।

हमने भी देखा है पंखों को फड़फड़ाते हुए,
हमने भी देखा है भौंरों को गुनगुनाते हुए ।
हमने भी देखे हैं रातों में चमकते जुगनूँ,
हमने भी देखा है फूलों को मुस्कुराते हुए ।

हमने भी देखा है इस तपते भू के आँगन को,
हमने भी देखा है बदली को लाते सावन को ।
हमने भी देखा है बिन पत्तों के तरुवर कैसे,
हमने भी देखा है खुशबू से भरते गुलशन को ।

हमने भी देखे हैं तालाब झील और सागर,
हमने भी नदिया किनारे ज़नाब देखे हैं ।
हमने भी देखा जहाँ और ज़माना देखा,
हमने भी वक़्त के धारे ज़नाब देखे हैं ।

हमने भी देखा है आँखों को बात करते हुए,
हमने भी देखा है साँसों को तेज चलते हुए ।
हमने भी देखीं हैं शानों पे बिखरती ज़ुल्फ़ें,
हमने भी देखा है होठों को भी लरज़ते हुए ।

हमने भी देखा है पल्लू का खिसकना कैसा,
हमने भी देखा है अरमान मचलना कैसा ।
हमने भी देखी है रुख़सार पे बढ़ती लाली,
हमने भी देखा है विरहा में तड़पना कैसा ।

हमने भी देखे हैं सीने में घुमड़ते तूफ़ाँ,
हमने भी उठते शरारे ज़नाब देखते हैं ।
हमने भी देखा जहाँ और ज़माना देखा,
हमने भी वक़्त के धारे ज़नाब देखे हैं ।

कोई कहता था तेरी बात हर निराली है,
कोई कहता था तेरी शान सबसे आली है ।
कोई हमको भी कभी हीरो कहा करता था,
कोई कहता था तेरी जुल्फ़ तो घुँघराली है ।

कोई हमको भी देख आहें भरा करता था,
कोई हमको भी कभी छिपके देखा करता था ।
कोई कहता था तेरी साँस भरे खुशबू है,
कोई हमको भी मेरी जान कहा करता था ।

हमने भी देखा है कुछ साथ देते कदमों को,
हमने भी मन के सहारे ज़नाब देखे हैं ।
हमने भी देखा जहाँ और ज़माना देखा,
हमने भी वक़्त के धारे ज़नाब देखे हैं ।

कोई हमको भी देख फूल सा खिल जाता था,
कोई हमको भी देख होले लड़खड़ाता था ।
कोई कहता था बिना तेरे हम अधूरे हैं,
कोई हमको भी देख सीने लिपट जाता था ।

कोई कहता था मिले तुम तो सँवर जाएँगे,
कोई कहता था बिना तेरे किधर जाएँगे ।
कोई हमको भी अपनी जिन्दगी समझता था,
कोई कहता था मिले तुम न तो मर जाएँगे ।

हमने भी देखे हैं आँखों से छलकते आँसू,
हमने भी शोख नज़ारे ज़नाब देखे हैं ।
हमने भी देखा जहाँ और ज़माना देखा,
हमने भी वक़्त के धारे ज़नाब देखे हैं ।

हमने भी माप को मैट्रिक में बदलते देखा,
हमने भी महल को होटल में पलटते देखा ।
हमने भी देखा है आता हुआ फ्रिज और टी.वी,
हमने भी टी.वी. को एच.डी. में सँवरते देखा ।

हमने भी नभ में सेटेलाईट उतरते देखा,
हमने भी फोन से मोबाईल बदलते देखा ।
हमने भी देखा है फैशन को बदलते अकसर,
हमने भी कपड़ों को हर साल सिकुड़ते देखा ।

हमने भी देखे हैं राजा, रईस, शहजादे,
हमने भी भूख के मारे ज़नाब देखे हैं ।
हमने भी देखा जहाँ और ज़माना देखा,
हमने भी वक़्त के धारे ज़नाब देखे हैं ।

हमने भी देखे हैं ये सड़कें बनाते पेवर,
हमने भी देखे हैं ये जब से आए कंप्यूटर ।
हमने भी देखी है दुनियाँ की सिकुड़ती दूरी,
हमने भी देखे हैं ये चलते हुए इंटरनेट ।

हमने भी देखा है इन बढ़ती हुई कारों को,
हमने भी देखा है उठती हुई दीवारों को ।
हमने भी देखी है हर चीज़ यहाँ बिकती हुई,
हमने भी देखा है बढ़ते हुए बाज़ारों को ।

हमने भी देखा है कैसे यह बदलते रिश्ते,
हमने भी ग़ैर हमारे ज़नाब देखे हैं ।
हमने भी देखा जहाँ और ज़माना देखा,
हमने भी वक़्त के धारे ज़नाब देखे हैं ।

(30.01.2012)
सिडनी

14. इन ऊँचे-ऊँचे हिम पर्वत.......

इन ऊँचे-ऊँचे हिम पर्वत,
नदिया, घाटी, मैदानों से ।
आगे-अगे बढ़ते आते,
इन आँधी और तूफानों से ।

तू निर्भय हो अपने पथ पर,
हर बाधा पार निकलता चल ।
तू आगे-आगे बढ़ता चल,
तू आगे-आगे बढ़ता चल ।

आईं हैं अनगिन बाधाएँ,
पर क्या तुमने झुकना सीखा ।
आगे-आगे बढ़ते जाना,
पर क्या तुमने रुकना सीखा ।

तू निर्भय हो अपने पथ पर,
हर पल देख सँभलता चल ।
तू आगे-आगे बढ़ता चल,
तू आगे-आगे बढ़ता चल ।

तुममें भी कितनी है ताकत,
क्या इसको भी तुमने जाना ।
कितना धीरज और है हिम्मत,
क्या इसको तुमने पहचाना ।

तू निर्भय हो अपने पथ पर,
मस्ती में झूम मचलता चल ।
तू आगे-आगे बढ़ता चल,
तू आगे-आगे बढ़ता चल ।

दूर कहीं से सुन तुझको,
यह मंजिल तुम्हें बुलाती है ।
आगे–आगे बढ़ते आओ,
यह गीत यही दोहराती है ।

तू निर्भय हो अपने पथ पर,
हर स्वर–ताल समझता चल ।
तू आगे–आगे बढ़ता चल,
तू आगे–आगे बढ़ता चल ।

(02.02.2012)
सिडनी

15. जिस सुर को तुमने गाया है.......

जिस सुर को तुमने गाया है,
उसको ही दोहराता हूँ मैं ।
तेरे सुर में गाता हूँ मैं,
तेरे सुर में गाता हूँ मैं ।

तेरे सुर का ही जादू है,
जो मैंने तन्मय हो गाया ।
तेरे ही गीतों को मैंने,
सुर-औ-लय में नित दोहराया ।

जो गाऊँ ना तेरे सुर को,
रह-रह कर अकुलाता हूँ मैं ।
तेरे सुर में गाता हूँ मैं,
तेरे सुर में गाता हूँ मैं ।

तेरा सुर भर देता मुझमें,
नेह सजाता मधुमय गुंजन ।
जग जाते हैं सोये फिर से,
भावों में शुचिमय स्पंदन ।

तेरे सुर को जब गाता हूँ,
रह-रह कर मुस्काता हूँ मैं ।
तेरे सुर में गाता हूँ मैं,
तेरे सुर में गाता हूँ मैं ।

यदि तेरा यह सुर ना होता,
तब जाने क्या सुर-लय होती ।
यूँ तो मेरा जीवन होता,
पर क्या यह जीवन लय होती ।

तेरे सुर को गाते-गाते,
इन सुर में खो जाता हूँ मैं ।
तेरे सुर में गाता हूँ मैं,
तेरे सुर में गाता हूँ मैं ।

(07.02.2012)
सिडनी

16. मन अविरल तुमको ही गाए......

मन अविरल तुमको ही गाए,
मन अविरल तुमको ही गाए ।

गाए पल-पल हर क्षण निस-दिन,
पल-पल बीतें क्षण-क्षण गिन-गिन,

तुम बिन सूना-सूना यह जग,
पल-पल याद सताए ।

पी से मिल चल कहता हर क्षण,
भर लेता घन वाष्प जलद कण,

बढ़ती जाती पीर हृदय की,
हर पल नीर बहाए ।

संग में बीते वे स्वर्णिम दिन,
स्मृति में सब पर मैं तुम बिन,

दूर देश है तेरी नगरिया,
कौन इसे समझाए ।

(08.02.2012)
सिडनी

17. मुझे न याद रहे दीन–दुनियाँदारी......

मुझे न याद रहे दीन–दुनियाँदारी की,
बंदापरवर की न तो अपनी ही खुद्दारी की ।
कभी ऐसा भी हो खुदा न करे,
कभी ऐसा भी हो खुदा न करे ।

अपनी नज़रों से कभी ग़ैर की से गिर जाऊँ,
कभी खुद से तो कभी दूसरों से शरमाऊँ,
कभी ऐसा भी हो खुदा न करे,
कभी ऐसा भी हो खुदा न करे ।

यूँ ही इन राहों पे पड़ जाऊँ मैं ठोकर खाकर,
मैं तड़पता रहूँ कट जाए मेरी चिल्लाकर,
कभी ऐसा भी हो खुदा न करे,
कभी ऐसा भी हो खुदा न करे ।

सिर्फ अपने ही हुए दर्द को अपना समझूँ,
ग़ैर को ग़ैर के हर दर्द को दूजा समझूँ,
कभी ऐसा भी हो खुदा न करे,
कभी ऐसा भी हो खुदा न करे ।

जा के बदली में ही छिप जाए न सूरज मेरा,
मुझको दीखे न कभी अपना सवेरा मेरा,
कभी ऐसा भी हो खुदा न करे,
कभी ऐसा भी हो खुदा न करे ।

(10.02.2012)
सिडनी

18. तेरे नैना आन प्राण बस गए......

तेरे नैना आन प्राण बस गए, बस गए,
सैकड़ों सुहाने स्वप्न रच गए, रच गए ।

स्वर्ण ले सजा गगन,
ले सुरभि बहे पवन ।
वृक्ष गुल्म साथ ले,
झूमने लगा चमन ।
पुष्प-पुष्प डाल-डाल खिल गए, खिल गए,
तेरे नैना आन प्राण बस गए, बस गए ।

भँवरे गुनगुना रहे,
पंछी चहचहा रहे ।
लग रहे पशु-मनुज,
सभी तो मुस्करा रहे ।
मन के ढीले तार सारे कस गए, कस गए,
तेरे नैना आन प्राण बस गए, बस गए ।

एक बस तेरी नज़र,
देख क्या हुआ असर ।
खिलखिलाता घूमता,
मैं इधर से अब उधर ।
दु:ख के काले मेघ सारे छट गए, छट गए,
तेरे नैना आन प्राण बस गए, बस गए ।

(13.02.2012)
सिडनी

19. कहीं तो हो रही सुबह कहीं.......

कहीं तो हो रही सुबह कहीं तो वक्ते-शाम है,
इसी तरह से ज़िन्दगी गुज़र रही तमाम है ।

कहीं तो कोई अर्श तक उछल रहा है आदमी,
कहीं तो कोई फर्श पर घिसट रहा है आदमी ।
कहीं तो आदमी ही बैठा रोटियों के ढेर पर,
कहीं तो कोई भूख से बिलख रहा है आदमी ।

कहीं तो कोई सेठ है कहीं कोई ग़ुलाम है,
इसी तरह से ज़िन्दगी गुज़र रही तमाम है ।

कहीं तो आदमी का खून चूसता है आदमी,
कहीं तो आदमी का हाथ चूमता है आदमी ।
कहीं तो आदमी ही आदमी को मारता यहाँ,
कहीं तो आदमी में जान फूँकता है आदमी ।

कहीं सजी हैं महफ़िलें कहीं पे इंतकाम है,
इसी तरह से ज़िन्दगी गुज़र रही तमाम है ।

कहीं तो खेस तान कर सो रहा है आदमी,
कहीं तो हार मान कर रो रहा है आदमी ।
कहीं तो कोई शान से ज़िन्दगी को जी रहा,
कहीं तो ज़िन्दगी को ही ढो रहा है आदमी ।

कहीं तो स्वेद-श्रम यहाँ कहीं तो बस आराम है,
इसी तरह से ज़िन्दगी गुज़र रही तमाम है ।

कहीं तो आदमी ही ढूँढ़ता कहाँ है आदमी,
कहीं तो आदमी ही सोचता रहा न आदमी ।
कहीं तो आदमी ही मानता है मैं हूँ एक बस,
कहीं तो आदमी ही खुद में ढूँढ़ता है आदमी ।

कहीं तो कोई हँस रहा कहीं तो परेशान है,
इसी तरह से ज़िन्दगी गुज़र रही तमाम है ।

(14.02.2012)
सिडनी

20. तेरे बिन धूप सुनहली ये छटा कुछ भी नहीं......

तेरे बिन धूप सुनहली ये छटा[1] कुछ भी नहीं,
तेरे बिन खुशबू भरी ठंडी हवा कुछ भी नहीं ।

तेरे बिन सूनी लगे झरने की होती झर-झर,
तेरे बिन सूनी लगे नदिया की होती कल-कल,

तेरे बिन आती हुई काली घटा कुछ भी नहीं,
तेरे बिन खुशबू भरी ठंडी हवा कुछ भी नहीं ।

तेरे बिन सूनी लगे विहगों[2] को होता कलरव[3],
तेरे बिन सूनी लगे वृक्षों से होती मर-मर,

तेरे बिन गाती ये कोकिल[4] की सदा कुछ भी नहीं,
तेर बिन खुशबू भरी ठंडी हवा कुछ भी नहीं ।

तेरे बिन सूनी लगे ताल में होती झिलमिल,
तेरे बिन सूनी लगे फूलों की सजती महफ़िल,

तेरे बिन कितनी सुहानी ये फ़िज़ा कुछ भी नहीं,
तेरे बिन खुशबू भरी ठंडी हवा कुछ भी नहीं ।

1. शोभा, छवि, दीप्ति, चमक ; 2. पंछियों, चिड़ियों ; 3. मंद एवं मधुर स्वर वाला ; 4. कोयल ।

(15.02.2012)
सिडनी

21. जब से एक बादे सबा आके रुला.......

जब से एक बादेसबा[1] आके रुला गई मुझको,
मुझको रंगीन बहारों से डर लगता है ।

ले के झीने से दुपट्टे को चमकता माहताब,
वो जो कहता था लगते थे ग़ज़ल के अशआर[2] ।
संग में जीने के वाएदे वो वफ़ा की क़समें,
वो धुआँ ले कि जिगर उठते हजारों जज़बात ।

जब से जानी है मुहब्बत की हक़ीक़त हमने,
मुझको इन शोख इशारों से डर लगता है ।

मैंने देखा है गगन अपना उम्मीदों की तरह,
चाँद सूरज और सितारे भी नसीबों की तरह ।
मैंने तो सबको ही अपना सा समझ कर देखा,
फिर भी वो दोस्त से दीखते या रक़ीबों[3] की तरह ।

जब से देखा है कोई टूटा सितारा हमने,
मुझको इन उजले सितारों से डर लगता है ।

यूँ ही मौजों में हमेशा से बहे जाते थे हम,
आए सैलाब ही कितने न ही घबराते थे हम ।
हम भी हँस-हँस के सदा मौजों के संग में खेले,
जब भी गुस्ताख़[4] हुईं मौजें तो टकराते थे हम ।

जब से साहिल पे ही आ डूबी है कश्ती अपनी,
मुझको दरिया के किनारों से डर लगता है ।

1. सुबह की खुशबूदार हवा ; 2. दो पंक्तियाँ ; 3. विरोधी, प्रतिस्पर्धी, प्रेमिका का दूसरा प्रेमी ; 4. बे-अदब, उद्दंड ।

(16.02.2012)
सिडनी

22. आ सप्त सुरों के सागर से......

आ सप्त सुरों के सागर से,
मेरा अंतर भर देना तुम ।
भर देना मुझमे सुरमयता,
मुझको सुरमय कर देना तुम ।

मेरी इतनी अभिलाषा है,
मैं तुमको ही सुर में गाऊँ ।
मैं अविरल[1] श्रृद्धा भरकर,
हो तन्मय तुमको दोहराऊँ ।

भर देना मुझमे तन्मयता,
मुझको तन्मय कर देना तुम ।
भर देना मुझमे सुरमयता,
मुझको सुरमय कर देना तुम ।

मन में मेरे आह्लाद सजे,
मेरे अंतर का तम भागे ।
मेरा मन निर्मल हो जाए,
मेरे अंतस शुभता जागे ।

भर देना मुझमे शुभमयता,
मुझको शुभमय कर देना तुम ।
भर देना मुझमे सुरमयता,
मुझको सुरमय कर देना तुम ।

मेरा इतना आकुल[2] अंतर,
मैं कैसे यूँ तुमको गाऊँ ।
मन घबराता पल-प्रतिपल,
मैं कैसे निर्भय दोहराऊँ ।

भर देना मुझमे निर्भयता,
मुझको निर्भय कर देना तुम ।
भर देना मुझमे सुरमयता,
मुझको सुरमय कर देना तुम ।

1. लगातार, मिला या सटा हुआ, अविरल, घना ; 2. बेचैन, व्याकुल ।

(17.02.2012)
सिडनी

23. बातें ऐसी कि जिसे कहते हुए......

बातें ऐसी कि जिसे कहते हुए खिलते लब,
सुन के महफ़िल में जिसे वाह रे सारे कह दें ।
तेरी बातों से हर-एक झूमता हो महफ़िल में,
सभी एक बार यही फिर से सुना रे कह दें ।

बातें ऐसी कि जिससे सपने सुहाने दीखें,
बातें ऐसी कि जिससे दोस्त पुराने दीखें ।
बातें ऐसी कि जिससे सीने में मीठी सी चुभन,
बातें ऐसी कि जिससे अपने ज़माने दीखें ।

कुछ सुना ऐसा कि आ जाए रंग महफ़िल में,
तेरी बातों को सभी दिल के सहारे कह दें ।
तेरी बातों से हर-एक झूमता हो महफ़िल में,
सभी एक बार यही फिर से सुना रे कह दें ।

बातें ऐसी कि जिन्हें सुन के रवानी आए,
बातें ऐसी कि जिन्हें सुन के जवानी आए ।
बातें ऐसी कि जिन्हें सुन के दिल के तार बजें,
बातें ऐसी कि जिससे ज़ज्बा[1] रूहानी[2] आए ।

कभी ऐसा भी हो जो कुछ तो बयाँ लफ्ज़ों[3] में,
बाकी लफ्जों के ही अंदाज़ इशारे कह दें ।
तेरी बातों से हर-एक झूमता हो महफ़िल में,
सभी एक बार यही फिर से सुना रे कह दें ।

बातें ऐसी कि जिन्हें सुनते ही अज़मत[4] आए,
बातें ऐसी कि जिन्हें सुनते ही हिम्मत आए ।
बातें ऐसी कि जिन्हें सुनते ही सुकूँ[5] सा पड़े,
बातें ऐसी कि जिन्हें सुनते ही ग़ैरत[6] आए ।

जब तू कह दे कि यहाँ बात मेरी खत्म हुई,
और एक बात नई हमको सुना रे कह दें ।
तेरी बातों से हर-एक झूमता हो महफ़िल में,
सभी एक बार यही फिर से सुना रे कह दें ।

1. भावना, भाव, ज़ोश ; 2. आत्मिक, दिली, आत्मा संबंधी ; 3. बातें, सार्थक शब्द ; 4. गौरव, बड़ाई ; 5. चैन, आराम ; 6. लज्जाशील, शर्म हया वाला ।

(20.02.2012)
सिडनी

24. मेरे अंतर कोई चुपके से.......

मेरे अंतर कोई चुपके से, आह्लाद[1] नया भर जाता है,
आशा अभिलाषा भर जाता, अनुराग[2] नया भर जाता है ।

मेरे अंतर में भर जाता,
नव भोर गगन की अरुणाई ।
मेरे अंतर में भर जाता,
अल्हड़ यौवन की अँगड़ाई ।
मेरे अंतर कोई चुपके से, विश्वास नया भर जाता है,
आशा अभिलाषा भर जाता, अनुराग नया भर जाता है ।

मेरे अंतर में भर जाता,
कुसुमित होती कलिकाओं को ।
मेरे अंतर में भर जाता,
नव पल्लव[3] ले लतिकाओं[4] को ।
मेरे अंतर कोई चुपके से, मधुमास नया भर जाता है,
आशा अभिलाषा भर जाता, अनुराग नया भर जाता है ।

मेरे अंतर में भर जाता,
नेह भरा एक गीत मधुर ।
मेरे अंतर में भर जाता,
पंचम सुर का संगीत मधुर ।
मेरे अंतर कोई चुपके से, शुभ राग नया भर जाता है,
आशा अभिलाषा भर जाता, अनुराग नया भर जाता है ।

1. खुशी, प्रसन्नता, हर्ष ; 2. प्रेम, भक्ति ; 3. नया एवं कोमल पत्ता ; 4. छोटी लताएँ ।

(22.02.2012)
सिडनी

25. जब मेरी तुमको सुधि आए, मुझको भी.......

जब मेरी तुमको सुधि आए, मुझको भी शुचिमय कर देना,
भर देना मुझको शुभता से, मुझको भी शुभमय कर देना ।

मेरा मन भी मरुथल[1] जैसा,
मैं भी मधुबन की आस लिए ।
अपनी इस घन नीरवता में,
वारिद[2] बूँदों की प्यास लिए ।
जब मेरी तुमको सुधि आए, मुझको भी मधुमय कर देना,
जब मेरी तुमको सुधि आए, मुझको भी शुचिमय कर देना ।

मेरे मन की भी चाह यही,
मैं पुष्पों जैसा खिल जाऊँ ।
भर जाए मुझमें सुरभि कोई,
मैं भी इस जग को महकाऊँ ।
जब मेरी तुमको सुधि आए, मुझको भी सुरभित कर देना,
जब मेरी तुमको सुधि आए, मुझको भी शुचिमय कर देना ।

मेरी मन वीणा मौन पड़ी,
कोई गीत न मैंने गाया है ।
दुःख और संताप भरे हूँ मैं,
यह जीवन व्यर्थ गँवाया है ।
जब मेरी तुमको सुधि आए, मुझको भी सुरमय कर देना,
जब मेरी तुमको सुधि आए, मुझको भी शुचिमय कर देना ।

1. रेगिस्तान ; 2. मेघ, बादल, उपस्थित, सामने आया हुआ ।

(24.02.2012)
सिडनी

26. सीने में समीरण श्वासें ले.......

सीने में समीरण[1] श्वासें ले,
धक-धक का नित[2] नाद सजे ।
इन उठती गिरती श्वासों से,
जीवन का अद्‌भुत राग सजे ।

जब तक यह राग सजे साथी,
तब तक जानो तुम जिन्दा हो ।
जब तक यह साँस चले साथी,
तब तक जानो तुम जिन्दा हो ।

हर आता पल पिछले पल से,
हर हालत में शुभकर होगा ।
अनगिन खुशियाँ भर लाएगा,
जीवन जिसमें सुखकर होगा ।

जब तक यह आस पले साथी,
तब तक जानो तुम जिन्दा हो ।
जब तक यह साँस चले साथी,
तब तक जानो तुम जिन्दा हो ।

अन्याय कोई इस धरती पर,
हमको हरगिज़[3] बरदाश्त[4] नहीं ।
यह अपना जीवन निष्फल[5] है,
यदि हम करते प्रतिकार[6] नहीं ।

जब तक यह आग जले साथी,
तब तक जानो तुम जिन्दा हो ।
जब तक यह साँस चले साथी,
तब तक जानो तुम जिन्दा हो ।

हम भी अपनी इस दुनियाँ को,
कुछ खुशियाँ देकर जाएँगे ।
हमको भी दुनियाँ याद करे,
हम ऐसा कुछ कर जाएँगे ।

जब तक यह बात चले साथी,
तब तक जानो तुम जिन्दा हो ।
जब तक यह साँस चले साथी,
तब तक जानो तुम जिन्दा हो ।

1. हवा, पवन, समीर ; 2. नित्य, लगातार ; 3. कभी, कदापि ; 4. सहन, सहनशीलता ; 5. बिना फल का, व्यर्थ, बेकार ; 6. बदला, कार्य आदि को रोकने के लिए किया जाने वाला प्रयत्न ।

(28.02.2012)
सिडनी

27. आएगी ऐसी रात कभी.......

आएगी ऐसी रात कभी,
ढलने का नाम नहीं लेगी ।
तम[1] गहरा होता जाएगा,
दिन का पैग़ाम[2] नहीं देगी ।

जब तक यह रात नहीं ढलती,
साथी तम में मत खो जाना ।
जब तक यह भोर नहीं खिलती,
साथी दुःख से मत रो जाना ।

यह मन अँधियारा होने से,
जग में अँधियारा होता है ।
यह मन उजियारा होने से,
जग में उजियारा होता है ।

जब तक यह आस नहीं पलती,
साथी तम में मत खो जाना ।
जब तक यह भोर नहीं खिलती,
साथी दुःख से मत रो जाना ।

सीने में सपनों की कलियाँ,
ये यूँ हीं ना कुम्हला जाएँ ।
गहरे तम में बिन फूल बने,
ये यूँ हीं ना मुरझा जाएँ ।

जब तक यह बात नहीं बनती,
साथी तम में मत खो जाना ।
जब तक यह भोर नहीं खिलती,
साथी दुःख से मत रो जाना ।

शक्ति जगाओ फिर अपनी,
फिर से अभिलाष उमड़ने दो ।
शौर्य[3] जगाओ फिर अपना,
फिर से विश्वास पनपने दो ।

जब तक यह आँच नहीं जलती,
साथी तम में मत खो जाना ।
जब तक यह भोर नहीं खिलती,
साथी दु:ख से मत रो जाना ।

1. अँधेरा, अंधकार ; 2. संदेश, समाचार ; 3. शूरता, बहादुर होने का भाव ।

(02.03.2012)
सिडनी

28. भोर भर कर मुस्कराओ.......

भोर भर कर मुस्कराओ, गाओ रे मन गीत गाओ,
भारे भर कर मुस्कराओ, गाओ रे मन गीत गाओ ।

भर लो सुंदर लालिमा को,
जाने दो अब कालिमा को ।
वृक्षों को फिर से सजा दो,
भर लो फिर से हिरीतिमा[1] को ।
ले सुरभि नभ में फैलाओ, गाओ रे मन गीत गाओ,
भोर भर कर मुस्कराओ, गाओ रे मन गीत गाओ ।

फिर से कलियाँ मुस्कराएँ,
फिर से भँवरे गुनगुनाएँ ।
हों तरंगित फिर जलाशय,
फिर से झरने गीत गाएँ ।
पंक्षियों से चहचहाओ, गाओ रे मन गीत गाओ,
भोर भर कर मुस्कराओ, गाओ रे मन गीत गाओ ।

भूलो सब बातें पुरानी,
बीते पल की वे कहानी ।
चंद श्वासें पास अपने,
चार दिन की ज़िंदगानी ।
अब तो मत आँसू बहाओ, गाओ रे मन गीत गाओ,
भोर भर कर मुस्कराओ, गाओ रे मन गीत गाओ ।

1. हरियाली, हरापन ।

(03.03.2012)
सिडनी

29. सब प्राणी पानी को तरसे.......

सब प्राणी पानी को तरसे,
प्यासे हैं सारे तुम बिन ।
बरसो बदरा आकर बरसो,
बरसो रे बदरा रिमझिम ।

तपते पर्वत घाटी सारे,
तपते हैं वन और उपवन ।
तपतीं सारी राहें गलियाँ,
तपते हैं घर और आँगन ।

तपन मिटा दो आकर सबकी,
छलका दो अमृत अप्रतिम[1] ।
बरसो बदरा आकर बरसो,
बरसो रे बदरा रिमझिम ।

नाचे कैसे कोई मयूरा,
सुर में हो कैसे बुलबुल ।
कैसे पीहू बोले पपीहा,
गाए कैसे पिकी मधुर ।

आकर सब को हर्षित कर दो,
सबके मन कर दो मधुरिम ।
बरसो बदरा आकर बरसो,
बरसो रे बदरा रिमझिम ।

ताल तल्लईया सारे सूखे,
सूखीं हैं फसलें सारी ।
गुल्म[2] लताएँ सारी सूखीं,
सूखीं घर की फुलवारी ।

आशा भर कर हर कोई देखे,
बूँदें बरसा दो अनगिन ।
बरसो बदरा आकर बरसो,
बरसो रे बदरा रिमझिम ।

1. अनुपम, बेजोड़ ; 2. झाड़ी ।

(09.03.2012)
सिडनी

30. सच की राह जो चले, वही तो.......

सच की राह जो चले, वही तो सच्चा वीर है,
दूजे दुःख से जो गले, वही तो सच्चा वीर है ।

घिर रहा हो घोर तम,
फिर भी वह डरे नहीं ।
कंटकों भरे कदम,
'उफ़' भी वह करे नहीं ।
संकटों से जो भिड़े, वही तो सच्चा वीर है,
सच की राह जो चले, वही तो सच्चा वीर है ।

कोई न संग साथ में,
कभी न यह गिला[1] करे ।
अपनी धुन में ही सदा,
आगे-आगे बढ़ चले ।
खार में भी जो खिले, वही तो सच्चा वीर है,
सच की राह जो चले, वही तो सच्चा वीर है ।

वह जहाँ कहीं भी हो,
फैले एक सुरभि नई ।
नेह प्यार आस की,
गूँजे एक ग़ज़ल नई ।
दीप जैसा जो जले, वही तो सच्चा वीर है,
सच की राह जो चले, वही तो सच्चा वीर है ।

1. शिकायत, उलाहना, निंदा ।

(15.03.2012)
सिडनी

31. सो जा रे अब, सो जा रे अब.......

सो जा रे अब, सो जा रे अब,
सो जा रे अब तो रात हुई ।
कुछ पल को सारी बिसरा दे,
बातें जो तेरे साथ हुईं ।

वह भोर की अम्बर में लाली,
उड़ते विहगों का वह कलरव ।
वह शीतल सुरभित शांत पवन,
तालाब में खिलते वे शतदल[1] ।

अब तो वह प्रातः बीत गई,
अब तो सब बीती बात हुई ।
सो जा रे अब, सो जा रे अब,
सो जा रे अब तो रात हुई ।

वह अपनी धुन गाती बुलबुल,
फूलों मड़राते वे मधुकर ।
वह धरती भरती धूप घनी,
सर पर आ जाता वह दिनकर ।

अब तो वह दोपहर बीत गई,
अब तो वह बीती बात हुई ।
सो जा रे अब, सो जा रे अब,
सो जा रे अब तो रात हुई ।

वह छाई क्षितिज फिर अरुणाई,
क्षीण पड़ा वह कोलाहल ।
वह फिर से छाता चहुँदिश तम,
आकाश में उड़ते वे खगदल ।

अब तो वह संध्या बीत गई,
अब तो सब बीती बात हुई ।
सो जा रे अब, सो जा रे अब,
सो जा रे अब तो रात हुई ।

1. कमल ।

(19.03.2012)
सिडनी

32. जिसने जग के सत्य को जाना.......

जिसने जग के सत्य को जाना,
उसका जीवन खिल जाता है ।
यह जग शाश्वत नित्य नहीं है,
क्यों फिर इसको झुठलाता है ।

नित दिन सब ज्ञानी जन कहते,
यह सब उसकी ही है माया ।
इस जग में बस वह ही केवल,
एक परब्रह्म जो सबमे समाया ।

जिसको इसका बोध नहीं है,
वह जीवन भर घबराता है ।
जिसने जग के सत्य को जाना,
उसका जीवन खिल जाता है ।

है सर्वत्र उसी की महिमा,
उसके ही तो अंग हैं हम भी ।
माना अलग सदा लगते हम,
उसके ही तो अंश हैं हम भी ।

सुख दु:ख तो सागर सी लहरें,
एक आता है एक जाता है ।
जिसने जग के सत्य को जाना,
उसका जीवन खिल जाता है ।

उसकी व्यवस्था संग बंधे सब,
हमको तो कर्तव्य है करना ।
क्या होगा यह हम क्यों सोचें,
कैसा फिर परिणाम से डरना ।

व्यक्त सदा से प्रेम में वह तो,
क्यों फिर प्रेम से सकुचाता है ।
जिसने जग के सत्य को जाना,
उसका जीवन खिल जाता है ।

1. अविनाशी, शाश्वत, निरंतर, हर समय, हमेशा ।

(21.03.2012)
सिडनी

33. कोई न जाने इस जीवन में.......

कोई न जाने इस जीवन में,
पल भर में ही क्या हो जाए ।
किस पल में भर जाएँ खुशियाँ,
कब जीवन दु:ख से भर जाए ।

जीवन पथ का एकल राही,
अपनी धुन चलता जाता है ।
मिल जाएगी उसको मंज़िल,
अपनी लौ जलता जाता है ।

कब कोई पा ले अपनी मंज़िल,
कब कोई पथ में ही लुट जाए ।
कोई न जाने इस जीवन में,
पल भर में ही क्या हो जाए ।

हर्षित होकर हर एक माली,
वृक्ष सदा फलता जाता है ।
नव-नित पौधे रोपण करता,
उसका फल मिलता जाता है ।

कब कोई आँधी बाग़ उजाड़े,
कब कोई बाग़ बहार सजाए ।
कोई न जाने इस जीवन में,
पल भर में ही क्या हो जाए ।

सागर में नौका पर माझी,
मंथर गति बहता जाता है ।
लहरों के वे शांत थपेड़े,
खुश होकर सहता जाता है ।

कब कोई पा ले अपना किनारा,
कब कोई तूफ़ाँ में बह जाए ।
कोई न जाने इस जीवन में,
पल भर में ही क्या हो जाए ।

किसका जोर चला है विधि[1] पर,
किसने इस विधि को जाना है ।
विधि के आगे सब निरुपाय[2],
किसने इसको पहचाना है ।

कब कोई रोते-रोते हँस दे,
कब कोई हँसते से रो जाए ।
कोई न जाने इस जीवन में,
पल भर में ही क्या हो जाए ।

1. विधान, व्यवस्था आदि का ढंग, प्रणाली, अनुकूलता ; 2. जिसका उपाय न हो सके, साधनहीन ।

(27.03.2012)
सिडनी

34. चलो झूम लें साथ हँस-मुस्करा लें......

चलो झूम लें साथ हँस-मुस्करा लें,
मस्ती को भर लें औ खुशियाँ मना लें ।
सीमित पलों का अपना है जीवन,
खुद भी थिरक लें औ सबको नचा लें ।
कोई साथ होना, खुदा का करम है,
यहाँ आज होना, खुदा का करम है ।

उड़ के चलें आज छूँ लें गगन को,
मिल के पछाड़ें चलो इस पवन को ।
फैलेगी नभ में सुरभि भी हमारी,
कह दें धरा के खिले हर सुमन को ।
ये जज्बात होना, खुदा का करम है,
यहाँ आज होना, खुदा का करम है ।

चलो साथ मिल कर कोई गीत गाएँ,
सुरों में सजा दें सभी हम दिशाएँ ।
संग में हमारे हो कोयल-औ-बुलबुल,
चिड़ियाँ भी संग में सभी चहचहाएँ ।
करामात होना, खुदा का करम है,
यहाँ आज होना, खुदा का करम है ।

चलो तितिलियों के पंखों में बस लें,
झीलों के झिलमिल के संग सज लें ।
भर लें स्वयं में नदिया की कलकल,
झरने की झर झर के संग हँस लें ।
ये दिन रात होना, खुदा का करम है,
यहाँ आज होना, खुदा का करम है ।

(27.03.2012)
सिडनी

35. रुद्ध कंठ को फिर से खोलो......

रुद्ध कंठ को फिर से खोलो, फिर से कोई गीत सजे,
मैं भी तुम्हारे संग में गाऊँ, नेह की शुभमय रीति सजे ।

फिर से अपने सुर में भर लो,
आरोहों और अवरोहों को ।
तन्मय होकर फिर से गाओ,
भूलो सारे अवरोधों[1] को ।
फिर से राग सजे प्राणों में, प्राणों का संगीत सजे,
रुद्ध कंठ को फिर से खोलो, फिर से कोई गीत सजे ।

गाओ ऐसा गीत मधुर तुम,
तम मेरा कुछ तो छट जाए ।
मैं भी भर लूँ सुर-औ-लय को,
दुःख मेरा कुछ तो घट जाए ।
मैं फिर से आलोकित होउँ, ज्योति भरा मन दीप सजे,
रुद्ध कंठ को फिर से खोलो, फिर से कोई गीत सजे ।

मेरे मन में लय भरने की,
पूरी हो मेरी फिर आशा ।
तेरी लय में लय मिलने की,
पूरी हो फिर से अभिलाषा ।
फिर से हारे मेरी जड़ता, लयमयता की जीत सजे,
रुद्ध कंठ को फिर से खोलो, फिर से कोई गीत सजे ।

1. रुकावटें ।

(30.03.2012)
सिडनी

36. ओ कोटि-कोटि प्राची के जन.......

ओ कोटि-कोटि[1] प्राची[2] के जन[3],
भारत की संतति[4] ओ महान ।
फिर से खोलो रे रुद्ध[5] कंठ[6],
गाओ फिर से रे सामगान[7] ।

उठो-उठो फिर से जागो,
अपनी तंद्रा[8] आलस्य[9] त्याग ।
गूँजे फिर से इस अंबर[10] में,
जय-जय हे का तुमुलनाद[11] ।

फिर से हर मन में हर्ष[12] भरे,
स्पंदित[13] हों फिर सभी प्राण[14] ।
फिर से खोलो रे रुद्ध कंठ,
गाओ फिर से रे सामगान ।

जगने दो फिर स्मृतियों[15] में,
आदर्श भरा स्वर्णिम[16] अतीत[17] ।
जाने दो अब तो घना तिमिर[18],
युग-युग से ठहरी है निशीथ[19] ।

मन फिर से नव[20] आलोक[21] भरे,
उग आए क्षितिज[22] में अंशुमान[23] ।
फिर से खोलो रे रुद्ध कंठ,
गाओ फिर से रे सामगान ।

भर दो फिर से इस पतझड़ में,
तुम पल्लव[24] पुष्पित[25] नव बसंत ।
फैला दो फिर से सुरभि[26] नई,
हो जाएँ सुरभित दिग्-दिगंत[27] ।

छू लो फिर गौरव[28] तुंग[29] शिखर[30],
रच डालो फिर नव कीर्तिमान[31] ।
फिर से खोलो रे रुद्ध कंठ,
गाओ फिर से रे सामगान ।

1. असंख्य, करोड़ों की संख्या ; 2. पूरब, पूर्व ; 3. जनता, लोग, लोक, जनसाधारण ; 4. औलाद, संतान ; 5. रुका हुआ, बंद ; 6. गला, गले से निकला स्वर ; 7. एक जैसा गाना, सबके साथ मिलकर गाना ; 8. हल्दी नींद, थकान, ऊँघाई ; 9. सुस्ती, शिथिलता ; 10. आसमान, आकाश ; 11. बहुत जोर की आवाज़ ; 12. खुशी, प्रसन्नता ; 13. धड़कता हुआ, कंपन भरा हुआ ; 14. साँस,श्वास, जान ; 15. यादें ; 16. सुनहरा ; 17. बीता हुआ, पार गया हुआ ; 18. अँधेरा, अंधकार ; 19. रात, रजनी, अर्धरात्रि, विभावरी ; 20. नया ; 21. रोशनी, प्रकाश, दृष्टि, दर्शन ; 22. जहाँ धरती और आकाश मिलते दिखाई देते हैं ; 23. सूरज, सूर्य ; 24. नया एवं कोमल पत्ता ; 25. फूलों से भरा हुआ, उन्नत एवं समृद्ध ; 26. खुशबू ; 27. अनेक दिशाएँ और उनके अंत, हर ओर ; 28. सम्मान, बड़प्पन, महत्व ; 29. पर्वत, बहुत ऊँचा, उग्र, प्रधान ; 30. चोटी ; 31. यश देना वाला रिकार्ड, विख्यात ।

(31.03.2012)
सिडनी

37. मनुज होकर क्या तुम्हें, मनुजता का.......

मनुज होकर क्या तुम्हें मनुजता का ज्ञान है ?
कौन-औ-क्या साथ में अस्मिता[1] भान है ?

शूरता से तुम भरे,
वीरता से तुम भरे ।
तुम भरे हो सत्य से,
धीरता से तुम भरे ।
नीति-औ-न्याय साथ में क्या तुम्हें अनुमान है ?
मनुज होकर क्या तुम्हें मनुजता का ज्ञान है ?

नेह की भी क्या कमी,
प्रेम की भी क्या कमी ।
क्या कमी है दया की,
शील की भी क्या कमी ।
तप-औ-त्याग साथ में क्या तुम्हें पहचान है ?
मनुज होकर क्या तुम्हें मनुजता का ज्ञान है ?

तुम सजाए शक्ति भी,
तुम सजाए स्वप्न भी ।
अनुरक्ति से तुम सजे,
तुम सजाए सृजन भी ।
हर्ष-और-मोद साथ में क्या तुम्हें अभिज्ञान है ?
मनुज होकर क्या तुम्हें मनुजता का ज्ञान है ?

1. अहंभाव, अपनी सत्ता का भाव, आपा, अहंकार, अभिमान ।

(03.04.2012)
सिडनी

38. मेरा तनहा है सफ़र कोई मेरे......

मेरा तनहा है सफ़र कोई मेरे साथ नहीं,
मेरी मंज़िल है अगर दूर कोई बात नहीं ।

मेरे रस्ते में कभी फूल आ महकते हैं,
मेरे रस्ते में कभी पंछी आ चहकते हैं ।
कभी आती है तेज़ आँधी नुकीले पत्थर,
मेरे रस्ते में कभी शूल आ के चुभते हैं ।

मैंने देखी हैं सभी ऋतुएँ एक ख़ास नहीं,
मेरी मंज़िल है अगर दूर कोई बात नहीं ।

कैसे चलना है मुझे नित हवा बताती है,
कैसे चलना है मुझे नित घटा बताती है ।
आ के धीरे से हर एक रोज़ मेरे कानों में,
कैसे चलना है मुझे एक सदा बताती है ।

चलूँ थक जाता हूँ पर मैं कभी हताश नहीं,
मेरी मंज़िल है अगर दूर कोई बात नहीं ।

मैं अपने दिल में जला दीप लिए चलता हूँ,
मैं अपने दिल में मधुर गीत लिए चलता हूँ ।
वैसे तो मुझको हर एक देखे अकेला चलता,
मैं अपने दिल में जग की प्रीति लिए चलता हूँ ।

मैं जरा चुप हूँ मगर जान लो उदास नहीं,
मेरी मंज़िल है अगर दूर कोई बात नहीं ।

(04.04.2012)
सिडनी

39. हौले-हौले चुपके-चुपके धीरे-धीरे.......

हौले-हौले चुपके-चुपके धीरे-धीरे आ जाना,
हौले-हौले चुपके-चुपके नयनों में फिर छा जाना ।

सूरज फिर से जाकर डूबा, धीरे-धीरे शाम हुई,
फिर से नभ में तारे चमके, धीरे-धीरे रात हुई,

सूरज जब तक आकर निकले, नयनों को तुम भा जाना,
हौले-हौले चुपके-चुपके धीरे-धीरे आ जाना ।

सोये फिर से भँवरे सारे, फिर से सब कलियाँ सोईं,
सोई फिर से बग़िया सारी, फिर से सब गलियाँ सोईं,

जब आओ अपने संग-संग में, सुंदर सपना ले आना,
हौले-हौले चुपके-चुपके धीरे-धीरे आ जाना ।

सपने में चंदा मामा भी, खेल खिलोने भी सारे,
साथ में मम्मी और पापा भी, खेलेंगे मिल कर सारे,

धीरे-धीरे मधुरिम स्वर में, गीत कोई फिर गा जाना,
हौले-हौले चुपके-चुपके धीरे-धीरे आ जाना ।

(05.04.2012)
सिडनी

40. अविष शांति, अब्धि शांति.......

अवषि[1] शांति, अब्धि[2] शांति,
शांति पुरण[3], पारावार[4] ।
उर्व[5] शांति, उदधि[6] शांति,
शांति पेरु[7], परापार[8] ।

भरु[9] शांति, भुवसि[10] शांति,
शांति नभस[11], नदीनाथ[12] ।
दभ्र[13] शांति, दारद[14] शांति,
शांति धीर[15], धुनीनाथ[16] ।

कधि[17] शांति, कंधि[18] शांति,
शांति नित्य[19], नीरराशि[20] ।
तिमिशांति[21], तीवर[22] शांति,
शांति वारिधि[23], वारिराशि[24] ।

तर्ष[25] शांति, तविष[26] शांति,
शांति तोयधि[27], तोयराज[28] ।
वाङ्क[29] शांति, वार्धि[30] शांति,
शांति सारथि[31], सिन्धुराज[32] ।

1. 1-32 तक सभी समुद्र के पर्यायवाची हैं ।

(10.04.2012)
सिडनी

41. ओ उर्व उदधि ओ स्तम्भिन्......

ओ उर्व[1] उदधि[2] ओ स्तम्भिन्[3],
ओ तर्व[4] तविष[5] ओ प्रेर्त्वन्[6] ।
ओ नील[7] जलधि[8] तेरा गर्जन,
आह्लाद भरा या रोर-रुदन[9] ।

नीरव[10] नभ को तुम बहलाने,
क्या गाते रहते हँस-हँसकर ।
जिसको तन्मय सुनते रहते,
सूर्य चन्द्रमा परिपथ[11] पर ।

जिसको पुलकित[12] होकर सुनते,
झिलमिल करते सब तारागण[13] ।
ओ नील जलधि तेरा गर्जन,
आह्लाद भरा या रोर-रुदन ।

दर्प[14], जलन से तुम भरकर,
चिंघाड़ रहे हो क्या प्रतिपल ।
तुम व्यथा भरे रोते रहते,
नभ व्यापकता से चिढ़कर ।

क्रन्दन करते हो तुम अविरल[15],
नित करते रहते रज[16] घर्षण ।
ओ नील जलधि तेरा गर्जन,
आह्लाद भरा या रोर-रुदन ।

शत-शत फेनिल लहरों के फन,
दिखलाते नभ को बन विषधर ।
या आतुर लेने को चुम्बन,
लहरों से अपनी उठ-उठकर ।

करते आकर्षित तुम नभ को,
क्रोध दिखाकर या नर्तन ।
ओ नील जलधि तेरा गर्जन,
आह्लाद भरा या रोर–रुदन ।

1. समुद्र ; 2. समुद्र ; 3. समुद्र ; 4. समुद्र ; 5. समुद्र ; 7. नीला ; 8. समुद्र ; 9. चिल्ला कर रोना ; 10. शब्द रहित, शब्द न करने वाला ; 11. वृताकार वस्तु के किनारे-किनारे बना हुआ पथ ; 12. प्रेम, हर्ष आदि से गद्गद, रोमांचित ; 13. तारों का समूह ; 14. घमंड, अभिमान, मान, उद्दंड ; 15. लगातार, नित्य ; 16. धूल, गर्द, पराग, ज्योति ।

(12.04.2012)
सिडनी

42. सनन्-सनन् निनाद कर रहा पवन.......

सनन्-सनन् निनाद[1] कर रहा पवन[2],
अजस्त्र[1] मर्मरित[4] हुए हैं वन[5] सघन[6],

न पर्ण[7] सा बना रहे सिहर-सचल[8],
ओ मनुज[9] बना रहे सदा सबल[10] ।

घनक-घनक[11] घनेरते[12] घनेरे[13] घन[14],
नृत्य[15] कर रहे निरत[16] तड़ित[17] चरण[18],

मन रहे न यह कभी तेरा विकल[19],
ओ मनुज बना रहे सदा सबल ।

झरर-झरर वरिष[20] अदिति[21] निगल रहा,
अमित[22] अनिष्ट[23] अग्नि[24] ज्वाल[25] पल रहा,

सामने अड़े हुए अडिग[26] अचल[27],
ओ मनुज बना रहे सदा सबल ।

थरर-थरर है काँपती वसुंधरा[28],
तीव्र[29] ज्वार[30] ले उदधि[31] उमड़ पड़ा,

हो रहे विरोध[32] में यह जग[33] सकल[34],
ओ मनुज बना रहे सदा सबल ।

1. जोर की आवाज़ ; 2. हवा, वायु ; 3. सतत, लगातार, अविछिन्न ; 4. खड़खड़ाहट ; 5. जंगल ; 6. घने ; 7. पत्ता ; 8. काँपना-चंचल, चलना ; 9. मनुष्य, आदमी ; 10. ताकतवर, बलवान ; 11. गरजना ; 12. घिर रहे ; 13. घने, अतिशय, गहरे ; 14. बादल, मेघ ; 15. नाच ; 16. लगातार, अविकल; 17. बिजली ; 18. पैर ; 19. परेशान, व्याकुल, भय आदि से युक्त ; 20. बरसात, वर्षा ; 21. जमीन, पृथ्वी, धरा, प्रकृति, दक्ष की पुत्री ; 22. बेहद, अत्यधिक, जो मापा न जा सके ; 23. अशुभ, अमंगल, अहित, अनर्थ ; 24. आग ; 25. आग की लपट ; 26. अटल, स्थिर ; 27. पर्वत, गतिहीन ; 28.

धरती, पृथ्वी ; 29. तेज ; 30. समुद्र के जल का ऊपर उठना ; 31. सागर, समुद्र ; 32. बाधा, प्रतिरोध, विपरीतता, विपक्षता ; 33. संसार, जगत, दुनियाँ ; 34. सारा, सारी ।

(13.04.2012)
सिडनी

43. व्यर्थ आँसू मत बहाओ, आओ रे.......

व्यर्थ आँसू मत बहाओ, आओ रे अब मुस्कराओ,
भूलो दु:ख अवसाद[1] सारे, आओ रे मिल गीत गाओ ।

जब से यह जीवन मिला है,
सुख में फूलों सा खिला है ।
रात्रि की हर कालिमा में,
दीप बनकर भी जला है ।
खुद को अब दीपक बनाओ, आओ रे अब मुस्कराओ,
भूलो दु:ख अवसाद सारे, आओ रे मिल गीत गाओ ।

हर किसी की रात जाए,
भोर फिर से लौट आए ।
चल पड़ा है जो मुसाफ़िर,
वह कभी मंजिल भी पाए ।
वक्त ऐसे मत गँवाओ, आओ रे सब मुस्कराओ,
भूलो दु:ख अवसाद सारे, आओ रे मिल गीत गाओ ।

हर घड़ी बतला रही है,
उम्र निकली जा रही है ।
सृजन का ही गीत तन्मय,
सारी संसृति[2] गा रही है ।
लय से इसकी लय मिलाओ, आओ रे अब मुस्कराओ,
भूलो दु:ख अवसाद सारे, आओ रे मिल गीत गाओ ।

1. उदासी, खेद, हार, सुस्ती, थकावट ; 2. संसार, दुनियाँ ।

(15.04.2012)
सिडनी

44. छू गया है कोई मन का तार फिर से......

छू गया है कोई मन का तार फिर से,
हो रही है एक नई झंकार फिर से ।

हर सुबह मुझको रुहानी लग रही है,
हर फ़िज़ा मुझको सुहानी लग रही है ।
अब तो भाता है चमन वीरान सा भी,
हर घटा मुझको दीवानी लग रही है ।

भर गया है कौन मुझमें प्यार फिर से,
हो रही है एक नई झंकार फिर से ।

अब मैं फूलों सा महकना जानता हूँ,
अब मैं पंछी सा चहकना जानता हूँ ।
जानता हूँ मैं भी अब उड़ना गगन में,
अब मैं नदिया सा मचलना जानता हूँ ।

दे गया है कौन यह उपहार फिर से,
हो रही है एक नई झंकार फिर से ।

फिर कहीं शहनाई देखो बज रही है,
फिर कहीं बारात देखो सज रही है ।
एक नई दुल्हन पहन कर लाल साड़ी,
हाथ में मेंहदी लगाए हँस रही है ।

स्वर्ग सा लगने लगा संसार फिर से,
हो रही है एक नई झंकार फिर से ।

(17.04.2012)
सिडनी

45. किसने मन के द्वार आकर......

किसने मन के द्वार आकर थपथपाया,
मन के मेरे साज़ सारे सज गए ।
किसने मन में मेरे आ दीपक जलाया,
मन के मरे राग सारे जग गए ।

मैं अकेला अपने तम में जी रहा था,
मैं अकेला मौन अपना पी रहा था ।
द्वार मेरे कोई आया उससे पहले,
मौन में ही दर्द अपना सी रहा था ।

किसने मन में मेरे आकर मुस्कराया,
मन में मेरे शब्द आकर हँस गए ।
किसने मन में मेरे आ दीपक जलाया,
मन के मेरे राग सारे जग गए ।

बोलता था मैं मगर हँसकर नहीं था,
था मेरा जीवन मगर रुचिकर नहीं था ।
था मेरा भी मन चमन पर शुष्क सारा,
पुष्प ना था और ये मधुकर नहीं था ।

किसने मन में मेरे आकर फुसफुसाया,
मन में मेरे स्वप्न नूतन रच गए ।
किसने मन में मेरे आ दीपक जलाया,
मन के मेरे राग सारे जग गए ।

कह रहा था अब दुखों का साथ भूलो,
भूल जाओ अश्रु की बरसात भूलो ।
राग, स्वप्न–औ–शब्दों को तुम भी सजाए,
गीत गाओ दुख की अब हर बात भूलो ।

किसने मन में मेरे आकर गुनगुनाया,
मन में मेरे गीत आकर बस गए ।
किसने मन में मेरे आ दीपक जलाया,
मन के मेरे राग सारे जग गए ।

(18.04.2012)
सिडनी

46. है अभी भी यह अँधेरा, कुछ नए......

है अभी भी यह अँधेरा, कुछ नए दीपक जलाओ ।

कोई कहता ही बिरल है,
गिर के उठ जाना सरल है ।
जानता है स्वाद वह ही,
जो स्वयं पीता गरल है ।
जो गिरे हैं उठ पड़ेंगे, हाथ को आगे बढ़ाओ,
है अभी भी यह अँधेरा, कुछ नए दीपक जलाओ ।

किस प्रतीक्षा में पड़े हो,
किसकी आशा में खड़े हो ।
क्या यूँ ही तम दूर होगा,
किससे सहमे-औ-डरे हो ।
ताकते प्राची[1] को क्या तुम, खुद ही अपनी भोर लाओ,
है अभी भी यह अँधेरा, कुछ नए दीपक जलाओ ।

अब सभी अवसाद भूलो,
द्वेष का इतिहास भूलो ।
संगठन की शक्ति जानो,
ले के सब के साथ झूलो ।
कह रही हमसे मनुजता, साथ में सब गुनगुनाओ,
है अभी भी यह अँधेरा, कुछ नए दीपक जलाओ ।

1. पूर्व, पूरब ।

(19.04.2012)
सिडनी

47. तुमने मेरी मन की वीणा कर.......

तुमने मेरी मन की वीणा कर[1] लगाया,
मेरे मन के तार झंकृत हो गए फिर ।

मेरे सारे राग चुप से हो गए थे,
मेरे सारे गीत गूँगे हो गए थे,

तुमने मेरी ओर देखा मुस्कराया,
मेरे मन के तार झंकृत हो गए फिर ।

सूनी-सूनी थीं मेरी सब रातें काली,
सुधियों में ही मैं मनाता था दिवाली,

तुमने मेरी ओर देखा गुनगुनाया,
मेरे मन के तार झंकृत हो गए फिर ।

लग रहा था मैं हूँ अब जग में अकेला,
लग रहा था दूर अब दुनियाँ का मेला,

तुमने मेरे सर पे आ आँचल गिराया,
मेरे मन के तार झंकृत हो गए फिर ।

फिर से आ छाने लगी मुझ पर जवानी,
फिर शुरू होने लगी नई एक कहानी,

तुमने मुझको हँस के अपने उर[2] लगाया,
मेरे मन के तार झंकृत हो गए फिर ।

1. हाथ ; 2. हृदय, छाती ।

(19.04.2012)
सिडनी

48. देश के जवान, देश के जवान.......

देश के जवान, देश के जवान,
देश की हैं शान, देश की हैं शान ।

हैं सजग डटे हुए वे कहीं पहाड़ पर,
हैं सजग डटे हुए वे कहीं पठार पर ।
रेत पर हैं बर्फ पर हैं सजग डटे हुए,
दुर्ग पर डटे हुए तो हैं कहीं मकान ।
देश के जवान, देश के जवान,
देश की हैं शान, देश की हैं शान ।

वे सचेत सावधान घोर अंधकार में,
वे सचेत सावधान तीव्रतर प्रकाश में ।
शीत हो या ताप हो वे सचेत सावधान,
या घटा बरस रही छाई आसमान ।
देश के जवान, देश के जवान,
देश की हैं शान, देश की हैं शान ।

एक गीत ही यही गुनगुनाते हैं सदा,
एक गीत ही यही वो तो गाते हैं सदा ।
देश के जवान हम, एक गीत ही यही,
देश के लिए सदा देंगे अपनी जान ।
देश के जवान, देश के जवान,
देश की हैं शान, देश की हैं शान ।

सीना तान जब चलें उठ रहा तूफ़ाँ लगे,
सीना तान जब चलें धूल आसमाँ लगे ।
झूमने लगे फ़िज़ा, सीना तान जब चलें,
बैरी भय से काँपता रश्क[1] में जहान ।

देश के जवान, देश के जवान,
देश की हैं शान, देश की हैं शान ।

1. जलन, ईर्ष्या, डाह ।

(20.04.2012)
सिडनी

49. शाम फिर से उदास क्या कीजे.......

शाम फिर से उदास क्या कीजे,
दिल है फिर से हताश क्या कीजे ।

हर कली फिर से सोती जाती है,
ख़ुशबू भी कम सी होती जाती है,
अब न कोई है आस क्या कीजे,
शाम फिर से उदास क्या कीजे ।

कोई ऐसा जो दिल की सुनता हो,
संग में मेरे ख़्वाब बुनता हो,
न कोई आस पास क्या कीजे,
शाम फिर से उदास क्या कीजे ।

अब न वह शोर वह सबेरा है,
अब तो पंछी का एक बसेरा है,
आ गई फिर से रात क्या कीजे,
शाम फिर से उदास क्या कीजे ।

(20.04.2012)
सिडनी

50. मेरे महबूब मुझे ऐसी जगह.......

मेरे महबूब मुझे ऐसी जगह लेकर चल ।

जहाँ से देख सकूँ नीला गगन कैसा है,
जहाँ से देख सकूँ भू का चमन कैसा है ।
कैसे पूरब से उगा करता है आकर सूरज,
जहाँ से देख सकूँ नभ में उमड़ते बादल ।
मेरे महबूब मुझे ऐसी जगह लेकर चल ।

जहाँ चंदा की किरन हँस के उतर आती है,
जहाँ शबनम फूल पत्तों पे ठहर जाती है ।
हैं चमकते जहाँ जुगनूँ भी आ के रातों में,
जहाँ से चाँद बदलता हुआ दिखता अविरल ।
मेरे महबूब मुझे ऐसी जगह लेकर चल ।

जहाँ चिड़ियों के चहकने की सदा आती है,
जहाँ खुशबू से भरी ठंडी हवा आती है ।
हैं सदा गाते जहाँ झूम के गुनगुन भँवरे,
जहाँ बैठी हुई टहनी पे कुहुकुती कोयल ।
मेरे महबूब मुझे ऐसी जगह लेकर चल ।

जहाँ हर ऋतु में सदा फूल खिला करते हैं,
जहाँ हर ऋतु में सदा वृक्ष फला करते हैं ।
है हरी घास बिछी भू पे ग़लीचे की तरह,
जहाँ उठती हैं किसी नदिया में लहरें चंचल ।
मेरे महबूब मुझे ऐसी जगह लेकर चल ।

(23.04.2012)
सिडनी

51. आओ, करो तो कोई जतन.......

आओ, करो तो कोई जतन,
प्रतीक्षा भरे हैं हमारे नयन ।

जब से गए हो बुरा हाल है,
खाना-औ-पीना मुहाल है,

नहीं होश हमको कहाँ है बदन,
आओ, करो तो कोई जतन ।

मधु से भरी वे बातें तुम्हारी,
रह-रह मुझको आ के सतातीं,

आ फिर सुना दो मीठे वचन,
आओ, करो तो कोई जतन ।

आओ तो फिर से देखें ज़रा,
बाहों में फिर से भर लें ज़रा,

आकर खिला दो हृदय का सुमन,
आओ, करो तो कोई जतन ।

(24.04.2012)
सिडनी

52. ये समय यूँ ही निकलता जा रहा है.......

ये समय यूँ ही निकलता जा रहा है,
सो गया वह बाद में पछता रहा है ।
जागते हैं, जागने के स्वर में बोलो,
आज जीवन का नया अध्याय खोलो ।

तुम मिटा दो छाए मन पर हर कलुष को,
दूर कर दो तम, घृणा, विद्वेष विष को ।
सत्यता की ही कसौटी बात तोलो,
आज जीवन का नया अध्याय खोलो ।

स्वप्न सजने को अभी बाक़ी पड़े हैं,
राग बजने को अभी बाक़ी पड़े हैं ।
शुभ नई सम्भावना के द्वार खोलो,
आज जीवन का नया अध्याय खोलो ।

कोई छिप के पार तुमको देखता है,
यह सकल संसार तुमको देखता है ।
एकता का सुर सजाए साथ डोलो,
आज जीवन का नया अध्याय खोलो ।

(25.04.2012)
सिडनी

53. जब कभी मिलो मुझसे आकर.......

जब कभी मिलो मुझसे आकर, एक गीत वही तुम गा देना,
अपने सुर में तन्मय होकर, एक गीत वही दोहरा देना ।

वह गीत जिसे तुम गाते में,
थोड़ा पहले सकुचाए थे ।
नीची करके अपनी पलकें,
अधरों कम्पन भर लाए थे ।
मेरे मन में जो छाप अमिट, फिर झलक वही दिखला देना,
जब कभी मिलो मुझसे आकर, एक गीत वही तुम गा देना ।

संग जीने की जिसमें कसमें,
संग में मरने के वायदे थे ।
हम भी संग में कुछ कर जाएँ,
कुछ ऐसे नेक इरादे थे ।
क्या याद तुम्हें ये है अब भी, इतना मुझको बतला देना,
जब कभी मिलो मुझसे आकर, एक गीत वही तुम गा देना ।

आए कितने पतझड़ सावन,
पर मीत कभी ना भूल सका ।
काफी कुछ भूला है मैंने,
पर गीत कभी ना भूल सका ।
भर देना मुझमे फिर जीवन, कुछ अमृत फिर ढलका देना,
जब कभी मिलो मुझसे आकर, एक गीत वही तुम गा देना ।

(26.04.2012)
सिडनी

54. दूर हो अज्ञान का गहरा अँधेरा......

दूर हो अज्ञान का गहरा अँधेरा,
घन तिमिर हो दूर आए अब सवेरा ।
कल्पना यदि कर रहे सबके लिए तुम,
मैं भी इस शुभ कल्पना में साथ हूँ ।

दुःख, गरीबी, भूख अब तो दूर जाए,
आए अब तो अब यहाँ भी स्वर्ग आए ।
कामना यदि कर रहे सबके लिए तुम,
मैं भी इस शुभ कामना में साथ हूँ ।

राह में कितनी ही बाधा क्यों न आएँ,
सत्य पथ पर आगे-आगे बढ़ते जाएँ ।
प्रार्थना यदि कर रहे सबके लिए तुम,
मैं भी इस शुभ प्रार्थना में साथ हूँ ।

हे प्रभू तुम आस और विश्वास भर दो,
शक्ति भर दो हर्ष और उल्लास भर दो ।
वन्दना यदि कर रहे सबके लिए तुम,
मैं भी इस शुभ वन्दना में साथ हूँ ।

(27.04.2012)
सिडनी

55. आओ रे अब आओ मेरे.......

आओ रे अब आओ मेरे प्राण आओ,
आओ रे अब आओ मेरे प्राण आओ ।

तेरी आहट को तरसते श्रवण मेरे,
तेरी दर्शन को तरसते नयन मेरे,
श्वास मेरे आ सुरभि अपनी बसाओ,
आओ रे अब आओ मेरे प्राण आओ ।

ओठ मेरे शुष्कता भरते ही जाते,
अंग मेरे कम्पता को अब सजाते,
मनतिमिर में दीप आ मेरे जलाओ,
आओ रे अब आओ मेरे प्राण आओ ।

है अभी आरम्भ ही अपनी कहानी,
कुछ पलों की है कहें होती जवानी,
इन पलों को मत प्रतीक्षारत बनाओ,
आओ रे अब आओ मेरे प्राण आओ ।

(30.04.2012)
सिडनी

56. ढम-ढमा-ढम ढोल बजे.......

ढम-ढमा-ढम ढोल बजे,
थपप-थपप तास स्वर ।
नाच सुर-ओ-ताल पर,
थिरक-थिरक नृत्य कर ।

बज रहे हैं अब मृदंग,
उर में भर के राग-रंग ।
श्वास में सुरभि भरे,
स्मिति भर अधर कंप ।

तिरछी-तिरछी भ्रू करे,
चपल-चपल दृष्टि कर ।
नाच सुर-ओ-ताल पर,
थिरक-थिरक नृत्य कर ।

अंग-अंग द्युति भरे,
जोड़-जोड़ गति भरे ।
लास्य से भरा बदन,
मोद मुदित रति भरे ।

मटक-मटक कटि करे,
झटक-झटक केश कर ।
नाच सुर-ओ-ताल पर,
थिरक-थिरक नृत्य कर ।

छोड़ सारी लोक-लाज,
नाच ऐसे नाज आज ।
वाह-वाह कर सभी,
झूमने लगे समाज ।

झुनुन-झुनुन पग सजे,
खनन-खनन करें कर ।
नाच सुर-ओ-ताल पर,
थिरक-थिरक नृत्य कर ।

(02.05.2012)
सिडनी

57. अक्षर, अज, अविनाशी, नित्य.......

अक्षर[1], अज[2], अविनाशी[3], नित्य[4], अनश्वर[5] है,
ध्रुव[6], स्थिर[7], अस्पन्द[8], सत्य[9], अनुत्तर[10] है ।
ईश[11], अहार्य[12], अव्यय[13], अनिमिष[14], अनिवर्चिन[15],
अच्युत[16], अक्षत[17], अमृत[18], शुचि[19], सर्वेश्वर[20] है ।

अमित[21], अजित[22], अशोक[23], विविक्त[24], त्रिविक्रम[25] है,
अणु[26], निर्गुण[27], शम[28], शांत[29], श्रेष्ठ[30], प्रतर्दन[31] है ।
एक[32], नैक[33], गुह्य[34], सुखद[35], सुहृत[36], सम[37],
अप्रमेय[38], अप्रमत्त[39], अदृश्य[40], प्रभंजन[41] है ।

अचल[42], अमोघ[43], अतुल[44], अचिन्तय[45], अकंपित[46] है,
अनघ[47], नेय[48], नय[49], देवक[50], प्राण[51], अर्थवित[52] है ।
परम[53], पवित्र[54], पुरुष[55], साक्षी[56], प्रभु[57], शाश्वत[58],
अनन्त[59], अनादि[60], विरत[61], विराग[62], सदाशिव[63] है ।

सर्व[64], रुद्र[65], गुरु[66], शंभु[67], प्रभव[68], पुरातन[69] है,
ऋद्ध[70], सिद्ध[71], ऋषि[72], व्यापी[73], प्रणव[74], प्रकाशन[75] है ।
नाद[76], ध्वनि[77], स्वर[78], व्यंजन[79], सार[80], सकल[81],
सूक्ष्म[82], सुलभ[83], सर्वज्ञ[84], वेद[85], सनातन[86] है ।

1. अविनाशी, अपरिवर्तनशील, नित्य, ब्रह्म, आत्मा, आकाश ; 2. अजन्मा, जीवात्मा, ईश्वर ; 3. नित्य, जिसका नाश न हो ; 4. अविनाशी, निरंतर, शाश्वत ; 5. सनातन, ध्रुव, अविनाशी ; 6. अटल, अचल, नित्य, शाश्वत ; 7. निश्चल, अचर, स्थायी, शांत, धीर ; 8. बिना कम्पन के, बिना गति के ; 9. सच, यथार्थ, यथातथ्य ; 10. उत्तर का अभाव, सर्वोत्तम, निरुत्तर, स्थिर ; 11. स्थायी, ईश्वर, राजा ; 12. जो हरण अथवा चुराया न सके ; 13. व्यय न होना, परब्रह्म, विष्णु, शिव, अक्षय, नित्य, अविकारी ; 14. जिसकी पलक न झपकती हो, ईश्वर ; 15. अकथनीय, जिसको बताया न सके ; 16. अटल, स्थिर, परमात्मा, विष्णु ; 17. समूचा, बिना टूटा हुआ, शिव, कल्याण, पूरा चावल ; 18. न मरने वाला, अमर, सुन्दर, अमरता ; 19. पवित्र, शुद्ध, साफ़, निर्दोष, निष्कपट, निश्छल ; 20.

सबका स्वामी या मालिक ईश्वर ; 21. बेहद, अत्यधिक, जो मापा न जा सके ; 22. जिसे जीता न जा सके ; 23. जिसे शोक न हो ; 24. पवित्र, विवेकी, पृथक, अस्त-व्यस्त ; 25. तीनों लोकों का स्वामी ; 26. आत्मा, सूक्ष्म, जीवन ; 27. गुणहीन, जिसमें कोई गुण न हो ; 28. मोक्ष, क्षमा, शांन्ति, निवृति, छुटकारा ; 29. मौन, चुप, नि:शब्द ; 30. अतिउत्तम, उत्कृष्ट, अत्यंत प्रिय ; 31. प्रचंड, भेदना, तोड़ना-फोड़ना ; 32. अकेला, बेजोड़ ; 33. अकेला, अकेला न होने वाला, अनेक ; 34. रहस्य, भेद, छिपा हुआ ; 35. सुख देने वाला ; 36. मित्र, दोस्त ; 37. एक ही, एक सा, अभिन्न, सदृश, बराबर ; 38. जिसकी माप न हो सके, अज्ञेय ; 39. जागरूक, सावधान ; 40. जो दिखायी न दे ; 41. वायु के देवता, प्रचंड वायु, तोड़ना ; 42. गतिहीन, चिरस्थायी, अटल, पर्वत ; 43. अचूक, अव्यर्थ, सफल ; 44. अमित, असीम, अत्यधिक, जिसकी तौल न हो सके ; 45. अज्ञेय, अचिंतनीय, जिसको सोचा न जा सके ; 46. जो कँपा न हो ; 47. पवित्र, निरापद, शोकहीन, पूण्य ; 48. जिसका बोध किया जा सके ; 49. सुरक्षा करने वाला ; 50. दिव्य ; 51. जीवनी शक्ति, साँस, जान ; 52. सत्य, यथार्थ ; 53. अत्यंत, मुख्य, प्रधान, उत्कृष्ट ; 54. निर्मल, स्वच्छ, निश्चल ; 55. नर, मर्द, ईश्वर ; 56. गवाही देने वाला ; 57. स्वामी, मालिक, ईश्वर, परमात्मा ; 58. सदा रहने वाला ; 59. जिसका अंत न हो ; 60. जिसका कहीं से शुरू न हो, आदि रहित, नित्य ; 61. वैराग्य, विरक्त ; 62. राग का अभाव, विरक्त ; 63. सदा कल्याण करने वाला ; 64. सब, सारा, समस्त ; 65. भयंकर, डरावना ; 66. पूज्य, कठिन, भारी, बड़ा ; 67. मंगलमय, कल्याणकर, अनुकूल, अच्छा ; 68. सृष्टि का मूल कारण, उत्पत्ति ; 69. पुराना, प्राचीन, सबसे पहले का, आद्य ; 70. सम्पन्न, समृद्ध ; 71. प्रमाणित, सत्य माना हुआ, निश्चित ; 72. मनीषी, मंत्रदृष्टा ; 73. व्याप्त, आच्छादक, सभी जगह फैलने वाला ; 74. ॐ, ओंकार, ईश्वर, परमेश्वर ; 75. प्रकाश करने की क्रिया, प्रकट करने की क्रिया ; 76. आवाज़, शब्द ; 77. आवाज़ ; 78. शब्द, ध्वनि, आवाज़ ; 79. देवनागरी वर्ण मात्रा में 'क' से 'ह' तक वर्ण, भोजन ; 80. पदार्थ का मुख्य और मूल अंश, सारांश ; 81. समस्त, कुल ; 82. कठिनाई से समझ में आने योग्य, बहुत छोटा ; 83. सरल, सहज, साधारण, 84. सब कुछ जानने वाला, 85. ज्ञान, धार्मिक ज्ञान ; 86. नित्य, परम्परानुसार चला आता हुआ ।

(07.05.2012)
सिडनी

58. दर्द के सैलाब में कभी फ़ना.......

दर्द के सैलाब में कभी फ़ना न हो,
तुम किसी भी हाल में ग़मजदा[1] न हो ।

सुन पुकारते हैं उनको भी ये मुक़ाम,
चल रहे अकेले जिनका कारवाँ न हो ।

जिन्दगी में जिस किसी के होके तुम रहो,
उल्फ़त[2] का कभी भी कोई इम्तिहां न हो ।

कभी किसी के सामने नज़रें झुकें तेरी,
खुदा करे कि ऐसा कभी माज़रा न हो ।

न इतने दूर जाओ कि तुम ग़ैर से लगो,
न इतने पास कि ज़रा सा फ़ासला न हो ।

जहाँ में कौन कैसा इससे वास्ता नहीं,
तुम रहो हो बा-वफ़ा बे-वफ़ा न हो ।

कुछ यहाँ अंजाम तक पहुँचता नहीं,
जब तक कि कहीं कोई इब्तिदा न हो ।

हरी भरी ज़मीन और तारों का जहान,
ऐसा नहीं कि इसका कोई बाग़वां न हो ।

1. शोकग्रस्त, दुखी ; 2. प्यार, प्रेम ।

(09.05.2012)
सिडनी

59. मैं गाऊँ ना क्या और करूँ......

मैं गाऊँ ना क्या और करूँ बतलाओ ना,
मैं गाऊँ ना क्या और करूँ समझाओ ना ।

शैशव से ले मेरा जीवन रोते चिल्लाते ही बीता,
अपने रागों-अनुरागों को रह-रह दोहराते ही बीता ।
जब से स्मृति में आ आकर अभिनव[1] शब्द भरे मेरे,
सुर में शब्दों को ले लेकर आकुलता गाते ही बीता ।
दोहराऊँ ना क्या और करूँ बतलाओ ना,
मैं गाऊँ ना क्या और करूँ समझाओ ना ।

जिन गीतों को गाते-गाते दुर्गम पथ पार पथिक करते,
जिन गीतों को गाते-गाते आह्लादित प्राण व्यथित करते ।
गाते-गाते जिन गीतों को जीवन मधुरस से भर जाता,
जिन गीतों को गाते-गाते देवों का नित्य नमन करते ।
बतलाऊँ ना क्या और करूँ बतलाओ ना,
मैं गाऊँ ना क्या और करूँ समझाओ ना ।

नदिया की होती कलकल का अविकल[2] संगीत सुना मैंने,
झरने की होती झरझर का अविरल[3] संगीत सुना मैंने ।
मेरे कानों में आ आकर संगीत सुनाता रोज़ पवन,
चिड़ियों के होते कलरव का अविरत[4] संगीत सुना मैंने ।
लहराऊँ ना क्या और करूँ बतलाओ ना,
मैं गाऊँ ना क्या और करूँ समझाओ ना ।

मैंने अपनी निर्बलता को शब्दों में सजाना सीख लिया,
मैंने अपनी असफलता को सुरलय में गाना सीख लिया ।
जब से जाना मैंने जग की इस बहुखंडित सच्चाई को,
मैंने 'अनहद'[5] की सुरलय से लय को मिलाना सीख लिया ।

मुस्काऊँ ना क्या और करूँ बतलाओ ना,
मैं गाऊँ ना क्या और करूँ समझाओ ना ।

1. नया ; 2. पूरा का पूरा, व्यवस्थित, जो बेचैन न हो ; 3. लगातार, घना या सटा हुआ, घना ; 4. विरामहीन, निरंतर, लगातार ; 5. बिना किसी आघात के दिव्य प्रकृति में अन्तराल से जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती है, उन्हें अनहद या अनाहत नाद कहते हैं, ब्रह्म नाद ।

(11.05.2012)
सिडनी

60. शिथिल किए शरीर में तू......

शिथिल किए शरीर में तू नींद को न यूँ बुला,
जागरण के गीत को अधर सजाए गुनगुना,

अभी तो रात ढल रही पहर अभी तो शेष है,
अभी तो दिन हुआ नहीं सहर अभी तो शेष है ।

सुन रहा सदा कहाँ ये कैसा शोर हो रहा,
चीखता बिलख-बिलख कैसे कोई रो रहा,

इधर तो भूख मिट गई उधर अभी तो शेष है,
अभी तो दिन हुआ नहीं सहर अभी तो शेष है ।

तू अदम्य साहसी शक्ति से है तू भरा,
सदा सजग सचेत हो दिग-दिगंत जगमगा,

नजर जो देश पर उठी नजर अभी तो शेष है,
अभी तो दिन हुआ नहीं सहर अभी तो शेष है ।

अभी तो कितने काम हैं पड़े जो तेरे वास्ते,
पावड़े बिछा रहे अभी तो तेरे रास्ते,

सफ़र अभी चुका नहीं सफ़र अभी तो शेष है,
अभी तो दिन हुआ नहीं सहर अभी तो शेष है ।

(16.05.2012)
सिडनी

61. उनसे ग़र दिल की बात कह.......

उनसे ग़र दिल की बात कर जाते,
थोड़े आँसू तो अपने बह जाते ।

उनसे दावा न था वफ़ाई का,
हमको तो रंज था जुदाई का,

वो भी हँसते हुए से सह जाते,
उनसे ग़र दिल की बात कह जाते ।

बिन तेरे मेरी कैसे गुज़रेगी,
कब तलक जाने कैसे सुधरेगी,

चुप की कहते तो हो के रह जाते,
उनसे ग़र दिल की बात कह जाते ।

वो न सुनते तो फिर भी यूँ होता,
वो न हँसते तो फिर भी यूँ होता,

हम तो घुट के यूँ ही तो रह जाते,
उनसे ग़र दिल की बात कह जाते ।

(17.05.2012)
सिडनी

62. कभी कविता तो कभी गीत.......

कभी कविता तो कभी गीत ग़ज़ल गाता हूँ,
दिल–ए–नादान को ऐसे ही तो बहलाता हूँ ।

एक अकेला तो नहीं है जो परेशां होता,
एक अकेला तो नहीं है जो पशेमां[1] होता,

हर किसी को तो यहाँ दर्द है कोई न कोई,
दिल–ए–नादान को ऐसे ही तो समझाता हूँ ।

देख कलियों की कहानी है जवानी में छिपी,
देख दरिया की कहानी है रवानी में छिपी,

सदा होता है नमन जलते हुए दीपक का,
दिल–ए–नादान को ऐसे ही तो दिखलाता हूँ ।

तेरे करने को कई काम अभी बाक़ी हैं,
काम को देने को अंजाम अभी बाकी हैं,

मुट्ठी में रेत की मानिंद[2] ज़िंदगी जाती,
दिल–ए–नादान को ऐसे ही तो बतलाता हूँ ।

1. शर्म, शर्मिंदा ; 2. समान, सदृश ।

(18.05.2012)
सिडनी

63. देखो रे विश्व विधाता ने कितना.......

देखो रे विश्व विधाता ने कितना सुंदर संसार रचा,
ग्रह, उपग्रह, उल्का, तारे कितना सुंदर आकाश रचा ।

सागर, नदिया, झरने, नाले धरती पर उसने रच डाले,
ग्रीष्म, शरद, वर्षा, जाड़े धरती पर उसने रच डाले ।
हिम आच्छादित कर डाले ऊँचे पर्वत रच कर सारे,
हेमंत रची उसने ही तो इतना सुंदर मधुमास रचा ।
देखो रे विश्व विधाता ने कितना सुंदर संसार रचा,
ग्रह, उपग्रह, उल्का, तारे कितना सुंदर आकाश रचा ।

अगणित जीवों की रचना कर उसने धरती को भर डाला,
वृक्षों, गुल्मों और पादप से सब ओर हरित सब कर डाला ।
है कहीं विहंगों का कलरव तो रंग बिरंगे पुष्प कहीं,
सूरज को भी उसने ही तो चंदा को भू प्रति प्यार रचा ।
देखो रे विश्व विधाता ने कितना सुंदर संसार रचा,
ग्रह, उपग्रह, उल्का, तारे कितना सुंदर आकाश रचा ।

उसने ही तो मानव मन को इतनी अनबुझ जिज्ञासा दी,
उसने ही तो मानव को इतनी उत्कट अभिलाषा दी ।
न्याय, प्रेम और साहस के भाव सजे मानव मन में,
सत्य रचा उसने ही तो सत का अनुपम विश्वास रचा ।
देखो रे विश्व विधाता ने कितना सुंदर संसार रचा,
ग्रह, उपग्रह, उल्का, तारे कितना सुंदर आकाश रचा ।

(19.05.2012)
सिडनी

64. मिल सकेगा नेह क्या मुझको तुम्हारा.......

मिल सकेगा नेह क्या मुझको तुम्हारा ।

हो अधर पर बाँसुरी बजती तभी है,
होती कर वीणा मधुर सजती तभी है ।
है बिना पैरों के घुँघरू की दशा क्या,
होती तन पर जब हिना रचती तभी है ।

कब कहाँ नौका बिना माँझी किनारा ।

गीत भी लय के बिना किस काम का है,
फूल भी खुशबू बिना बस नाम का है ।
सूर्य किरणों के बिना कैसे सवेरा,
शशि बिना हो ज्योत्स्ना अभिराम क्या है ।

है नदी अस्तित्व जब बहती हो धारा ।

देवता तो हूँ नहीं जो द्वार आओ,
थाल में अक्षत औ रोली को सजाओ ।
है कहाँ वरदान की सामर्थ्य मुझमें,
आराध्य मानो देहरी दीपक जलाओ ।

मैं स्वयं ही माँगता सम्बल तुम्हारा ।

(21.05.2012)
सिडनी

65. जान लो कि हिंद के जवान.......

जान लो कि हिंद के जवान हो,
तुम ही देश आन-बान-शान हो ।
हो सुपुत्र तुम प्रबुद्ध भारती,
मातृभूमि नेह से पुकारती ।

कभी चलेंगी तेज-तेज आँधियाँ,
होंगे सामने कभी पहाड़ भी ।
कभी गिरेंगी तेज-तेज बिजलियाँ,
होंगे सामने कभी पठार भी ।

तुम प्रबल हो और शक्तिमान हो,
तुम ही देश आन-बान-शान हो ।
हो सुपुत्र तुम प्रबुद्ध भारती,
मातृभूमि नेह से पुकारती ।

आ पड़ेंगी गहरी-गहरी घाटियाँ,
आ पड़ेंगे फूल और फुहार भी ।
आ घिरेगा हर दिशा में घोर तम,
आ चलेगी ठंडी सी बयार भी ।

तुम विनम्र और धैर्यवान हो,
तुम ही देश आन-बान-शान हो ।
हो सुपुत्र तुम प्रबुद्ध भारती,
मातृभूमि नेह से पुकारती ।

है जो दूर दूर तक चली गई,
है अभी तो देखनी तुम्हें डगर ।
अभी तो देखने तुम्हें कई मुक़ाम,
अभी अभी शुरू हुआ है ये सफ़र ।

तुम सचेत और शीलवान हो,
तुम ही देश आन–बान–शान हो ।
हो सुपुत्र तुम प्रबुद्ध भारती,
मातृभूमि नेह से पुकारती ।

(22.05.2012)
सिडनी

66. फिर से आज शत्रु देश पर चढ़ा.......

फिर से आज शत्रु देश पर चढ़ा,
वीर रक्त माँगती वसुंधरा ।

आज शत्रु नाक फिर नकेल दे,
उसकी योजना को तू बिखेर दे ।
समस्त शक्ति युद्ध में उड़ेल दे,
शत्रु को तू सीमा पर खदेड़ दे ।

देश से घना तिमिर अभी हटा,
वीर रक्त माँगती वसुंधरा ।

तू ही वीर तू ही शक्तिमान है,
तेरी बाँहों में बला की जान है ।
तू ही देश आन-बान-शान है,
देखता तुझी को ये जहान है ।

निभा ओ शौर्य वीर की परम्परा,
वीर रक्त माँगती वसुंधरा ।

सहस्त्र शत्रु तेरे वार से कटे,
रक्त रुण्ड मुण्ड से धरा पटे ।
तेरा शौर्य दिग-दिगंत में सजे,
तेरी वीरता का डंका जग बजे ।

उठ अभी अभी इसे सबक सिखा,
वीर रक्त माँगती वसुंधरा ।

(23.05.2012)
सिडनी

67. तुमने अपना कभी.......

तुमने अपना कभी कहा होता,
हमने हँस कर सभी सहा होता ।

साथ मेरे जो हमसफ़र होते,
ग़म न कोई हमें रहा होता ।

साथ हर दरिया पार कर जाते,
फ़ासला कितना भी रहा होता ।

एक जो मेरी सिर्फ सुन लेते,
न ही शिकवा कोई रहा होता ।

होतीं दुनियाँ की न बलाएँ ये,
हो के जो मेरा तू रहा होता ।

साथ होता जो ग़र तुम्हारा तो,
मुझमें एक हौसला रहा होता ।

(23.05.2012)
सिडनी

68. यह पथ सुखकर हो जाएगा.......

यह पथ सुखकर हो जाएगा,
यदि तुम भी मेरे संग चलो ।

खिल देंगी राहों में कलियाँ,
पल्लव सारे मुस्काएँगे ।
चिड़ियाँ मस्ती में चहकेंगी,
भँवरे भी गुनगुन गाएँगे ।
यह पथ रुचिकर हो जाएगा,
यदि तुम भी मेरे संग चलो ।

बह लेगा शीतल शांत पवन,
यह मग सुरभित हो जाएगा ।
कोयल-औ-पपीहा सुर में तब,
यह नीला नभ खिल जाएगा ।
यह पथ शुभकर हो जाएगा,
यदि तुम भी मेरे संग चलो ।

भर लेगा मन मीठे सपने,
सुर में होंगे सब राग मेरे ।
जीवन जगमग हो जाएगा,
जग लेंगे सोए भाग मेरे ।
यह पथ शुचिकर हो जाएगा,
यदि तुम भी मेरे संग चलो ।

(25.05.2012)
सिडनी

69. इससे पहले कि प्यार मिटे.......

इससे पहले कि प्यार मिटे मिट जाऊँ मैं,
इससे पहले एतबार मिटे मिट जाऊँ मैं ।

नयनों से झलके अभिलाषा,
राहत के जुल्फ़ों के बादल ।
हर पग में विश्वास भरा,
चाहत की बाँहों की साँकल ।
इससे पहले श्रृंगार मिटे मिट जाऊँ मैं,
इससे पहले कि प्यार मिटे मिट जाऊँ मैं ।

संग-संग में जीने के वाएदे,
संग में मर जाने की कसमें ।
मिल कर साथ निभाएँगे,
इस दुनियाँ की सारी रस्में ।
इससे पहले इक़रार मिटे मिट जाऊँ मैं,
इससे पहले कि प्यार मिटे मिट जाऊँ मैं ।

ये गर्म-गर्म तेरी साँसें,
ये आलिंगन और ये चुंबन ।
रह-रह कर तूफ़ान उठे,
तेरे दिल के ये स्पंदन ।
इससे पहले अधिकार मिटे मिट जाऊँ मैं,
इससे पहले कि प्यार मिटे मिट जाऊँ मैं ।

(29.05.2012)
सिडनी

70. केवल तट पर बैठे रहकर वैतरणी.......

केवल तट पर बैठे रहकर वैतरणी[1] पार नहीं होती,
जिसमें साहस है हिम्मत है उसको दुशवार[2] नहीं होती ।
कोई भी मंज़िल दूर नहीं यदि उसका हो दीवानापन,
सच्ची श्रृद्धा और मेहनत हो मेहनत बेकार नहीं होती ।

इन रंग बिरंगे फूलों से कुछ भरना मन में रंग नए,
इन गाती चहकती चिड़ियों से गीत भी लेना संग नए ।
अपने दिल की धड़कन है सुन लो है कैसी ताल मधुर,
अधरों पर यदि हों गीत सजे वंशी दरकार नहीं होती ।

चंदा, धरती, सूरज, तारे अपने परिपथ चलते जाते,
चलते ही चलते जाना सब रह-रह कर यह बतलाते ।
जिसने इस ऋत[3] को जान लिया उसने ही सच को जाना,
सत्य अमर हो कर जीता सच की कभी हार नहीं होती ।

हँसते-हँसते अपने पथ पर आगे-आगे बढ़ते जाना,
आनी हैं कितनी बाधाएँ हैं इनसे भी कैसा घबराना ।
कैसा था कल की क्या सोचे अब आगे कल की देख ज़रा,
यह जीवन की बहती नौका फिर से इस पार नहीं होती ।

1. परलोक की नदी ; 2. मुश्किल, कठिन ; 3. नियम, निश्चित विधान, मुक्ति, मोक्ष ।

(30.05.2012)
सिडनी

71. किसने हमको कब है.......

किसने हमको कब है पुकारा,
किस पर है अधिकार हमारा ।

फिर भी मेरा यह भोला मन,
जाने किसका जा हो जाए ।
हो जाए यह खुद ही पराया,
दूजे को अपना बतलाए ।

बन जाता है खुद ही बेचारा,
किस पर है अधिकार हमारा ।

रात में भी ये सपने देखे,
दिन में भी ये स्वप्न सजाए ।
रोते रोते हँस दे स्वयं ही,
हँसते हँसते फिर रो जाए ।

ढूँढ़ा करता खुद ही सहारा,
किस पर है अधिकार हमारा ।

जो भी थोड़ा हँसकर देखे,
उससे ही यह नेह लगाए ।
उसकी ही छवि हरपल देखे,
उसके ही ये गीत सजाए ।

है ही सदा से प्यार का मारा,
किस पर है अधिकार हमारा ।

(31.05.2012)
सिडनी

72. तुम नहीं तो कौन फिर संकट.......

तुम नहीं तो कौन फिर संकट हरेगा,
कौन आकर दूर सारे दुःख करेगा ।

एक जग में हो तुम्हीं सबके सहारे,
हम तुम्हीं से और तुम ही हो हमारे,

कौन गहरे तम उजालों से भरेगा,
कौन आकर दूर सारे दुःख करेगा ।

हो तेरी हम पर कृपा हम मुस्कराते,
फूल से खिलते विहग से चहचहाते,

कब तेरा आशीष अमृत बन झरेगा,
कौन आकर दूर सारे दुःख करेगा ।

पथ नया अनजान काँटों से भरा है,
है सभी सुनसान मन इससे डरा है,

कौन अपने पंथ कोमल तृण भरेगा,
कौन आकर दूर सारे दुःख करेगा ।

एक तुम ही हो अभय का दान देते,
गर्व, बल, गरिमा, मनुज का भान देते,

बिन तुम्हारे भय भी हमसे क्यों डरेगा,
कौन आकर दूर सारे दुःख करेगा ।

(01.06.2012)
सिडनी

73. यदि हमको तुम फिर मिल जाते.......

यदि हमको तुम फिर मिल जाते,
मुरझाए हम फिर खिल जाते ।

रंग-बिरंगे फूल निकलते,
पतझड़ जाता मन के उपवन ।
फिर से मन ख़ुशबू भर लेता,
खिल जाता फिर मेरा यौवन ।

हम भँवरों से गुन-गुन गाते,
यदि हमको तुम फिर मिल जाते ।

नयन चमकते फिर से मेरे,
उर्जा से भर जाता फिर तन ।
रोम सिहरते रह-रह फिर से,
अधरों पर भर जाता कम्पन ।

हम रह-रह कर फिर मुस्काते,
यदि हमको तुम फिर मिल जाते ।

तुम बिन हम पर कैसी गुज़री,
कैसे छल-छल आँसू बहाए ।
कितनी रातों निंदिया न आई,
कितने दिन यूँ व्यर्थ गँवाए ।

हम जाने क्या क्या बतलाते,
यदि हमको तुम फिर मिल जाते ।

(02.06.2012)
सिडनी

74. मेरी नीरवता में आओ आओ......

मेरी नीरवता में आओ आओ आकर गुनगुनाओ ।

हो गया हूँ मौन कब से,
गीत अधरों पर न आए ।
हो गया कितना जमाना,
यूँ बिना ही सुर सजाए ।
हो गया हूँ सुर रहित मैं आओ आकर सुर सजाओ ।

छिप गया है कौन जाने,
फिर कहाँ मेरा सबेरा ।
हर दिशा में रात काली,
हर तरफ गहरा अँधेरा ।
मेरे मन के घनतिमिर को आओ आकर जगमगाओ ।

जाने कब से दर्द जागा,
आखों ने आँसू बहाए ।
जाने कितने रोज़ गुज़रे,
यूँ बिना ही मुस्कराए ।
मैं तनिक आह्लाद भर लूँ आओ आकर मुस्कराओ ।

(05.06.2012)
सिडनी

75. हर पहर स्मृति सजाते.......

हर पहर स्मृति सजाते,
प्राण मेरे प्रिय बुलाते ।

है अपरिमित आस इनको,
है अटल विश्वास इनको ।
आएँगे फिर से दोबारा,
है सदा अभिलाष इनको ।
मंद मधुमय मुस्कराते,
प्राण मेरे प्रिय बुलाते ।

फिर भी ये अवसाद[1] भरते,
क्यों सदा शंका से डरते ।
क्यों मेरे रह-रह के आँसू,
आँखों आ हर बार झरते ।
क्यों मेरे उर को जलाते,
प्राण मेरे प्रिय बुलाते ।

खेल ये विलगन[2] मिलन का,
खेल ये हर्ष और रुदन का ।
उल्लास उद्विग्न से भरा ये,
खेल ये जीवन मरण का ।
क्यों मुझे हरपल खिलाते,
प्राण मेरे प्रिय बुलाते ।

1. उदासी, खेद, हार, थकावट, सुस्ती ; 2. अलग होना ।

(06.06.2012)
सिडनी

76. मनुष्यता का भान ले मनुष्य.......

मनुष्यता का भान ले मनुष्य ही बने रहो,
शील[1], सत्य, न्याय पर तुम सदा डटे रहो ।

सो न जाना तुम कहीं,
तुम्हें सदैव जागना ।
पल भी मूल्यवान है,
तुम्हें सदैव आँकना ।
अपने ध्येय कर्म में तुम सदा रमे रहो,
शील, सत्य, न्याय पर तुम सदा डटे रहो ।

क्या डराएँगी तुम्हें,
जग की काली आँधियाँ ।
नभ में छाते घोर घन,
तेज-तेज बिजलियाँ ।
संकटों के बीच तुम गर्व से तने रहो,
शील, सत्य, न्याय पर तुम सदा डटे रहो ।

अभी तो तुमको नापनी,
न जाने कितनी दूरियाँ ।
अभी तो तुमको छूनी हैं,
ऊँची-ऊँची चोटियाँ ।
उल्लास और उमंग से तुम सदा भरे रहो,
शील, सत्य, न्याय पर तुम सदा डटे रहो ।

1. नैतिक आचरण और व्यवहार, सद्वृति ।

(07.06.2012)
सिडनी

77. मैं तो अपलक हो गया जाने.......

मैं तो अपलक हो गया जाने न कैसे,
तुमने तो देखा भी और तुम मुस्कराए ।
शून्य में मैं खो गया जाने न कैसे,
पास मेरे तुम थे जब आँचल सजाए ।

मेरे मन शहनाई सी बजने लगी थी,
मन की सोई आस भी जगने लगी थी ।
बज उठे थे मन में मेरे ढोल-तासे,
एक कोई बारात सी सजने लगी थी ।

मैं तो हतप्रभ हो गया जाने न कैसे,
तुमने तो लय से भरे कर भी हिलाए ।
शून्य में मैं खो गया जाने न कैसे,
पास मेरे तुम थे जब आँचल सजाए ।

फिर से जागे मन के मेरे सोए शतदल,
मन की लहरें भी तरंगित होती हलचल ।
मन के नभ चमका था फिर आकर सबेरा,
फिर से नभ में पंछियों का मीठा कलरव ।

मैं तो अब्रुवत[1] हो गया जाने न कैसे,
तुमने तो मधु से भरे स्वर भी सुनाए ।
शून्य में मैं खो गया जाने न कैसे,
पास मेरे तुम थे जब आँचल सजाए ।

हर जगह मैं ढूँढ़ता फिरता सहारा,
कौन सा अपना है तट अपना किनारा ।
कौन सा पथ है जो मुझको ले के जाता,
है जहाँ मंज़िल और जीवन भर गुज़ारा ।

मैं तो जड़वत हो गया जाने न कैसे,
तुमने तो अपने दृगों पथ भी बिछाए ।
शून्य में मैं खो गया जाने न कैसे,
पास मेरे तुम थे जब आँचल सजाए ।

1. मौन, खामोश ।

(09.06.2012)
सिडनी

78. जीवन में भर लो रंग मधुर......

जीवन में भर लो रंग मधुर,
रंगों के बिना सब रीता है ।
जिसने भी जैसा रंग भरा,
वैसा वह जीवन जीता है ।

तुम आशा का एक रंग भरो,
रंग एक भलाई भर लो तुम ।
भर लो करुणा का रंग मन में,
रंग एक सचाई भर लो तुम ।

यह रंग ही अपना गंगाजल,
जिसको यह जीवन पीता है ।
जिसने भी जैसा रंग भरा,
वैसा वह जीवन जीता है ।

तुम चाहत का एक रंग भरो,
रंग साहस का एक भर लो तुम ।
भर लो उल्लास का रंग मन में,
रंग मेहनत का एक भर लो तुम ।

यह रंग है अपनी रामायण,
यह रंग ही अपनी गीता है ।
जिसने भी जैसा रंग भरा,
वैसा वही जीवन जीता है ।

तुम श्रृद्धा का एक रंग भरो,
रंग भक्ति का एक भर लो तुम ।
भर लो निष्ठा का रंग मन में,
रंग शक्ति का एक भर लो तुम ।

है मानव की गरिमा इसमें,
वह दु:ख को कैसे सीता है ।
जिसने भी जैसा रंग भरा,
वैसा वही जीवन जीता है ।

(12.06.2012)
सिडनी

79. जैसी राह सुझाते मुझको.......

जैसी राह सुझाते मुझको,
उस पर ही चल देता हूँ ।

तुमने चाहा मैं हँस जाऊँ,
मैं काँटों में भी मुस्काया ।
तुमने चाहा मैं रो जाऊँ,
मैं फूलों में भी मुरझाया ।

जैसा स्वप्न दिखाते मुझको,
उसको ही बुन लेता हूँ ।

अपने मन नभ पर मैं देखूँ,
काले-काले घिरते बादल ।
अपने मन थल पर मैं देखूँ,
सतरंगी लहराता आँचल ।

जैसा दृश्य दिखाते मुझको,
उसको ही भर लेता हूँ ।

गाता हूँ मैं गीत तुम्हारे,
गीत सजाता मैं हूँ मिलने के ।
गाता हूँ मैं गीत जगत के,
गीत सजाता हूँ मैं सृजन के ।

जैसा राग सजाते मुझमें,
उसको ही गुन लेता हूँ ।

(14.06.2012)
सिडनी

80. ज़िगर में जोश जुनूँ प्यार वफ़ा.......

ज़िगर में जोश जुनूँ प्यार वफ़ा लेकर चल,
जहाँ जिधर भी चले वादे सबा लेकर चल ।

कौन सी चीज़ कभी तुझको कहाँ मुश्किल है,
तू अगर ठान ले कदमों के नीचे मंज़िल है,

हसीन ख़्वाब लिए दिल में खुदा लेकर चल,
जहाँ जिधर भी चले बादे सबा लेकर चल ।

तुझे मंजिल के निशां साफ़ नज़र आएँगे,
ये पथ के शूल भी फूलों में बदल जाएँगे,

अपने माँ–बाप बुजर्गों की दुआ लेकर चल,
जहाँ जिधर भी चले वादे सबा लेकर चल ।

तू इधर लौट के इस राह फिर न आएगा,
तेरा बढ़ता हुआ पग पीछे फिर न जाएगा,

जिधर तू देखे उधर उसका मज़ा लेकर चल,
जहाँ जिधर भी चले वादे सबा लेकर चल ।

(17.06.2012)
सिडनी

81. मेरे तो अश्रु छलकते हैं तुम तो.......

मेरे तो अश्रु छलकते हैं तुम तो आँसू बरसाओ ना,
मैं तो यूँ ही रो जाता हूँ तुम तो ऐसे रो जाओ ना ।

मैं तो कितनी ही बातों पर ।
बिन कारण ही रो जाता हूँ ।
धूम्र उमड़ता मेरे मन,
आखों आँसू भर लाता हूँ ।
मैं तो ऐसे हो जाता हूँ तुम तो ऐसे हो जाओ ना,
मैं तो यूँ ही रो जाता हूँ तुम तो ऐसे रो जाओ ना ।

तुम ना जानो इस जीवन में,
कितने दु:ख दर्द सहे मैंने ।
कितनी आकुलता में जीया,
कितने अवसाद[1] पिए मैंने ।
मैं तो बिन रस मुस्काता हूँ तुम तो ऐसे मुस्काओ ना,
मैं तो यूँ ही रो जाता हूँ तुम तो ऐसे रो जाओ ना ।

कितनी ही मैंने कोशिश की,
स्मृति का दंश[2] नहीं जाता ।
पानी पर हिमखंडों का सा,
वह ऊपर-ऊपर उतराता ।
मैं तो इनमें खो जाता हूँ तुम तो ऐसे खो जाओ ना,
मैं तो यूँ ही रो जाता हूँ तुम तो ऐसे रो जाओ ना ।

1. खेद, हार, सुस्ती, थकावट ; 2. डंक मारने, काटने का घाव, डाँस ।

(18.06.2012)
सिडनी

82. ये रात और दिन दिन रात यूँ ही......

ये रात और दिन दिन रात यूँ ही, अविरल आ–आकर फिर जाते,
हम मन ही मन तब मुस्काते, हम मन ही मन तब मुस्काते ।

खिलता फिर से अरुणाभ गगन,
बहने लगता फिर शान्त पवन ।
चहुँदिश खुशबू फिर भर जाती,
खिलते फिर से हर ओर सुमन ।
कलरव करते तरु से पंछी, फिर से नभ में उड़ते जाते,
हम मन ही मन तब मुस्काते, हम मन ही मन तब मुस्काते ।

स्वर्णिम किरणों को लेकर फिर,
नीला अम्बर फिर खिल जाता ।
धरती का हर एक तरु तृण कण,
स्वर्णिम आभा फिर भर जाता ।
जब शान्त सरोवर में फिर से, सोये कमल दल खिल जाते,
हम मन ही मन तब मुस्काते, हम मन ही मन तब मुस्काते ।

होता अवसान दिवस फिर से,
रजनी आकर फिर मुस्काती ।
जगमग करते फिर तारागण,
फिर चाँदनी भू पर छा जाती ।
फिर तम की गहरी चादर में, धरती पर सारे छिप जाते,
हम मन ही मन तब मुस्काते, हम मन ही मन तब मुस्काते ।

(20.06.2012)
सिडनी

83. आओ कुछ सपने सजाएँ......

आओ कुछ सपने सजाएँ साथ मिलकर,
आओ हम सब मुस्कराएँ साथ मिलकर ।

एक मत मानों कभी होता सबल है,
एकता में ही सदा से सत्य बल है ।
एक छड़ी हो तो सहज ही टूट जाती,
साथ सबको तोड़ना कब ये सरल है ।
आओ एकल स्वर बनाएँ साथ मिलकर,
आओ कुछ सपने सजाएँ साथ मिलकर ।

गीत ऐसे जो कि उर आह्लाद भर दें,
आस भर दें और नव उल्लास भर दें ।
दूर है मंज़िल अभी तो दूर जाना,
प्राण में स्फूर्ति और विश्वास भर दें ।
आओ सुन्दर गीत गाएँ साथ मिलकर,
आओ कुछ सपने सजाएँ साथ मिलकर ।

देश केवल भूमि का हिस्सा नहीं है,
राज्य शासन सैन्य का किस्सा नहीं है ।
देश जनता से है जन की चेतना से,
मान लें जब दूसरा हम सा नहीं है ।
आओ सबको यह बताएँ साथ मिलकर,
आओ कुछ सपने सजाएँ साथ मिलकर ।

(22.06.2012)
सिडनी

84. आज फिर से रे चलो ख़्वाब.......

आज फिर से रे चलो ख्वाब सजा लें मिलकर,
फिर से आ ज़ीस्त[1] को रंगीन बना लें मिलकर ।

दर्द कहते हैं कि कहने से भी कम हो जाता,
ग़म का सैलाब यूँही करके भी नम[1] हो जाता,
आज फिर से रे चलो अपनी सुना लें मिलकर,
फिर से आ ज़ीस्त को रंगीन बना लें मिलकर ।

एक कांधा है कहाँ तक ये सँभाले सब कुछ,
तेज साँसें हैं कहाँ तक ये बचा लें सब कुछ,
आज फिर से रे चलो बोझ उठा लें मिलकर,
फिर से आ ज़ीस्त को रंगीन बना लें मिलकर ।

राग कैसा भी हो बस एक ही हो हो कब तक,
गीत कैसा भी हो बस एक ही हो हो कब तक,
आज फिर से रे चलो गीत सजा लें मिलकर,
फिर से आ ज़ीस्त को रंगीन बना लें मिलकर ।

1. विनीत, झुका हुआ, गीला ।

(23.06.2012)
सिडनी

85. न ही तूफ़ान आया उठा ही.......

न ही तूफ़ान आया उठा ही भँवर,
न ही सैलाब आया उठी ही लहर ।
हुआ फिर न जाने ये कैसा इधर,
उन जिन पलों में महकते थे हम ।
आज जाने वे जाकर कहाँ खो गए ।

हैं दिन रात वैसे शाम–ओ–सहर,
हैं कोयल सुनातीं अभी भी ग़ज़ल ।
हुआ फिर न जाने ये कैसा इधर,
उन जिन पलों में चहकते थे हम ।
आज जाने वे जाकर कहाँ खो गए ।

है वैसे का वैसा ही अब भी शहर,
हैं गलियाँ भी वो भी वहीं हैं डगर ।
हुआ फिर न जाने ये कैसा इधर,
उन जिन पलों में सँवरते थे हम ।
आज जाने वे जाकर कहाँ खो गए ।

न ही हुस्न बदला न तिरछी नज़र,
न ही चाल बदली न बाँकी उमर ।
हुआ फिर भी जाने ये कैसा इधर,
उन जिन पलों में मचलते थे हम ।
आज जाने वे जाकर कहाँ खो गए ।

(22.06.2012)
सिडनी

86. एक अनजाने देश में जब.......

एक अनजाने देश में जब भी मैं चुप हो रह जाता हूँ,
अपना मन उल्लास से भरने देश तुझे ही गाता हूँ ।

शुभ्र हिमालय सिर हो मेरा,
सीना मेरा हो विन्ध्याचल ।
नीलगिरी घुटने बन जाते,
पैर तले तब नीला सागर ।
दाएँ में कच्छ[1] को भर लेता बाएँ मिज़ो भर जाता हूँ,
अपना मन उल्लास से भरने देश तुझे ही गाता हूँ ।

श्वासों में तब तेरा समीरण,
धमनी बहता तेरा नद्‌जल ।
आखों में आकाश हो तेरा,
कानों में गाती फिर कोयल ।
रोम मेरे पादप[2] बन जाते वन बनकर सज जाता हूँ,
अपना मन उल्लास से भरने देश तुझे ही गाता हूँ ।

स्मृति में मैं सब भर लेता,
तेरी थाती[3], महिमा, गौरव ।
संत, तपस्वी, त्यागी, ज्ञानी,
जिनसे जग में तेरा सौरभ ।
मैं अपने मन श्रृद्धा भरकर हर पल शीश नवाता हूँ,
अपना मन उल्लास से भरने देश तुझे ही गाता हूँ ।

1. कच्छ का रण (गुजरात) ; 2. पौधे, वृक्ष, पेड़ ; 3. धरोहर, अमानत, पूँजी ।

(01.07.2012)
सिडनी

87. सीमित पलों का अपना.......

सीमित पलों का अपना ये जीवन,
कल-कल नदी सा बहा जा रहा है ।

ऐसे न चुप हो ज़रा हँस के बोलो,
उड़ लो गगन में ज़रा पंख खोलो,

जो नील नभ में जितना उड़ा है,
वही आज उतना हँस गा रहा है ।

आए यहाँ पर तो कुछ काम कर लो,
थोड़ा सा जग में तुम नाम कर लो,

कहते हैं केवल उसी का है जीवन,
जो दूसरों के भी काम आ रहा है ।

एक बार जाकर कहाँ किसको आना,
फिर जाने होगा कहाँ पर ठिकाना,

करना है जो भी कर लो समय पर,
जिसने गँवाया वह पछता रहा है ।

(02.07.2012)
सिडनी

88. जब जब तुमने गीत जो गाया.......

जब-जब तुमने गीत जो गाया वह ही मैंने गाया है,
जब-जब तुमने जो दोहराया वह ही तो दोहराया है,

तुम गाओ और मैं ना गाऊँ क्या ऐसा भी मुमकिन है,
तुम गाओ मैं चुप हो जाऊँ क्या ऐसा भी मुमकिन है ।

जब-जब तुम रातों में जागे मैं भी तो संग जागा हूँ,
मुझको भी तब नींद न आयी देता रहा दिलासा हूँ,

तुम जागो ओर मैं सो जाऊँ क्या ऐसा भी मुमकिन है,
तुम गाओ मैं चुप हो जाऊँ क्या ऐसा भी मुमकिन है ।

जब-जब भी तेरे अश्रु बहे हैं मैंने भी तो बहाए हैं,
मैंने दु:ख के वे सारे दिन तेरे ही साथ बिताए हैं,

तुम रोओ मैं ना रो जाऊँ क्या ऐसा भी मुमकिन है,
तुम गाओ मैं चुप हो जाऊँ क्या ऐसा भी मुमकिन है ।

जब-जब भी तुम मुस्काए हो मैं भी तो मुस्काया हूँ,
जब-जब भी तुम लहराए हो मैं भी तो लहराया हूँ,

तुम हँस दो मैं ना हँस जाऊँ क्या ऐसा भी मुमकिन है,
तुम गाओ मैं चुप हो जाऊँ क्या ऐसा भी मुमकिन है ।

(06.07.2012)
सिडनी

89. दीप जो हमने सजाए हैं......

दीप जो हमने सजाए हैं रौशनी भर लें,
दीप जो हमने सजाए हैं हर ख़ुशी भर लें ।
अब तलक अपने लिए दीप जलाए हमनें,
अब चलो सबके लिए दीप जला लें यारो ।
तुम अकेले नहीं हो अब ये जानो दुनियाँ में,
साथ हम भी हैं तेरे सबको बता दें यारो ।

स्वप्न जो हमने सजाए हैं रूपहला भर लें,
स्वप्न जो हमने सजाए हैं सुनहला भर लें ।
अब तलक अपने लिए स्वप्न सजाए हमनें,
अब चलो सबके लिए स्वप्न सजा लें यारो ।
तुम अकेले नहीं हो अब ये जानो दुनियाँ में,
साथ हम भी हैं तेरे सबको बता दें यारो ।

फूल जो हमने सजाए हैं बहारें भर लें,
फूल जो हमने सजाए हैं नजारे भर लें ।
अब तलक अपने लिए फूल खिलए हमनें,
अब चलो सबके लिए फूल खिला लें यारो ।
तुम अकेले नहीं हो अब ये जानो दुनियाँ में,
साथ हम भी हैं तेरे सबको बता दें यारो ।

अश्रु जो हमने सजाए हैं कि ये सुख झेलें,
अश्रु जो हमने सजाए हैं कि ये दु:ख झेलें ।
अब तलक अपने लिए अश्रु बहाए हमनें,
अब चलो सबके लिए अश्रु बहा लें यारो ।
तुम अकेले नहीं हो अब ये जानो दुनियाँ में,
साथ हम भी हैं तेरे सबको बता दें यारो ।

गीत जो हमने सजाए हैं जवानी सज ले,
गीत जो हमने सजाए हैं रवानी सज ले ।
अब तलक अपने लिए गीत सजाए हमनें,
अब चलो सबके लिए गीत सजा लें यारो ।
तुम अकेले नहीं हो अब ये जानो दुनियाँ में,
साथ हम भी हैं तेरे सबको बता दें यारो ।

(02.07.2012)
सिडनी

90. अपना जीवन हो जाए मधुर.......

अपना जीवन हो जाए मधुर, आओ मधुमय सपने भर लें,
आओ अब के सब मिल गाएँ, अपने सुर को सुरमय कर लें ।

अब छोड़ भी दें द्वेष और जलन,
अब तोड़ भी दें झूठ और भरम ।
हम ऐसे क्यों मुरझाए हों,
आओ खिलने दें मन का सुमन ।
आओ हम फिर से खिल जाएँ, मन में फिर से खुशियाँ भर लें,
आओ सब के सब मिल गाएँ, अपने सुर को सुरमय कर लें ।

कब तक हम याद रखें वे पल,
कब तक पालें ये क्रोध प्रबल ।
हम क्यों जल जाएँ ज्वाला में,
जब जीवन की गरिमा शीतल ।
आओ हम फिर से मुस्काएँ, अपने मन को निर्मल कर लें,
आओ सब के सब मिल गाएँ, अपने सुर को सुरमय कर लें ।

हम फिर भर लें आह्लाद नया,
हम फिर भर लें विश्वास नया ।
फिर से सज लें हम रागों से,
हम फिर भर लें शुभराग नया ।
आओ हम फिर से सज जाएँ, अपना जीवन शुभमय कर लें,
आओ सब के सब मिल गाएँ, अपने सुर को सुरमय कर लें ।

(16.07.2012)
सिडनी

91. इस कदर भी न डूबो.......

इस कदर भी न डूबो कभी जाम में,
बेखुदी फिर कहीं बेखुदी ना लगे ।
ना कहीं और महके गुल-ए-आरज़ू,
आरज़ू फिर कहीं आरज़ू ना लगे ।

ना किसी का ये सच्चा सहारा बना,
ना किसी का ये सच्चा किनारा बना ।
इस जमाने में जानू कई लुत्फ़ हैं,
ना किसी का ये सच्चा हमारा बना ।

इस कदर ना बढ़े ये तेरी जुस्तजू,
जुस्तजू फिर कहीं जुस्तजू ना लगे ।
ना कहीं और महके गुल-ए-आरज़ू,
आरज़ू फिर कहीं आरज़ू ना लगे ।

डर है इसको न एहले वफ़ा मान लो,
डर है इसको न दर्दे दवा मान लो ।
भूल जाओ न अपने ज़मीं-आसमाँ,
डर है इसको न एहले खुदा मान लो ।

डूब जाना न ऐसे भी सैलाब में,
ज़िंदगी फिर कहीं ज़िंदगी ना लगे ।
ना कहीं और महके गुल-ए-आरज़ू,
आरज़ू फिर कहीं आरज़ू ना लगे ।

मय बुरी चीज़ है अब तो जाओ संभल,
मय बुरी चीज़ है होके बच लो निकल ।
लग गई मुँह से फिर तो ये छूटे नहीं,
मय बुरी चीज़ है यूँ न जाओ मचल ।

छा गया जो अँधेरा तो पछताओगे,
रोशनी फिर कहीं रोशनी ना लगे ।
ना कहीं और महके गुल-ए-आरज़ू,
आरज़ू फिर कहीं आरज़ू ना लगे ।

(24.07.2012)
सिडनी

92. मेरी वीणा के तारों को आओ आकर......

मेरी वीणा के तारों को आओ आकर झंकृत कर दो,
जाने कब से सुरहीन हूँ मैं आओ आकर सुर से भर दो ।

मेरे मन के विस्तृत भू पर वन ही है ना ही उपवन,
चलती रहती एक आँधी सी और उड़ते रहते हैं रजकण,

मेरे मन के इस मरुथल को आओ आकर निर्झर कर दो,
जाने कब से सुरहीन हूँ मैं आओ आकर सुर से भर दो ।

मेरे मन के इस अम्बर पर अब छाई रहती नीरवता,
इंद्र धनुष से सूना नभ ना ही बदली की शीतलता,

मेरे मन के इस अम्बर में आओ आकर सावन भर दो,
जाने कब से सुरहीन हूँ मैं आओ आकर सुर से भर दो ।

मेरे जीवन की यह सरिता बस पल दो पल को ही बहती,
इस जग में भी कोई सत्ता कब शाश्वत होकर भी रहती,

जितना भी जीवन बाक़ी है आओ आकर रसमय कर दो,
जाने कब से सुरहीन हूँ मैं आओ आकर सुर से भर दो ।

(29.07.2012)
सिडनी

93. जिन्दगी की राह थोड़ी सी......

ज़िन्दगी की राह थोड़ी सी सुगम हो,
आओ मिलकर साथ में कलियाँ बिछा लें ।
पथ है अनजाना जरा सा भय तो कम हो,
आओ मिल कर साथ कदमों को मिला लें ।

कौन है ऐसा न संशय जिसके मन में,
कौन है ऐसा कि जो डरता नहीं है ।
कौन है ऐसा न जिसके अश्रु छलके,
कौन है ऐसा कि दुःख करता नहीं है ।

हों न एकाकी सभी का साथ संग हो,
आओ मिल कर साथ में सपने सजा लें ।
पथ है अनजाना जरा सा भय तो कम हो,
आओ मिल कर साथ कदमों को मिला लें ।

हैं न जाने आनी कितनी मुश्किलें हैं,
हैं न जाने कितने हैं इम्तिहान बाक़ी ।
हैं न जाने आनी कितनी आपदाएँ,
हैं न जाने कितने हैं तूफ़ान बाक़ी ।

थोड़ी सी खुशियाँ जरा सा राग रंग हो,
आओ मिलकर साथ में हम गीत गा लें ।
पथ है अनजाना जरा सा भय तो कम हो,
आओ मिल कर साथ कदमों को मिला लें ।

आगे बढ़कर छूनी है उचाईयाँ भी,
आगे बढ़कर छूना है हमको ये अम्बर ।
आगे बढ़कर छूनी हैं गहराईयाँ भी,
आगे बढ़कर पैठना हमको समन्दर ।

आगे बढ़ने की कहानी अपने संग हो,
आओ मिलकर बात को आगे बढ़ा लें ।
पथ है अनजाना जरा सा भय तो कम हो,
आओ मिल कर साथ कदमों को मिला लें ।

(31.07.2012)
सिडनी

94. चाहे जितना भी फ़लसफ़ा......

चाहे जितना भी फ़लसफ़ा पढ़ लो,
चाहे जिससे भी तुम पता कर लो ।
यह तो खुद नूर बन उतरता है,
किसको माँगे सुकून मिलता है ।

कभी ईमान में छिपा दीखता,
कभी मुस्कान में छिपा दीखता ।
पूजा, अर्चन ओ प्रार्थनाओं में,
कभी एहसान में छिपा दीखता ।

चाहे तुम जितना बहाना गढ़ लो,
चाहे तुम जितना फ़साना गढ़ लो ।
यह तो खुद आप ही उभरता है,
किसको माँगे सुकून मिलता है ।

उसको तुम ढूँढ़ लो नज़ारों में,
उसको तुम ढूँढ़ लो बहारों में ।
ज़र्रे-ज़र्रे में उसको ढूँढ़ो तुम,
उसको तुम ढूँढ़ लो सितारों में ।

चाहे तुम कोई फैसला कर लो,
चाहे तुम कोई सिलसिला कर लो ।
यह दिया अपने आप जलता है,
किसको माँगे सुकून मिलता है ।

ये लगे अब न कुछ भी रोने को,
ये लगे अब न कुछ भी खोने को ।
जग के कारज सभी नि:अर्थ भरे,
ये लगे अब न कुछ भी होने को ।

चाहे तुम कितना ही ग़िला कर लो,
चाहे तुम कितनी ही दुआ कर लो ।
यह कुसुम अपने आप खिलता है,
किसको माँगे सुकून मिलता है ।

(05.08.2012)
सिडनी

95. हो रहा मुझको दु:सह अब.......

हो रहा मुझको दु:सह अब मौन तेरा ।

कब से खड़ा हूँ द्वार पर देखो तुम्हारे,
कब से मेरा मन तुम्हें अविकल पुकारे ।
चेतना में भर रहा हूँ भव्यता को,
कब से मेरी दृष्टि तुमको ही निहारे ।
है तुम्हारे भी सिवा यहाँ कौन मेरा,
हो रहा मुझको दु:सह अब मौन तेरा ।

क्या मेरी ही भक्ति वंदन में कमी है,
क्या मेरी श्रृद्धा व अर्चन में कमी है ।
हूँ नहीं विश्वास से परिपूर्ण क्या मैं,
क्या मेरी स्तुति व् पूजन में कमी है ।
क्या नहीं हो दूर मन छाया अँधेरा,
हो रहा मुझको दु:सह अब मौन तेरा ।

या तेरे वरदान के लायक नहीं मैं,
या तेरे प्रतिदान के लायक नहीं मैं ।
मैं भी तेरा अंश हूँ विस्मृत तुम्हें या,
या तेरे अभिमान के लायक नहीं मैं ।
क्या नहीं है मेरे जीवन अब सवेरा,
हो रहा मुझको दु:सह अब मौन तेरा ।

(06.08.2012)
सिडनी

96. ले दया की कामना हम.......

ले दया की कामना, हम तेरा पूजन करें,
कर रहे हम प्रार्थना, हम तेरा गायन करें ।

दु:ख-ओ-चिंता, क्षोभ से, दूर रखना तुम हमें,
लोभ, मद-ओ-क्रोध से, दूर रखना तुम हमें,

भक्ति की ले भावना, हम तेरा सुमरन करें,
कर रहे हम प्रार्थना, हम तेरा गायन करें ।

सत्य, न्याय-ओ-कर्म ले, हम सदा फलते रहें,
सुख, समृद्धि-ओ-धर्म ले, हम सदा फलते रहें,

शांति की ले कल्पना, हम तेरा वंदन करें,
कर रहे हम प्रार्थना, हम तेरा गायन करें ।

बुद्धि, प्रज्ञा-ओ-ज्ञान का, हमको वर देना प्रभू,
करूणा, दया-ओ-ध्यान का, हमको वर देना प्रभू,

ले के वर की याचना, हम तेरा अर्चन करें,
कर रहे हम प्रार्थना, हम तेरा गायन करें ।

(11.08.2012)
सिडनी

97. जीवन की सरित तरंगों पर......

जीवन की सरित तरंगों पर, आओ हम कुछ पल साथ बहें,
कुछ अपनी बातें तुम कह दो, कुछ हम भी अपनी बात कहें ।

बतलाओ अपने जीवन में,
देखो तुमने कैसे सपने ।
कितने पूरे कर पाए तुम,
कितने बाकी पूरे करने ।

कितने विस्मृति में लीन हुए, कितने अब तक भी साथ रहें,
कुछ अपनी बातें तुम कह दो, कुछ हम भी अपनी बात कहें ।

अब तक तुम जितनों से मिले,
उतनों में कौन तुम्हारे हैं ।
जो साथ रहे मँझधार में भी,
जो साथ में आज किनारे हैं ।

हमको बतलाओ हों जितने, जो दुःख को मिलकर साथ सहें,
कुछ अपनी बातें तुम कह दो, कुछ हम भी अपनी बात कहें ।

अब की बिछड़े फिर ना जाने,
ऐसे फिर से कब मिलना हो ।
ऐसी मधुमय मुस्कानों का,
फिर से जाने कब खिलना हो ।

माना पल दो पल साथ में हम, पर एक दूजे का हाथ गहें,
कुछ अपनी बातें तुम कह दो, कुछ हम भी अपनी बात कहें ।

(13.08.2012)
सिडनी

98. अर्पित करूँ मैं क्या तुझे.......

अर्पित करूँ मैं क्या तुझे ओ देश मेरे तू बता,
ओ देश तेरी शान से बढ़कर मुझे कुछ भी नहीं ।
मैं माँ कहूँ माटी कहूँ और कह रहूँ तुझको खुदा,
ओ देश तेरा नाम से बढ़कर मुझे कुछ भी नहीं ।

सुर में सभी मौसम सजे सुर में सजीं सब वादियाँ,
सुर में सभी झरने सजे सुर में सजीं सब घाटियाँ ।
सरिताएँ भी सुर में सजीं सागर भी सुर में हैं तेरे,
सुर में सभी पर्वत सजे सुर में सजीं सब चोटियाँ ।

स्तुति करूँ वंदन करूँ या कह रहूँ तेरी कथा,
ओ देश तेरे गान से बढ़कर मुझे कुछ भी नहीं ।
अर्पित करूँ मैं क्या तुझे ओ देश मेरे तू बता,
ओ देश तेरी शान से बढ़कर मुझे कुछ भी नहीं ।

दिल में तेरे मन्दिर लिए दिल में तेरे गुरुद्वार मैं,
दिल में तेरी मसजिद लिए दिल में तेरी दरगाह मैं ।
गिरजा भी तेरे दिल लिए स्तूप भी दिल में तेरे,
दिल में तेरे खंडहर लिए दिल में तेरी मीनार मैं ।

पूजा करूँ अर्चन करूँ मन में तेरी स्मृति सजा,
ओ देश तेरे मान से बढ़कर मुझे कुछ भी नहीं ।
अर्पित करूँ मैं क्या तुझे ओ देश मेरे तू बता,
ओ देश तेरी शान से बढ़कर मुझे कुछ भी नहीं ।

यदि तू कहे बिजली बनूँ यदि तू कहे अंगार सा,
यदि तू कहे प्रस्तर बनूँ यदि तू कहे फ़ौलाद सा ।
तलवार बन जाऊँ मैं तेरी ढाल बन जाऊँ तेरी,
यदि तू कहे अंधड़ बनूँ यदि तू कहे सैलाब सा ।

मैं हँसते–हँसते प्राण दूँ और हो रहूँ तुझमें फ़ना,
ओ देश तेरी आन से बढ़कर मुझे कुछ भी नहीं ।
अर्पित करूँ मैं क्या तुझे ओ देश मेरे तू बता,
ओ देश तेरी शान से बढ़कर मुझे कुछ भी नहीं ।

(15.08.2012)
सिडनी

99. स्तुति करूँ वन्दन करूँ......

स्तुति करूँ वन्दन करूँ ओ देश तुझको हो नमन,
पूजा करूँ अर्चन करूँ अर्पित करूँ श्रृद्धा सुमन ।

पीठ ज्योतिर्लिंग कहीं मसजिद कहीं गुरुद्वार है,
स्तूप गिरिजाघर कहीं है मठ कहीं दरगाह है,

नगपति[1] तेरे सिर पर सजा, सागर सजे तेरे चरण,
पूजा करूँ अर्चन करूँ अर्पित करूँ श्रृद्धा सुमन ।

ब्रज ओ यमुना है कहीं राधा सहित घनश्याम हैं,
साकेत सरयू है कहीं सीता सहित श्रीराम हैं,

गंगा ओ कृष्णा ताप्ती कल भी बहें देतीं वचन,
पूजा करूँ अर्चन करूँ अर्पित करूँ श्रृद्धा सुमन ।

आबू[2] अजन्ता है कहीं मदुरई कहीं कोणार्क है,
साँची एलौरा है कहीं शिरडी ओ सबरीमाल[3] है,

हम्पी[4] ओ हेलबिड[5] है कहीं तो है कहीं रामेश्वरम,
पूजा करूँ अर्चन करूँ अर्पित करूँ श्रृद्धा सुमन ।

1. हिमालय ; 2. माउंट आबू, राजस्थान के सिरोही जिले में, जैन मंदिरों के लिए विख्यात ; 3. सबरीमाला, सबरिमलय (मलयालम में अर्थ पर्वत), स्वामी अय्यप्पा का प्रसिद्ध मंदिर, केरल राज्य में ; 4. कर्नाटक राज्य में, एक समय में विजयनगर राज्य की राजधानी, मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध ; 5. कर्नाटक राज्य में, एक समय में होयसल राजाओं की राजधानी, मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध ।

(21.08.2012)
सिडनी

100. राम राम राम भजूँ राम.......

राम राम राम भजूँ राम राम राम,
राम राम राम भजूँ राम राम राम ।
राम राम नाम सत्य, राम राम नाम नित्य,
राम राम नाम सत्य, राम राम नाम नित्य,
राम राम राम रमूँ राम राम राम,
राम राम राम रमूँ राम राम राम ।
राम राम नाम ऋद्धि[1], राम राम नाम सिद्धि[2],
राम राम नाम ऋद्धि, राम राम नाम सिद्धि,
राम राम राम रटूँ राम राम राम,
राम राम राम रटूँ राम राम राम ।
राम राम नाम मति[3], राम राम नाम गति[4],
राम राम नाम मति, राम राम नाम गति,
राम राम राम भजूँ राम राम राम,
राम राम राम भजूँ राम राम राम ।

1. संपन्नता, समृद्धि, सफलता, उन्नति, सिद्धि ; 2. पूर्णता, पूर्ण ज्ञान, अलौकिक शक्तियाँ, सफलता ; 3. बुद्धि, अक़्ल ; 4. एकमात्र सहारा, सद्‌गति, हालत, दशा, जाना, गमन ।

(22.08.2012)
सिडनी

101. हे रघुनंदन सबदु:खभंजन.......

हे रघुनंदन[1] सबदु:खभंजन[2] असुरनिकंदन[3] जय सियाराम,
हे करुणाकर[4] सब जगआगर[5] प्रेमसुधाकर[6] जय सियाराम ।

हे जग स्वामी अन्तर्यामी[7] शुभ सतनामी जय सियाराम,
हे उन्नायक सबसुखदायक मोक्षप्रदायक जय सियाराम ।

हे शुभकरता सबहित भरता[8] पोषणकरता जय सियाराम,
हे जगकारक कष्टनिवारक सबके तारक[9] जय सियाराम ।

हे लोकेश्वर देव देवेश्वर जय जगदीश्वर जय सियाराम,
हे परमेश्वर[10] पूर्ण परात्पर[11] जय वैश्वानर[12] जय सियाराम ।

1. रघु कुल को आनंद देने वाले ; श्री रामचन्द्र ; 2. सब दुखों को दूर करने वाले ; 3. दुष्टों का नाश करने वाले ; 4. दया करने वाले ; 4. जिनमें सारा संसार समाया है ; 6. प्रेम और अमृत स्वरूप ; 7. मन में स्थित, ईश्वर ; 8. सबकी इच्छा पूरी करने वाले ; 9. मुक्ति देने वाले ; 10. सगुण ब्रह्म जो संपूर्ण सृष्टि का रचयिता एवं संचालक ; 11. सर्वोपरि, सर्वश्रेष्ठ ; 12. परमात्मा ।

(28.08.2012)
सिडनी

102. दिन गुज़रता नहीं तू बता क्या.......

दिन गुज़रता नहीं तू बता क्या करूँ,
कुछ सँवरता नहीं तू बता क्या करूँ ।
नीले नभ में मचलती घटा भी वही,
चाँद तारों से सजती छटा भी वही ।
है वही तो गुलिस्ताँ वही फूल हैं,
भर के ख़ुशबू है चलती हवा भी वही ।
दिल निखरता नहीं तू बता क्या करूँ,
दिन गुज़रता नहीं तू बता क्या करूँ ।
कल्पनाओं के पर कुछ कतर से गए,
मेरी स्मृति पटल कुछ बदल से गए ।
ना धुंधलका है ना ही कोई शून्य है,
सुख न जाने कहाँ को फिसल से गए ।
दिल मचलता नहीं तू बता क्या करूँ,
दिन गुज़रता नहीं तू बता क्या करूँ ।
अब निराशा न कोई न कुछ आस है,
अब न कोई जलन ना कोई प्यास है ।
है सभी फिर भी जाने न लगता है ये,
कि कोई भी न मेरा न कुछ पास है ।
कुछ बदलता नहीं तू बता क्या करूँ,
दिन गुज़रता नहीं तू बता क्या करूँ ।

(29.08.2012)
सिडनी

103. थोड़ा थम तो सही, थोड़ा.......

थोड़ा थम तो सही, थोड़ा थम तो सही,
थोड़ा थम तो सही, थोड़ा थम तो सही ।

फिर से सूरज नया जगमगाने को है,
फिर से बादे सबा मुस्कराने को है ।
फिर से खिलने को देखो है सारा चमन,
फिर से सोई कली जाग जाने को है ।
थोड़ा थम तो सही, थोड़ा थम तो सही,
थोड़ा थम तो सही, थोड़ा थम तो सही ।

फिर से आ के उड़ेंगी यहाँ तितलियाँ,
फिर से भँवरों का गुंजन भी होगा यहाँ ।
फिर से गाएगी सुर में कोई कोकिला,
फिर से चिड़ियों का कलरव भी होगा यहाँ ।
थोड़ा थम तो सही, थोड़ा थम तो सही,
थोड़ा थम तो सही, थोड़ा थम तो सही ।

फिर से पेड़ों की डाली भी हँस जाएगी,
फिर से पत्तों पे शबनम नज़र आएगी ।
फिर से जगने लगेंगे सभी रास्ते,
फिर से जीवन में मस्ती सी छा जाएगी ।
थोड़ा थम तो सही, थोड़ा थम तो सही,
थोड़ा थम तो सही, थोड़ा थम तो सही ।

(31.08.2012)
सिडनी

104. दिल की धड़कती सदा कह.......

दिल की धड़कती सदा कह रही है,
नयनों में सजती हया कह रही है ।
तुमने कहा उसका एतबार कर लें,
बाँहों में भरकर तुम्हें प्यार कर लें ।

यही कह रहे मेरे सपने रंगीले,
यही कह रहे मेरे नयना सजीले ।
चेहरे की रंगत यही कह रही है,
यही कह रहे मेरे स्वर हो सुरीले ।
मेरे अंग की हर अदा कह रही है,
मुझी को सुनाती वफ़ा कह रही है ।
तुमने कहा उसको स्वीकार कर लें,
बाँहों में भरकर तुम्हें प्यार कर लें ।

हम भी सजा लें कानों में झुमके,
हम भी सजा लें बालों में गजरा ।
अधरों पे लाली हम भी लगा लें,
हम भी सजा लें आखों में कजरा ।
बालों की बिखरी घटा कह रही है,
चूड़ी खनकती सता कह रही है ।
हम भी तो सोलह श्रृंगार कर लें,
बाँहों में भरकर तुम्हें प्यार कर लें ।

तेरे संग में हम मगन हो के झूमें,
तेरे संग में हम गगन जा के चूमें ।
उड़ते फिरें बादलों की तरह हम,
तेरे संग में हम पवन जैसे घूमें ।

आँचल से लिपटी हवा कह रही है,
खुशबू से भरती फिज़ा कह रही है ।
तेरे संग जीने का इक़रार कर लें,
बाँहों में भरकर तुम्हें प्यार कर लें ।

(03.09.2012)
सिडनी

105. उत्तर में नगपति से लेकर.......

उत्तर में नगपति[1] से लेकर,
तुम प्रहरी हो दक्षिण तक के ।
पूरब से पश्चिम तक लेकर,
तुम प्रहरी हो भारत भर के ।

ओ तेरी शक्ति–ओ–शान नमन,
ओ तेरी ही पहचान नमन ।
ओ भारत की सन्तान नमन,
ओ सैनिक वीर जवान नमन ।

चलते हो जब क़दमों को मिला,
धरती में कम्पन भरता है ।
जब तुम गाते हो एक स्वर में,
आकाश भी सुर से सजता है ।

छा जाती हर दिल में मस्ती,
ओ तेरी कीर्ति–ओ–मान नमन ।
ओ भारत की सन्तान नमन,
ओ भारत वीर जवान नमन ।

जब जब संकट में देश घिरा,
तुम दुश्मन पर बनते तूफ़ाँ ।
एकएक तब दसदस को मारे,
तुम लड़ते–लड़ते हो कुर्बां ।

तुम हँसते मिलते मृत्यु गले,
ओ वीर तेरा बलिदान नमन ।
ओ भारत की सन्तान नमन,
ओ सैनिक वीर जवान नमन ।

तुम माँ के दूध की लाज रखो,
तुम वचन निभाते राखी का ।
तुम कुल का सर ऊँचा रखते,
तुम गर्व हो सबकी छाती का ।

ओ कुल के कुल भूषण तुम,
ओ तेरी महता मान नमन ।
ओ भारत की सन्तान नमन,
ओ सैनिक वीर जवान नमन ।

1. हिमालय ।

(08.09.2012)
सिडनी

106. ओ नन्हें-मुन्ने भारत के.......

ओ नन्हे-मुन्ने भारत के,
तुम नव भारत निर्माता हो ।
तुम ही तो हो कल के भारत,
तुम भारत भाग्य विधाता हो ।

कौन सा पथ श्रेयस्कर[1] है,
और किस ओर तुम्हें जाना ।
आनी हैं कौन सी बाधाएँ,
और कैसे उनको सुलझाना ।

पूरा हो अपना दूजा हित,
तुम ही सबके संज्ञाता[2] हो ।
तुम ही तो हो कल के भारत,
तुम भारत भाग्य विधाता हो ।

अन्याय, गरीबी, बेकारी,
अब तक भी कहाँ मिटने पायीं ।
ये शोषण और ये लाचारी,
अब तक भी कहाँ घटने पायीं ।

हैं शेष हैं दु:ख सारे अब भी,
तुम ही सबके संत्राता[3] हो ।
तुम ही तो हो कल का भारत,
तुम भारत भाग्य विधाता हो ।

समता, शिक्षा और सच्चाई,
हर ओर जहाँ पर पलती हो ।
नेह, प्यार ओर अच्छाई,
हर ओर जहाँ पर खिलती हो ।

यह देश प्रगति की ओर बढ़े,
तुम ही इसके संधाता[4] हो ।
तुम ही तो हो कल के भारत,
तुम भारत भाग्य विधाता हो ।

1. प्रशंसनीय, मान्य, अच्छा, सराहनीय ; 2. जानकार, जानने वाला, अवगत ; 3. जीवन रक्षक, संकटमोचक, आमोचक ; 4. निशाना बैठाने वाला, मिलाने वाला, संधि कराने वाला ।

(14.09.2012)
सिडनी

107. पूरब से ले पश्चिम तट तक.......

पूरब से ले पश्चिम तट तक,
सारे भारत के प्रांगण[1] से ।
उत्तर से ले दक्षिण तट तक,
सारे भारत के जन-जन से ।
सागर से यही उठता है स्वर,
अंबर से यही उठता हरदम ।
पदनाम स्वरूप अनेक हैं हम,
पर एक ही थे और एक हैं हम ।

देता है हिमालय हमको ही,
अपनी गरिमामय ऊँचाई ।
देता है सागर हमको ही,
अपने जैसी ही गहराई ।
विन्ध्याचल जैसा वक्षस्थल,
शक्ति भरे पुरजोश[2] हैं हम ।
पदनाम स्वरूप अनेक हैं हम,
पर एक ही थे और एक हैं हम ।

यदि हम एक स्वर में गा दें तो,
बादल से गरजने लगते हैं ।
यदि हम मस्ती में आ जाएँ,
तूफ़ान उमड़ने लगते हैं ।
यदि हम बोलें सुनता है जहाँ,
चुपचाप अभी खामोश हैं हम ।
पदनाम स्वरूप अनेक हैं हम,
पर एक ही थे और एक हैं हम ।

हम स्वेद[3] सजाते तन पर और,
खेतों को ले हरियाली से ।
हम स्वप्न सजाते सब मिलकर,
होली, पोंगल, दीवाली से ।

हम हैं फूलों की खुशबू से,
एक ओर नहीं हर ओर हैं हम ।
पदनाम स्वरूप अनेक हैं हम,
पर एक ही थे और एक हैं हम ।

1. आँगन ; 2. जोश से भरा हुआ, जोशपूर्ण ; 3. पसीना ।

(15.09.2012)
सिडनी

108. सारी दुनियाँ से न्यारा है सुंदर भारत......

सारी दुनियाँ से न्यारा है सुंदर भारत देश मेरा,
सारी दुनियाँ से प्यारा है सुंदर भारत देश मेरा ।

पश्चिम में पंजाब सजाता,
पूरब में यह अरुणाचल ।
उत्तर में अद्रीष[1] सजाता,
मध्य सजाए विन्ध्याचल ।
दक्षिण में लहराता सागर, नीला रंग हर ओर सजा,
सारी दुनियाँ से प्यारा है सुंदर भारत देश मेरा ।

इसकी नदियों में बहता है,
अमृत जैसा जीवन जल ।
इसके खेतों में भर जातीं,
मौसम में हर बार फ़सल ।
वर्षा ऋतु में बरसे आकर काली-ओ-घनघोर घटा,
सारी दुनियाँ से प्यारा है सुंदर भारत देश मेरा ।

कई तरह की माटी इसकी,
कई तरह से वृक्ष-ओ-फल ।
सारे पशु इसके मस्ती में,
मस्ती में सारे खगदल ।
पूरब-ओ-पश्चिम चलतीं, इसके भू पर सदा हवा,
सारी दुनियाँ से प्यारा है सुंदर भारत देश मेरा ।

1. हिमालय ।

(18.09.2012)
सिडनी

109. हम भारत के नवयुवक.......

हम भारत के नवयुवक हैं, हमें आगे-आगे बढ़ना है,
हमें देश लिए ही जीना है, हमें देश लिए ही मरना है ।

हम पीछे मुड़कर क्या देखें,
हमको तो आगे जाना है ।
अपनी मंज़िल है दूर अभी,
हमको तो उसको पाना है ।
राहों में कैसी भी मुश्किल, हमें हँसते पार गुजरना है,
हमें देश लिए ही जीना है, हमें देश लिए ही मरना है ।

जात-पात और भेदभाव,
सब पीछे किए किनारे हैं ।
सुख, समृद्धि और समता ही,
अब तो आदर्श हमारे हैं ।
हमको तो अपने भारत का, सर और भी ऊँचा करना है,
हमें देश लिए ही जीना है, हमें देश लिए ही मरना है ।

हममे हिम्मत और ताकत है,
हम ऐसा कुछ कर जाएँगे ।
हमें सारी दुनियाँ मानेगी,
हम हर दिल पर छा जाएँगे ।
हम तो मस्ती में रहते हैं, हमको किससे क्या डरना है,
हमें देश लिए ही जीना है, हमें देश लिए ही मरना है ।

(19.09.2012)
सिडनी

110. ओ रे जग के देवता, दे दयालु वर.......

ओ रे जग के देवता, दे दयालु वर हमें,
तू हमें सुखी बना, तू बना सबल हमें ।

तू ही सबका ईश है,
तू ही तो महान है ।
है तेरी ही ये ज़मीन,
तेरा आसमान है ।
कौन है तेरे सिवा, तू बना निडर हमें,
तू हमें सुखी बना, तू बना सबल हमें ।

सब का साथ दे सकें,
सब के काम आ सकें ।
दु:ख-ओ-दर्द में सदा,
साथ हम निभा सकें ।
नेक राह पर चला, तू बना सजग हमें,
तू हमें सुखी बना, तू बना सबल हमें ।

निज का कोई अर्थ हो,
निज का कोई मान हो ।
कुछ तो ऐसा कर चलें,
सारे जग में नाम हो ।
हो रहे तेरी कृपा, तू बना सफल हमें,
तू हमें सुखी बना, तू बना सबल हमें ।

(22.09.2012)
सिडनी

111. मैं निकलता जा रहा हूँ मैं......

मैं निकलता जा रहा हूँ, मैं समय हूँ,
एक धुन में गा रहा हूँ मैं समय हूँ ।

सूक्ष्म का संसार मुझमें ही बसा है,
दीर्घ का विस्तार मुझमें ही बसा है ।
है बसा मुझमे ही यह ब्रह्माण्ड सारा,
सृष्टि का व्यापार मुझमें ही बसा है ।
कौन मैं, बतला रहा हूँ मैं समय हूँ,
एक धुन में गा रहा हूँ मैं समय हूँ ।

मेरे बनने की कहानी कौन जाने,
मेरे मिटने की कहानी कौन माने ।
होने की क्रमबद्धता में भान कर लो,
जान लोगे इस तरह जाने अजाने ।
कह रहा, जतला रहा हूँ मैं समय हूँ,
एक धुन में गा रहा हूँ मैं समय हूँ ।

है बसी मुझमे तुम्हारी भी कहानी,
एक जीवन मृत्यु की अद्‌भुत बयानी ।
मान लोगे तुम भी मेरा मोल जितना,
दे चलोगे तुम मुझे वैसी निशानी ।
मर्त्य हो, समझा रहा हूँ मैं समय हूँ,
एक धुन में गा रहा हूँ मैं समय हूँ ।

(27.09.2012)
सिडनी

112. कह रहा है रवि निकल जाग.......

कह रहा है रवि निकल, जाग चल जाग चल,
कह रहा है रवि निकल, जाग चल जाग चल ।

कली कली खिल गई,
वृक्ष झूमने लगे ।
भँवरे आ के बाग़ में,
फूल चूमने लगे ।
कह रहा पवन मचल, जाग चल जाग चल,
कह रहा है रवि निकल, जाग चल जाग चल ।

लहलहाते खेत में,
नाच रहा मोर है ।
नीले-नीले नभ उठा,
पंछियों का शोर है ।
कह रहा है नद विकल, जाग चल जाग चल,
कह रहा है रवि निकल, जाग चल जाग चल ।

देख तुझको देखते,
लंबे-लंबे रास्ते ।
आस से भरे हुए,
जो हैं तेरे वास्ते ।
कह रहा है जग सकल, जाग चल जाग चल,
कह रहा है रवि निकल, जाग चल जाग चल ।

(01.10.2012)
सिडनी

113. कोई देखे हमें और चाहे हमें.......

कोई देखे हमें और चाहे हमें,
एक यही तो तमन्ना यही ख़्वाब है ।
कोई सोचे हमें और सराहे हमें,
एक यही तो तमन्ना यही ख़्वाब है ।

मैं भी आँखों में सपना सा बनकर तिरूँ,
मैं भी दिल में बसूँ ले मधुर चाँदनी ।
मैं भी बन जाऊँ कोई मधुर गीत सा,
मैं भी पंचम की बन लूँ मधुर रागिनी ।
कोई सुर में भरे गुनगुनाए हमें,
एक यही तो तमन्ना यही ख़्वाब है ।
कोई सोचे हमें और सराहे हमें,
एक यही तो तमन्ना यही ख़्वाब है ।

कोई खुशबू भरे ले पवन सा चले,
कोई संग में चले रे नदी की तरह ।
जैसे कलरव भरे पंछी उड़ते गगन,
जैसे निर्झर से झर-झर की होती सदा ।
कोई छेड़े हमें और हँसाए हमें,
एक यही तो तमन्ना यही ख़्वाब है ।
कोई सोचे हमें और सराहे हमें,
एक यही तो तमन्ना यही ख़्वाब है ।

कोई उपवन के फूलों के जैसा खिले,
कोई बजता रहे बाँसुरी की तरह ।
कोई सरदी के सूरज के जैसा खिले,
जैसे सरवर में उठती तरंगें सदा ।

कोई सुनता रहे और सुनाए हमें,
एक यही तो तमन्ना यही ख़्वाब है ।
कोई सोचे हमें और सराहे हमें,
एक यही तो तमन्ना यही ख़्वाब है ।

(06.10.2012)
सिडनी

114. जब तेरा आधा जहाँ.......

जब तेरा आधा जहाँ भूख-भूख रोता है,
तू बता कैसे इतनी गहरी नींद सोता है ।

क्या कभी देखी नहीं उनकी वे धँसी आँखें,
क्या कभी रूखे हुए बालों को नहीं देखा ।
क्या कभी देखा नहीं उनके शुष्क ओठों को,
क्या कभी पिचके हुए गालों को नहीं देखा ।

क्या कभी देखा नहीं तूने बदनसीबों को,
जिनके चेहरे पे बस एक दर्द ही तो होता है ।

जहाँ से जाती है तपती ये धूप सर पर से,
जहाँ से सर से सारी काली रात जाती है ।
जहाँ लगते हैं थपेड़े बदन पर गरमी के,
जहाँ सरदी की मार सीधे आ सताती है ।

जहाँ न खिड़की है कोई न कोई दरवाज़ा,
वहाँ तो छत के बिना ही मकान होता है ।

हैं सदा से ही बदन मैले कुचैले कपड़े,
हैं जहाँ आ के पला करती हैं बीमारी भी ।
हैं जहाँ सूखे हुए तन हैं मन में घुन पलते,
हैं जहाँ आ के पला करती है लाचारी भी ।

है जहाँ ज़िन्दगी रोती-ओ-मौत हँसती है,
ज़िन्दगी मौत से बदतर गुमान होता है ।

(11.10.2012)
सिडनी

115. सुन ज़रा कोई गा रहा है......

सुन ज़रा जरा कोई गा रहा है,
सुन ज़रा जरा कोई गा रहा है ।

ज़िंदगी जैसे डगरिया,
रीतती जैसे गगरिया,
सुर में ले समझा रहा है,
सुन ज़रा जरा कोई गा रहा है ।

एक दिन जब जाएगा तू,
फिर न वापिस आएगा तू,
बोलों में बतला रहा है,
सुन ज़रा जरा कोई गा रहा है ।

तू भी रच रोचक कहानी,
छोड़ जा अपनी निशानी,
अपनी धुन दोहरा रहा है,
सुन ज़रा जरा कोई गा रहा है ।

(12.10.2012)
सिडनी

116. एक दिन यूँ ही बैठे–बैठे प्रश्न.......

एक दिन यूँ ही बैठे–बैठे प्रश्न उठा मेरे मन में,
सच में कौन अमर स्थिर है इस सारे त्रिभुवन में ।

सबसे स्थिर इस धरती पर निश्चित ही भूधर है,
एंड्स है यूराल कहीं पर नगपति विन्ध्याचल है,
और अनेक हैं ऊँचे पर्वत धरती के प्रांगण में,
सच में कौन अमर स्थिर है इस सारे त्रिभुवन में ।

पर पर्वत तो धरती माँ की परतों की सिकुड़न है,
परतें टकरा कर कोई ऊँचा होता पुनः क्षरण है,
पर्वत भी न अमर स्थिर है सच में तब तो जग में,
सच में कौन अमर स्थिर है इस सारे त्रिभुवन में ।

अपनी सुंदर पावन धरती पल भर को नहीं रुकती,
अपने अक्ष भी घूम रही है परिपथ पर भी चलती ।
धरती भी न अमर स्थिर सच में तब तो जग में,
सच में कौन अमर स्थिर है इस सारे त्रिभुवन में ।

अपने मंडल सूर्य अटल है पर क्या सच में अटल है,
गंगा के संग गतिमय वह भी कहने को निश्चल है,
सूरज भी न अमर स्थिर है सच में तब तो जग में,
सच में कौन अमर स्थिर है इस सारे त्रिभुवन में ।

क्या अपनी गंगा ही अस्थिर इसको ही मैं मानूँ,
पर सारी गंगाएँ भी बढ़तीं इसको भी मैं जानूँ,
गंगाएँ न अमर स्थिर है सच में तब तो जग में,
सच में कौन अमर स्थिर है इस सारे त्रिभुवन में ।

चौदह अर्बुद वर्षों पहले अपना ब्रह्माण्ड बना था,
उसके बाद ही अपनी गंगा सूरज भू चाँद खिला था,
कितने ही ब्रह्माण्ड न जाने संसृति के इस क्रम में,
सच में कौन अमर स्थिर है इस सारे त्रिभुवन में ।

जिसकी है उत्पत्ति जगत में उसका अन्त अटल है,
जन्म मरण उत्थान पतन का यह ही नियम सबल है,
कोई नहीं है ऐसी सत्ता जो कि न इस बंधन में,
सच में कौन अमर स्थिर है इस सारे त्रिभुवन में ।

(16.10.2012)
सिडनी

117. मेरे दिल के तारा फिर.......

मेरे दिल के तार फिर से आज झनझना उठे,
शब्द लय में ढल गये ओठ गुनगुना उठे,
कोई अपनी आरज़ू एक खुमार दे गया,
ज़िंदगी हसीन है ये एतबार दे गया ।

बदल गई है ये ज़मीन आसमाँ बदल गया,
लगे मुझे नया नया कि ये जहाँ बदल गया,
दृष्टि में मेरी वो आ नव श्रंगार दे गया,
ज़िंदगी हसीन है ये एतबार दे गया ।

चाहता था जो खिले खिल गई वही कली,
ढूँढ़ता था जो मिले मिल गई वही गली,
आखों-आखों से ही वो थोड़ा प्यार दे गया,
ज़िंदगी हसीन है ये एतबार दे गया ।

साफ़ सुन रहा हूँ मैं पंछियों की भी सदा,
मेरे कान गूँजती बह रही है जो हवा,
मीठा-मीठा दर्द कोई इंतजार दे गया,
ज़िंदगी हसीन है ये एतबार दे गया ।

(18.10.2012)
सिडनी

118. शुभ करने को हर पल शुभ.......

शुभ करने को हर पल शुभ है,
जब तुम चाहो शुभ कर लो ।
शुभ ईश्वर वरदान है जानो,
इसको सर माथे धर लो ।

शुभ ही तो बस एक सुरभि है,
सब मन जीवन महका दे ।
भर दे अप्रितम[1] राग नया एक,
सब जग जीवन चहका दे ।
शुभ के पंखों को धरकर तुम,
नील गगन ऊँचे उड़ लो ।
शुभ ईश्वर वरदान है जानो,
इसको सर माथे धर लो ।

अविरल गति से काल का पंछी,
उड़ता ही उड़ता जाता है ।
हम सब जाने हम सब माने,
नीड़ न फिर वापिस आता है ।
अपने फल हमको ही चखने,
हँस लो चाहे तुम डर लो ।
शुभ ईश्वर वरदान है जानो,
इसको सर माथे धर लो ।

पल-पल सोचो क्या करना है,
देखो क्या उद्देश्य हमारा ।
मत देखो तुम गहरे तम को,
उजली किरन का ले लो सहारा ।

शुभता ही जीवन अमृत है,
जितना चाहो तुम भर लो ।
शुभ ईश्वर वरदान है जानो,
इसको सर माथे धर लो ।

1. अनुपम, बेजोड़ ।

(20.10.2012)
सिडनी

119. हम आए प्रभु शरण तुम्हारी......

हम आए प्रभु शरण तुम्हारी,
ओ ब्रजमोहन कृष्ण मुरारी ।

तुम ही मातृ–पिता दोनों हो,
तुम ही भातृ–सखा दोनों हो ।
तुम ही हो सच्ची नातेदारी,
ओ ब्रजमोहन कृष्ण मुरारी ।
हम आए प्रभु शरण तुम्हारी,
ओ ब्रजमोहन कृष्ण मुरारी ।

तूने ही तो परमाणु बनाया,
तूने ही तो ब्रह्माण्ड रचाया ।
तेरी ही तो लीला न्यारी,
ओ ब्रजमोहन कृष्ण मुरारी ।
हम आए प्रभु शरण तुम्हारी,
ओ ब्रजमोहन कृष्ण मुरारी ।

रूठे सभी ये घरबार भी रूठे,
रूठे सभी ये संसार भी रूठे ।
रूठ न जाना ओ गिरिधारी,
ओ ब्रजमोहन कृष्ण मुरारी ।
हम आए प्रभु शरण तुम्हारी,
ओ ब्रजमोहन कृष्ण मुरारी ।

(20.10.2012)
सिडनी

120. हर ओर अमन चैन है कहते.......

हर ओर अमन चैन है कहते हैं नाज़ से,
पर कौन मुतमुईन[1] है उनके जवाब से ।

जानेंगे कैसे असलियत कि कैसा कौन है,
चेहरे जहाँ ढकें हुए हों सब नक़ाब से ।

दहशत ही देखनी है तो आओ मेरे शहर,
डरने लगोगे आप ही अपनी आवाज़ से ।

यहाँ दर्द औ दुश्वारियाँ का दीन नाम है,
कटती है आधी भूख औ आधी नवाज़ से ।

कब रुकेगा जाने आखिर ये सिलसिला,
आँखों में अश्क लोग यूँ खानाख़राब[2] से ।

1. संतुष्ट ; 2. बर्बाद, बेघरबार ।

(22.10.2012)

सिडनी

121. मेरे जीवन में बस जाओ.......

मेरे जीवन में बस जाओ,
मेरे जीवन में मुस्काओ ।

पास न मेरे जब तुम होते,
बस तुमको ही सोचा करता ।
जब देखूँ तुमको तो मैं फिर,
बस तुमको ही देखा करता ।
अपने आँचल को फैलाओ,
मेरे जीवन में मुस्काओ ।

हो भोर कोई उजयारी सी,
हो कोई जैसे कमल खिले ।
सावन में चली हो पुरवाई,
हो इन्द्रधनुष आकाश सजे ।
मेरे मन को आ भरमाओ,
मेरे जीवन में मुस्काओ ।

तुम मेरा जीवन अर्थ बनो,
बन जाओ सुंदर सा सपना ।
तुम मेरा जीवन सत्य बनो ,
बन जाओ मेरे सा अपना ।
तुम बस मेरे ही कहलाओ,
मेरे जीवन में मुस्काओ ।

(23.10.2012)
सिडनी

122. धिन-तिन-निन-निन.......

धिन-तिन-निन-निन
धिन-तिन-निन-निन ।

आ-रे-आ-रे अब जोश में आ,
आ ताल से थोड़ी ताल मिला ।
मस्ती में थोडा झूम ज़रा ,
यूँ ही बीते जाते पल-छिन ।

धिन-तिन-निन-निन
धिन-तिन-निन-निन ।

अब दिल को ज़रा खिल जाने दे,
ओठों को ज़रा मुस्काने दे ।
किसी गीत को खुद ही गाने दे,
बड़ी देर में आया है शुभ दिन ।

धिन-तिन-निन-निन
धिन-तिन-निन-निन ।

अब आ के रवानी जतला तू,
अब भी है जवानी बतला तू ।
अभी लोच है तन में जतला तू,
पैरों में बसी तेरे थिरकन ।

धिन-तिन-निन-निन
धिन-तिन-निन-निन ।

नयनों में नयना डाल ज़रा,
फिर पूछ ले दिल का हाल ज़रा ।
फिर कर दे कोई कमाल ज़रा,
तू बढ़ने दे दिल की धड़कन ।

धिन-तिन-निन-निन
धिन-तिन-निन-निन ।

(24.10.2012)
सिडनी

123. यह दर्द मैंने तो खुद ही लिया.......

यह दर्द मैंने तो खुद ही लिया है,
तुमने तो मुझसे कहा भी नहीं ।
जो भी किया है वो मैंने किया है,
तुमको तो इसका पता भी नहीं ।

तस्वीर तेरी दिल में लिए ही,
हम तो सदा मुस्कराते रहे ।
खुशबू लिए साथ तेरी सदा ही,
हम तो सदा गुनगुनाते रहे ।

जो भी हुआ है ये जैसा हुआ है,
इसमें तो कुछ भी बुरा भी नहीं ।
जो भी किया है वो मैंने किया है,
तुमको तो इसका पता भी नहीं ।

हम तो सदा ही तुम्हें साथ लेकर,
सपने सुनहरे सजाया किए ।
जागा किए देर तक हम हमेशा,
तुमको भी संग में जगाया किए ।

जो भी किया है ये जैसा किया है,
मुझको तो इसका गिला भी नहीं ।
जो भी किया है वो मैंने किया है,
तुमको तो इसका पता भी नहीं ।

सोचा सदा के लिए साथ हो और,
तेरे प्यार के रंग में सब रंगे ।
हाथों में मेरे तेरा हाथ हो और,
तेरे साथ ही मेरा जीवन सजे ।

जो भी खता है वो मेरी ख़ता है,
तेरी तो इसमें ख़ता भी नहीं ।
जो भी किया है वो मैंने किया है,
तुमको तो इसका पता भी नहीं ।

(29.10.2012)
सिडनी

124. ओ जान से ज्यादा प्यारे......

ओ जान से ज्यादा प्यारे वतन, ओ मेरे प्यारे न्यारे वतन,
तेरा नाम लगे मुझे खुशबू सा, तेरा नाम लगे जैसे चन्दन ।

उत्तर में हिमगिरि शुभ्र सजा,
दक्षिण नीला सागर पदतल ।
ले कितने ही वन और उपवन,
मध्य सजाता विन्ध्याचल ।
अनगित तेरी नदियाँ निर्झर, कावेरी, कृष्णा, गंग, जमन,
तेरा नाम लगे मुझे खुशबू सा, तेरा नाम लगे जैसे चन्दन ।

पग-पग पर पीठ शिवाले मठ,
मन्दिर मस्जिद और गुरुद्वारे।
पग-पग पर गाँव शहर बसते,
गलियाँ, बस्ती, घर, चौबारे ।
मथुरा, काशी, अजमेर कहीं, अमृतसर, साँची, वृन्दावन,
तेरा नाम लगे मुझे खुशबू सा, तेरा नाम लगे जैसे चन्दन ।

अतुलित ताकत तेरी माटी में,
हर ऋतु में फ़सलें लहलातीं ।
सब ऋतुएँ शरद, शिशिर, गर्मी,
वर्षा रिमझिम जल बरसाती ।
मैं तुझमें ही हो जाऊँ फ़ना, मैं तुझ पर ही लूँ फिर से जनम,
तेरा नाम लगे मुझे खुशबू सा, तेरा नाम लगे जैसे चन्दन ।

(01.11.2012)
सिडनी

125. ऐ जाने चमन ऐ जाने जाने चमन.......

ऐ जाने चमन ऐ जाने चमन, ऐ जाने चमन ऐ जाने चमन,
तेरा नाम लगे मुझे मधु जैसा, तेरा नाम लगे जैसे शबनम ।

जुल्फ़ों में बसी सावन की घटा,
आँचल से चले लहराती हवा ।
हँसती हो खनकती होती सदा,
हर एक अदा है अनोखी अदा ।
हर साँस में बसती है खुशबू, है तेरा बदन जैसे चंदन,
तेरा नाम लगे मुझे मधु जैसा, तेरा नाम लगे जैसे शबनम ।

अब मेरी हर एक सोच में तू,
अब मेरे हर एक ख़्वाब में तू ।
अब मेरे हर एक राग में तू,
अब मेरी हर एक बात में तू ।
तू ही तो मेरी रूह में बसी, तू ही तो है दिल की धड़कन,
तेरा नाम लगे मुझे मधु जैसा, तेरा नाम लगे जैसे शबनम ।

तू मुझको अपना मान समझ,
तु मुझको अपनी जान समझ ।
मैं तुझ पर हूँ कुर्बान समझ,
तू मेरी है पहचान समझ ।
तू मुझको समझ ले दीवाना, तू मुझको समझ ले रे हमदम,
तेरा नाम लगे मुझे मधु जैसा, तेरा नाम लगे जैसे शबनम ।

तू भर ले मुझको निगाहों में,
तू भर ले मुझको सदाओं में ।
तू भर ले मुझको फज़ाओं में,
तू ले ले मुझको पनाहों में ।

तू भर ले मुझको जैसे सुर, तू भर ले मुझको हो सरगम,
तेरा नाम लगे मुझे मधु जैसा, तेरा नाम लगे जैसे शबनम ।

(02.11.2012)
सिडनी

126. धर रहे हो जो क़दम तुम.......

धर रहे हो जो क़दम तुम वह ही मैं भी धर रही हूँ,
साथ हूँ हर पल तुम्हारें संगिनी बन चल रही हूँ ।

देवों ने मिलकर दिया जो तुमको वह वरदान मानूँ,
इस जगत में तुम मेरे हो तुमको ही अपना मैं जानूँ,
मैं तुम्हें ही रात दिन प्रिय जोगिनी बन जप रही हूँ ।
साथ हूँ हर पल तुम्हारें संगिनी बन चल रही हूँ ।

क्या हुआ यदि छा रहा है फिर से आकर यह अँधेरा,
हर दिशा में तम ही तम है जब तलक आता सवेरा,
मैं तुम्हारे हर तिमिर में चाँदनी बन खिल रही हूँ,
साथ हूँ हर पल तुम्हारें संगिनी बन चल रही हूँ ।

यूँ न बैठो अनमने से आज फिर से हार थककर,
गा रहो एक गीत कोई फिर मधुर सा राग भरकर,
मैं तुम्हारे ही तो सुर में रागिनी बन सज रही हूँ ,
साथ हूँ हर पल तुम्हारें संगिनी बन चल रही हूँ ।

(06.11.2012)
सिडनी

127. भगवान शिव से मुख सजा.......

भगवान शिव से मुख सजा, केश यम के तेज से,
दोनों भौंहें संध्याओं से, नयन अग्नि के तेज से ।
नासिका भरते कुबेर और, कान वायु के तेज से,
दन्त देते प्रजापति और, ओठ अरुण कार्तिकेय से ।

विष्णु तेज से हैं भुजाएँ, अँगुलियाँ वसुओं तेज से,
चंद्रमा स्तन भरे और, कटि है इंद्र के तेज से ।
जाँघ पिंडली वरुण देते, नितंभ पृथ्वी के तेज से,
ब्रह्मा तेज से हैं चरण, अँगुलियाँ सूर्य तेज से ।

हिमवान[1] के सज सिंह और, विष्णु के सज चक्र से,
काल के ढाल और कृपाण, इंद्र घंटा वज्र से ।
ब्रह्मा कमण्डल से सजी, वरुण पाश[2], सृक[3], शंख से,
त्वष्टा[4] गदा और ले कवच, यमराज के कालदंड से ।

अग्निदेव की शक्ति से, पवन तीर और धनुष से,
सूर्य किरणों को भरे और, विश्वकर्मा परशु से ।
प्रजापति रूद्राक्ष से और, जलधि के सज कमल से,
कुबेर के सुरापात्र और, क्षीर[5] कुंडल, वस्त्र से ।

1. हिमालय ; 2. रस्सा ; 3. भाला, बाण ; 4. वैदिक देवता, विश्वकर्मा, ग्यारहवें आदित्य जो आँखों के अधिष्ठाता देव माने जाते हैं ; 5. क्षीरसागर ।

(06.11.2012)
सिडनी

128. काल की हर एक घड़ी को......

काल की हर एक घड़ी को, सूक्ष्मता से आँकना,
विश्व चाहे सो रहे पर, हमको हर पल जागना ।

मूल्य कुछ पल नींद का,
सदियाँ चुकाया है कभी ।
जो चुकाया कुछ पलों में,
फिर न पाया है कभी ।
कालगति फिर से न लौटे कर लें कितनी याचना,
विश्व चाहे सो रहे पर, हमको हर पल जागना ।

जागते हैं वे ही जाने,
यह जगत व्यापार क्या ।
कार्य कारण श्रृंखला क्या,
कैसे क्यों संसार क्या ।
सत्य और सौन्दर्य क्या क्या शिवम की भावना,
विश्व चाहे सो रहे पर, हमको हर पल जागना ।

किस जगह पर हम खड़े हैं,
आओ इसको जान लें ।
कौन सी मंज़िल है अपनी,
आओ सब पहचान लें ।
चल पड़ें हम साथ में सब ले विजय की कामना,
विश्व चाहे सो रहे पर, हमको हर पल जागना ।

(08.11.2012)
सिडनी

129. प्यार तुमसे ही करते हैं हम.......

प्यार तुमसे ही करते हैं हम तो बहुत क्या कहें,
यार तुम पे ही मरते हैं हम तो बहुत क्या कहें ।

देख लो देख लो इन अदाओं को तुम,
देख लो देख लो इन इशारों को तुम ।
देख लो क्या कहें ये मेरी चूड़ियाँ,
देख लो देख लो इन नज़ारों को तुम ।
आहें तुम पे ही भरते है हम तो बहुत क्या कहें,
प्यार तुमसे ही करते हैं हम तो बहुत क्या कहें ।

जान लो जान लो मेरी आँखों से तुम,
जान लो जान लो मेरी साँसों से तुम ।
जान लो क्या कहे मेरे दिल की सदा,
जान लो जान लो मेरी बातों से तुम ।
याद तुमको ही करते हैं हम तो बहुत क्या कहें,
प्यार तुमसे ही करते हैं हम तो बहुत क्या कहें ।

झूम लो झूम लो मेरी सासों से तुम,
झूम लो झूम लो मेरी बातों से तुम ।
झूम लो साथ मेरे भी संग में ज़रा,
झूम लो झूम लो मेरी बाहों में तुम ।
नाज़ तुम पे ही करते हैं हम तो बहुत क्या कहें,
प्यार तुमसे ही करते हैं हम तो बहुत क्या कहें ।

(11.11.2012)
सिडनी

130. मैने सपने सुनहरे सजा ही.......

मैंने सपने सुनहरे सजा ही लिए,
मैने आशा के दीपक जला ही लिए ।
जब से मैंने सुनी है सुरीली सदा,
जिसमे तूने मुझे सिर्फ अपना कहा ।

मेरे मन में बसी आ के फिर से सहर,
फिर से खिलने लगे हैं हजारों कमल ।
मेरे मन गुनगुनाते अनेकों भ्रमर,
मेरे मन के जलाशय में उठतीं लहर ।
मेरे मन के बग़ीचे में सबरंग भरे,
फिर से बहने लगी है सुहानी हवा ।
जब से मैंने सुनी है सुरीली सदा,
जिसमे तूने मुझे सिर्फ अपना कहा ।

मेरे चेहरे की रंगत गई है बदल,
अब फुर्ती भरे मेरे पग हैं सचल ।
मेरे ओठों मचलतीं हैं मीठी ग़ज़ल,
होती रह रह के आँखें मेरी सजल ।
झूमने मैं लगूँ चाहे कोई हो लय,
मेरे सारे बदन में ही कम्पन भरा ।
जब से मैनें सुनी है सुरीली सदा,
जिसमे तूने मुझे सिर्फ अपना कहा ।

जी ये चाहे कि मेरे भी लग जाएँ पर,
मैं भी उड़ के छुऊँ जा के पर्वत शिखर ।
मैं भी नापूँ कि कैसा है नीला ये नभ,
मैं भी जाऊँ जहाँ तक कि जाती नज़र ।

मैं भी सावन की बदली सा घूमूँ फिरूँ,
मैं भी फूलों की खुशबू सा हो लूँ ज़रा ।
जब से मैंने सुनी है सुरीली सदा,
जिसमे तूने मुझे सिर्फ अपना कहा ।

(12.11.2012)
सिडनी

131. है अभी तो देर होने में.......

है अभी तो देर होने में सवेरा,
दीप जलने दो अभी तो है अँधेरा ।

क्षितिज की अरुणाई में अभी देर थोड़ी,
पहर की तरुणाई में अभी देर थोड़ी ।
है अभी तो देर जागें जब दिशाएँ,
धरती की अँगड़ाई में अभी देर थोड़ी ।

टिमटिमाते कुछ सितारे हैं गगन में,
चहुँदिशा छाया है अब भी तम घनेरा ।

कुछ अभी भी देर गाने में पिकी के,
कुछ अभी भी देर गाने में शुकी के ।
देर से थोड़ी अभी भँवरे की गुनगुन,
कुछ अभी भी देर खिलने में कली के ।

हैं अभी भी शांत वृक्षों पर विहग भी,
है अभी भी नीड़ ही उनका बसेरा ।

रात्रि है लम्बी ओ साथी तान छेड़ो,
आस औ विश्वास का कोई गान छेड़ो ।
ये पहर कट जाएगा कुछ ही पलों में,
नेह की बातें ज़रा अविराम छेड़ो ।

हैं अभी तो दृष्टि ओझल मार्ग सारे,
हर पथिक को है अभी तंद्रा ने घेरा ।

(17.11.2012)
सिडनी

132. ओ घन ओ घन ओ घन रे......

ओ घन ओ घन ओ घन रे, ओ घन आकर हरषा जा,
रिमझिम रिमझिम रिमझिम रे, रिमझिम पानी बरसा जा ।

लकझक लकझक लकझक रे, लकझक गोरी सज लेगी,
खनखन खनखन खनखन रे, खनखन चूड़ी बज लेगी ।
सरपट सरपट सरपट रे, सरपट देहरी चल देगी,
रुनझुन रुनझुन रुनझुन रे, रुनझुन पायल हँस देगी ।
झटपट झटपट झटपट रे, झटपट देहरी दरसा जा,
रिमझिम रिमझिम रिमझिम रे, रिमझिम पानी बरसा जा ।

सनसन सनसन सनसन रे, सनसन मारुत[1] बोलेगा,
झलमल झलमल झलमल रे, झलमल झुमका डोलेगा ।
सरसर सरसर सरसर रे, सरसर आँचल हो लेगा,
अपलक अपलक अपलक रे, अपलक नयना खोलेगा ।
धकधक धकधक धकधक रे, धकधक जियरा धड़का जा,
रिमझिम रिमझिम रिमझिम रे, रिमझिम पानी बरसा जा ।

कूहकूह कूहकूह कूहकूह रे, कूहकूह स्वर भी गाएगा,
पीहूपीहू पीहूपीहू पीहूपीहू रे, पीहूपीहू शुक दोहराएगा ।
टिपटिप टिपटिप टिपटिप रे, टिपटिप स्वर भी आएगा,
हरमन हरमन हरमन रे, हरमन फिर भरमाएगा ।
पलछिन पलछिन पलछिन रे, पलछिन आकर भरमा जा,
रिमझिम रिमझिम रिमझिम रे, रिमझिम पानी बरसा जा ।

1. हवा, पवन, समीर ।

(19.11.2012)
सिडनी

133. ओ मेरे साथी संग रहना.......

ओ मेरे साथी संग रहना जब तक तम[1] के इस पार मैं हूँ,
जब तक प्राणों में स्पंदन[2] जब तक जीवित संसार में हूँ ।

उस क्षण से मेरा भाग्योदय[3],
जिस क्षण से तुमको पाया है ।
हर पल की मुझे मधुर स्मृति[4],
जो तेरे साथ बिताया है ।
ओ मेरे साथी संग रहना जब तक जग के व्यापार में हूँ,
जब तक प्राणों में स्पंदन जब तक जीवित संसार में हूँ ।

हैं अपने तो कुछ ही सपने,
अपनी थोड़ी सी खुशियाँ हैं ।
हैं कुछ ही तो सम्बन्ध सजे,
अपनी छोटी सी दुनियाँ है ।
ओ मेरे साथी संग रहना जब तक मैं इस परिवार में हूँ,
जब तक प्राणों में स्पंदन जब तक जीवित संसार में हूँ ।

जन्म से लेकर मृत्यु तलक,
जीवन नदिया की धारा है ।
सुख दु:ख उठती गिरती लहरें,
आस और चाह किनारा है ।
ओ मेरे साथी संग रहना जब तक जीवन की धार में हूँ,
जब तक प्राणों में स्पंदन जब तक जीवित संसार में हूँ ।

1. अँधेरा, अंधकार ; 2. धड़कन, कंपन ; 3. तक़दीर का जागना ; 4. याद, स्मरण ।

(26.11.2012)
सिडनी

134. चित्त की वृतियाँ मनुज में......

चित्त[1] की वृतियाँ[2] मनुज[3] में, चित्त वृति का निरोध[4] है,
निज[5] स्वरूप[6] को जानना ही, जानो सच्चा योग है ।

पाँच वृतियाँ चित्त की जो चित्त में रहतीं सदा,
प्रमाण[7] विकल्प[8] विपर्यय[9] निद्रा[10] स्मृति[11] हैं यथा[12],

इनसे ही आनन्द मिलता इनसे मिलता क्लेश[13] है,
निजस्वरूप को जानना ही जानो सच्चा योग है ।

पाँच वृतियाँ चित्त में ओर पाँच बसते क्लेश भी,
अविद्या[14] अस्मिता[15] राग[16] द्वेष[17] और अभिनिवेश[18] भी,

दु:ख का जानो मूल कारण दृश्य[19] का संयोग है,
निजस्वरूप को जानना ही जानो सच्चा योग है ।

वितर्क[20] विचार[21] आनन्द अस्मिता निरोध सम्प्रज्ञात[22] है,
शेष सारे संस्कारों का निरोध ही असम्प्रज्ञात[23] है,

निर्बीज[24] समाधि ही मानव का जानो मोक्ष[25] है,
निजस्वरूप को जानना ही जानो सच्चा योग है।

यम[26] नियम[27] आसन[28] यहाँ प्राणायाम[29] प्रत्याहार[30] भी,
धारणा[31] और ध्यान[32] भी और साथ में है समाधि[33] भी,

अभ्यास[34] तप[35] वैराग्य[36] और प्रणव[37] उसका बोध[38] है,
निजस्वरूप को जानना ही जानो सच्चा योग है ।

1. अन्त:करण, चेतस:, मनस, चित्त की पाँच अवस्थाएँ होती हैं क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र, निरूद्ध ; 2. अवस्था, कार्य, प्रकार, स्थिति, प्रकृति ; 3. मनुष्य, मानव, आदमी ; 4. रोकना, अनुशासित, नियंत्रण ; 5. अपना, स्वयं, खुद ; 6. अपना आकार, अपनी विशेषता ; 7. सत्यता, सच्चाई, पूरा एवं सच्चा ज्ञान, प्रमाण के तीन भेद हैं प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम (1.7) ; 8. ज्ञान जो शब्द से उत्पन्न

होता है पर वस्तु नहीं होती (1.9) ; 9. मिथ्या ज्ञान अर्थात जिससे किसी वस्तु के यथार्थ रूप का ज्ञान न हो (1.8) ; 10. ज्ञेय विषयों के अभाव में ज्ञान का आलंबन (1.10) ; 11. अनुभव के आए विषयों को न भूलना (1.11) ; 12. जैसे ; 13. दु:ख, पीड़ा संताप ; 14. अनित्यत्व अपवित्र दु:ख, अनात्म में क्रमश: नित्यत्व, पवित्रता, सुख तथा आत्मभाव की बुद्धि का होना अविद्या है (2.5) ; 15. देखने वाली शक्ति तथा देखने का माध्यम चित्त शक्ति दोनों की एकात्मता अस्मिता है (2.6) ; 16. सुख भोगने पर उसे फिर से भोगने की इच्छा बनी रहती है यह राग है (2.7) ; 17. दु:ख भोगने पर उससे बचने की इच्छा द्वेष है (2.8) ; 18. स्वभाव से प्रवाहित होने वाला, सामान्य जीवों की भाँति ही विद्वानों को भी लपेट लेने वाला अभिनिवेष है, शरीर के बचाव की इच्छा (2. 9) ; 19. आँख से दिखायी पड़नेवाला ; 20. जब साधक किसी स्थूल विषय-विराट, महाभूत, देह या इन्द्रियों पर चित्त ठहराता है ; 21. जब साधक क्रम से पंच तन्त्रमात्राओं के स्वरूप से आगे अहंकार, महत्तत्व, प्रकृति को साक्षात् करता है ; 22. अच्छी तरह से जाना हुआ ; 23. अच्छी तरह से न जाना हुआ ; 24. बिना बीज के ; 25. अविद्या का अभाव, अविद्या के अभाव से संयोग का भी अभाव हो जाता है यही स्थिति है जिसे कैवल्य मुक्ति कहा जाता है (2. 25) ; 26. यम-(सामाजिक नैतिकता) पांच (2.30) हैं 1. अहिंसा-शब्दों से, विचारों से और कर्मों से किसी को हानि नहीं पहुँचाना 2. सत्य-विचारों में सत्यता, परम सत्य में स्थिर रहना 3. अस्तेय-चोर प्रवृति का न होना 4. ब्रह्मचर्य (चेतना को ब्रह्म के ज्ञान में स्थिर करना, सभी इन्द्रिय जनित सुखों में संयम बरतना) 5. अपरिग्रह-आवश्यकता से अधिक संचय नहीं करना और दूसरों की वस्तुओं की इच्छा नहीं करना ; 27. नियम-(व्यक्तिगत नैतिकता) पाँच (2.32) हैं 1. शौच-शरीर और मन की शुद्धि 2. संतोष- संतुष्ट और प्रसन्न रहना 3. तप-स्वयं से अनुशासित रहना 4. स्वाध्याय- आत्म चिंतन करना 5. ईश्वर प्राणिधान-ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण, पूर्ण श्रद्धा ; 28. योगासनों द्वारा शारीरिक नियन्त्रण (2.46) ; 29. श्वास लेने सम्बन्धी खास तकनीकों द्वारा प्राण पर नियन्त्रण (2. 49) ; 30. इन्द्रियों को अन्तर्मुखी करना (2.54) ; 31. स्थिर करना, पहनना, मन जहाँ धारण किया जाता है अर्थात इधर उधर नहीं डोलता है (3.1) ; 32. एकाग्रचित होना (3.2) ; 33. वह ध्यान ही समाधि कहलाता है जब उसमें केवल अर्थ (ध्येयमात्र) भासता है और उसका रूप शून्य सा हो जाता है (3.3) ; 34. उनमें स्थित रहने का यत्न (1.13) ; 35. स्वयं से अनुशासित रहना ; 36. जब पुरुष तथा प्रकृति की पृथकता का ज्ञान, उससे परे परम वैराग्य

जब तीनों गुणों के कार्य में भी तृष्णा नहीं रहती (1.16) ; 37. ॐ (1.27), अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष तथा अभिनिवेष यह पाँच क्लेश कर्म, शुभ तथा अशुभ फल, संस्कार आशय से परामर्श में न आने वाला, ऐसा परम पुरुष ईश्वर है (1.24) ; 38. ज्ञान, जानकारी ।

(27.11.2012)
सिडनी

135. तुम कहो कहाँ ओ यार......

तुम कहो कहाँ ओ यार मिलूँ,
तुम कहो कहाँ ओ प्यार मिलूँ ।
मैं मिलूँ जहाँ भी तुम चाहो,
तुम कहो कहाँ इस बार मिलूँ ।

मैं मिलूँ जहाँ पर शबनम हो,
मैं मिलूँ जहाँ पर पंचम[1] हो ।
हो बहता शीतल शांत पवन,
मैं मिलूँ जहाँ पर गुनगुन[2] हो ।

मैं मिलूँ जहाँ पर मधुर मौन,
तुम कहो जहाँ झंकार मिलूँ ।
मैं मिलूँ जहाँ भी तुम चाहो,
तुम कहो कहाँ इस बार मिलूँ ।

मैं मिलूँ जहाँ पर निर्झर[3] हो,
मैं मिलूँ जहाँ पर सरवर[4] हो ।
हो नदिया का एक कूल[5] कोई,
मैं मिलूँ जहाँ पर कलकल[6] हो ।

मैं मिलूँ जहाँ पर हो सागर,
तुम कहो जहाँ हो खार मिलूँ ।
मैं मिलूँ जहाँ भी तुम चाहो,
तुम कहो कहाँ इस बार मिलूँ ।

मैं मिलूँ जहाँ पर घनवन[7] हो ,
मैं मिलूँ जहाँ पर उपवन हो ।
हो गली मौहल्ला चौराहा,
मैं मिलूँ जहाँ पर आँगन हो ।

मैं मिलूँ जहाँ पर हो निर्जन[8],
तुम कहो जहाँ परिवार मिलूँ ।
मैं मिलूँ जहाँ भी तुम चाहो,
तुम कहो कहाँ इस बार मिलूँ

1. कोयल की आवाज़, सरगम का पाँचवाँ स्वर ; 2. भँवरे की आवाज़ ; 3. झरना ; 4. तालाब ; 5. किनारा ; 6. नदी के पानी बहने की आवाज़ ; 7. घना जंगल ; 8. एकांत ।

(29.11.2012)
सिडनी

136. जागो जागो गुड़िया रानी......

जागो जागो गुड़िया रानी,
आई फिर से भारे सुहानी ।

नभ[1] में छाई फिर अरूणाई,
कलियों ने ली फिर अँगड़ाई ।
बागों में फुदके फिर बुलबुल,
कोयल ने फिर तान सजाई ।

फिर से बहती हवा सुहानी,
जागो जागो गुड़िया रानी ।

कौवा आकर शोर मचाए,
पेड़ गिलहरी फिर चड़ जाए ।
रंग बिरंगी उड़ती तितली,
फूलों पर फिर आ मड़राए ।

और सुनो एक बात बतानी,
जागो जागो गुड़िया रानी ।

मोर ने फिर आवाज़ सुनाई,
मुर्गे ने भी बाँग लगाई ।
देखो एक खरगोश बुलाता,
आओ खेलें छुपन छुपाई ।

मैना कहती सुनो कहानी,
जागो जागो गुड़िया रानी ।

1. आसमान, गगन, आकाश ।

(03.12.2012)
सिडनी

137. आई फिर से रात सुहानी.......

आई फिर से रात सुहानी,
सोजा सोजा गुड़िया रानी ।

सोए अब तो फूल सभी तो,
सोईं सारी कलियाँ सोईं ।
सारे भँवरे सोये अब तो,
सोयीं सारी चिड़ियाँ सोईं ।

सोई अब गोलू की नानी,
सोजा सोजा गुड़िया रानी ।

जागेंगे चिमगादड़ अब तो,
अब तो जागें उल्लू सारे ।
नभ[1] में होंगे चंदा मामा,
साथ में होंगे सारे सितारे ।

जागेगी अब रात की रानी,
सोजा सोजा गुड़िया रानी ।

जागोगी जानो जब फिर से,
संग में सारा जग जागेगा ।
नभ में फिर सूरज आएगा,
फिर से सारा तम[2] भागेगा ।
अज की होगी बात पुरानी,
सोजा सोजा गुड़िया रानी ।

1. आसमान, आकाश, गगन ; 2. अंधेरा, अंधकार ।

(04.12.2012)
सिडनी

138. धीरे-धीरे मंद स्वर में......

धीरे-धीरे मंद स्वर में कोई गाए गा रहा है,
काल की कटु[1] सत्यता को यूँ भुलाए जा रहा है ।

झर रहा जैसे हो निर्झर[2],
उड़ रहा जैसे हो बादल ।
हो कोई एक शांत नदिया,
बह रही जैसे हो कलकल ।

प्रकृति की सुरताललय से लय मिलाए जा रहा है,
काल की कटु सत्यता को यूँ भुलाए जा रहा है ।

कलियों के जैसा चटखता,
फूलों के जैसा महकता ।
है कोई पंछी वो मानो,
डाल पर जैसे चहकता ।

भर हृदय में सारी खुशियाँ फिर लुटाए जा रहा है,
काल की कटु सत्यता को यूँ भुलाए जा रहा है ।

हो कहीं वर्षा की रिमझिम,
हो कहीं नूपुर[3] की रुनझुन ।
हो भ्रमर[4] जैसे कहीं पर,
गूँजती हो गूँज गुनगुन ।

ले कोई सा राग मधुमय स्वर सजाए जा रहा है,
काल की कटु सत्यता को यूँ भुलाए जा रहा है ।

1. कड़ुआ, अप्रिय ; 2. झरना ; 3. पायल ; 4. भौंरा, भँवरा ।

(06.12.2012)
सिडनी

139. जय जय हे गिरिधारी.......

जय जय हे गिरिधारी[1] बोलो,
जय जय कृष्ण मुरारी[2] बोलो ।

जय जय बोलो जसुमति[3] नंदन[4],
जय जय बोलो असुर[5] निकंदन[6] ।
जय जय बोलो हे वासुदेवा[7],
जय जय बोलो सबदुखभंजन[8] ।

जय बोलो हे नटवर[9] नागर[10],
जय जय कुंजबिहारी[11] बोलो ।

जय जय बोलो हे योगेश्वर[12],
जय जय बोलो हे गोपेश्वर[13] ।
जय जय बोलो हे रे जगपति[14],
जय जय बोलो हे परमेश्वर[15] ।

जय बोलो हे राधावल्लभ[16],
जय हे सुदर्शन धारी बोलो ।

जय जय बोलो हे रे अमर रे,
जय जय बोलो हे रे अजर[17] रे ।
जय जय बोलो हे रे अच्युत[18],
जय जय बोलो हेरे अनघ[19] रे ।

जय जय बोलो हे मधुसूदन[20],
जय जय मुरलीधारी बोलो ।

1. पर्वत (गोवर्धन) को धारण करने वाले ; 2. मुर नामक राक्षस को मारने वाले ; 3. यशोदा ; 4. आनंद देने वाला, पुत्र, बेटा ; 5. दैत्य, दानव, दुष्ट व्यक्ति ; 6. नाश करने वाले ; 7. वासुदेव के पुत्र ; 8. सब दुखों का नाश करने वाले ; 9. नाट्य कला में बहुत कुशल और प्रवीण व्यक्ति ; 10. होशियार, चतुर,

सभ्य पुरूष, नगर में रहने वाला ; 11. लता झाड़ियों में घूमने वाले ; 12. योगियों में श्रेष्ठ ; 13. ग्वालों में श्रेष्ठ ; 14. संसार के स्वामी ; 15. सगुण ब्रह्म जो सम्पूर्ण सृष्टि का रचयिता एवं संचालक ; 16. राधा के प्रिय ; 17. क्षय रहित, जो बूढ़ा न हो ; 18. अटल, स्थिर, परमात्मा, विष्णु ; 19. पवित्र, निरापद, शोकहीन, पुण्य ; 20. मधु नामक दैत्य को मारने वाले ।

(07.12.2012)
सिडनी

140. हमने एक सपना देखा है.......

हमने एक सपना देखा है, हम वह करने साकार चले,
रोको मत हमको रोको मत, हम उर[1] में ले अंगार चले ।

इतिहास बने राजा रानी,
ये दुर्ग महल और मीनारें ।
ये छुआछूत ओर जातिप्रथा,
मजहब की ऊँची दीवारें ।

ये तो सारे हैं अब पीछे, अब तोड़ के इनको पार चले,
रोको मत हमको रोको मत, हम उर में ले अंगार चले ।

भर देंगे अपनी वसुधा में,
हम हरियाली ही हरियाली ।
हर दिन में अपनी ईद मने,
हर रात सजेगी दीवाली ।

हम नेह सजाये नयनों में, मेहनत का ले अधिकार चले,
रोको मत हमको रोको मत, हम उर में ले अंगार चले ।

हम एक साथ एक कोटिश[2] है,
अब तो यह सारा जग जाने ।
कितनी ताकत और हिम्मत है,
अब तो यह सारा जग माने ।

हम आँधी और तूफानों से, हम जैसे पारावार[3] चले,
रोको मत हमको रोको मत, हम उर में ले अंगार चले ।

1. हृदय, छाती ; 2. असंख्य, करोड़ों ; 3. समुद्र ।

(09.12.2012)
सिडनी

141. बात इतनी मेरी मान.......

बात इतनी मेरी, मान जाओ रे तुम,
पास बैठे रहो, यूँ न जाओ रे तुम ।

तुमको देखा नहीं हमने जी भर अभी,
आज जी भर तुम्हीं को देखेगें हम ।
जुल्फें लहराती बिखरी जो शानों[1] पे हैं,
आज इनसे ही जी भर खेलेंगे हम ।

न रहो मौन यूँ, सर झुकाओ न तुम,
पास बैठे रहो, यूँ न जाओ रे तुम ।

जिक्र बाकी है क्या मेरे लब[2] कह रहे,
है सुनाना अभी क्या ये आँखें कहें ।
कैसे दिल यह धड़कता तुम्हारे लिए,
और क्या चल रहीं मेरी साँसे कहें ।

हाल अपना कहो, रे सुनाओ रे तुम,
पास बैठे रहो, यूँ न जाओ रे तुम ।

ये जो तुमने कहा कि कभी फिर सही,
कौन जाने कि आएगी फिर कब घड़ी ।
कौन जाने कि दिन कितनी रातें हमें,
कौन जाने की कब तक हैं साँसें चलीं ।

इस तरह ही हँसो, मुस्कराओ रे तुम,
पास बैठे रहो, यूँ न जाओ रे तुम ।

1. कंधे ; 2. ओठ ।

(11.12.2012)
सिडनी

142. घिर रही गहरी निशा फिर.......

घिर रही गहरी निशा फिर, आ जला लें दीप फिर से,
छा रही फिर से उदासी, आ सजा लें गीत फिर से ।

हैं विकल जैसे इधर हम,
हो ही वैसे तुम उधर भी ।
जागते जैसे इधर हम,
जागते हो तुम उधर भी ।

क्यों रहे रूठा कोई अब, आ मना लें मीत फिर से,
घिर रही गहरी निशा फिर, आ जला लें दीप फिर से ।

क्यों भरे मन में कलुषता[1],
क्यों भरे अँधियार सारा ।
हाल जो इस वक़्त अपना,
हाल वह ही है तुम्हारा ।

नेह से मन जगमगायें, आ चला लें रीति फिर से,
घिर रही गहरी निशा फिर, आ जला लें दीप फिर से ।

साथ मिलकर रात काटें,
साथ मिलकर हम सवेरा ।
जो धरा सजती है लेकर,
जो मेरा हो वह हो तेरा ।

आओ मिलकर मुस्करायें, आ बसा लें प्रीति फिर से,
घिर रही गहरी निशा फिर, आ जला लें दीप फिर से ।

1. मलिनता, दोष, पाप ।

(13.12.2012)
सिडनी

143. बहुत देख ली हमने प्रभु......

तेरी कृपा से सूरज भी देखा,
देखें हैं हमने चंदा-औ-तारे ।
तेरी कृपा से हमने धरा[1] के,
देखें हैं अब तक सारे नजारे ।

तेरी ही कृपा से हँसे मुस्कराए, तुझसे ही अपना शोक[2] और रुदन[3],
बहुत देख ली हमने प्रभु तेरी लीला, धुँधले पड़े अब हमारे नयन ।

तेरी कृपा से गुंजन सुनी भी,
हमने सुनी है कोकिल की पंचम ।
तेरी कृपा से सरगम सुनी भी,
हमने सुनी है वर्षा की रिमझिम ।

हमने सुना जिसने जो भी सुनाया, बहरे हुए अब हमारे करण[4],
बहुत देख ली हमने प्रभु तेरी लीला, धुँधले पड़े अब हमारे नयन ।

तेरी कृपा से पर्वत भी लाँघे,
लाँघे हमीं ने सागर-औ-नदियाँ ।
तेरी कृपा से चलते रहे हैं,
पैरों तले थी सड़कें-औ-गलियाँ ।

चलना था जितना हम चल लिए हैं, दुखने लगे अब हमारे कदम ।
बहुत देख ली हमने प्रभु तेरी लीला, धुँधले पड़े अब हमारे नयन ।

तेरी कृपा से हम बोल पाए,
हमने सुनाए अनगिन फसाने ।
तेरी कृपा से हम गुनगुनाए,
हमने सुनाये अनगिन तराने ।

हमने कहा जो भी हम कह सके हैं, अस्फुट[5] हुए अब हमारे वचन[6],
बहुत देख ली हमने प्रभु तेरी लीला, धुँधले पड़े अब हमारे नयन ।

तेरी कृपा से मन में हमारे,
बसते न जाने कितने ही रंग ।
तेरी कृपा से मन में हमारे,
बसती न जाने कितनीं सुगंध ।

खुशबू कोई हो या बदबू कोई हो, करने गयीं अब सभी तो शयन[7],
बहुत देख ली हमने प्रभु तेरी लीला, धुँधले पड़े अब हमारे नयन ।

तेरी कृपा से हमने अनेकों,
मौसम बिताये तेरी धरा पर ।
तेरी कृपा से हमने अनेकों,
सपने सजाये तेरी धरा पर ।

हर अंग अब तो शिथिल होता अपना, बोझिल हुआ है हमारा बदन,
बहुत देख ली हमने प्रभु तेरी लीला, धुँधले पड़े अब हमारे नयन ।

1. ज़मीन, पृथ्वी, भू ; 2. दुःख ; 3. रोना, विलाप करना ; 4. कान, कर्ण ; 5. अस्पष्ट, जो खिला न हो ; 6. बात, वाणी ; 7. सोना, निद्रा ।

(17.12.2012)
सिडनी

144. छट गया गहरी निशा का.......

छट गया गहरी निशा का मेरे मन छाता अँधेरा,
लो जगा आशाओं का मन में मेरे फिर से सवेरा,

किसने आ दीपक जलाया, कौन है अरे कौन है,
कौन छिप कर मुस्कराया, कौन है अरे कौन है ।

धीरे-धीरे ले सुरभि[1] फिर से पवन बहने लगा,
देख तो सौन्दर्य कितना मन मेरा कहने लगा,

किसने यह जादू चलाया, कौन है अरे कौन है,
कौन छिप कर मुस्कराया, कौन है अरे कौन है ।

खिल रही मन की धरा[2] फिर ले के जाने कितने रंग,
आज फिर से बज रही है मेरे मन में जल तरंग,

किसने यह घूँघट उठाया, कौन है अरे कौन है,
कौन छिप कर मुस्कराया, कौन है अरे कौन है ।

धीरे-धीरे मंद स्वर में बज रही कहीं बाँसुरी,
देख फिर खिलने को आतुर[3] हो रही जूही कली,

किसने एकसा कर दिखाया, कौन है अरे कौन है,
कौन छिप कर मुस्कराया, कौन है अरे कौन है ।

1. खुशबू ; 2. ज़मीन, पृथ्वी, भू ; 3. उतावला, बेचैन, बहुत जल्दी में ।

(18.12.2012)
सिडनी

145. डम डम डम डमरू बजे.......

डम डम डम डमरू बजे हे रे जटाधारी,
थिरक थिरक नृत्य सजे हे रे त्रिपुरारी[1] ।

नृत्यप्रिय हे अनंत[2],
ताल गति लय अभंग[3] ।
विश्वगर्भ[4] नीलकंठ[5],
सृष्टि[6] सजे हो रे ध्वंस[7] ।

कुमति[8], द्वेष[9], दंभ[10] हटे हे रे शूलधारी[11],
थिरक थिरक नृत्य सजे हे रे त्रिपुरारी ।

परमश्रेष्ठ[12] वीतराग[13],
जगद्गुरू विरूपाक्ष[14] ।
पुण्यकीर्ति[15] महाकाल,
विश्वरूप[16] विशालाक्ष[17] ।

लोभ, मोह, क्रोध मिटे हे रे सर्पधारी ।
थिरक थिरक नृत्य सजे हे रे त्रिपुरारी ।

हिरण्यवर्ण[18] हे अक्रूर[19],
परमभूत[20] हे रे शूर[21] ।
तीर्थरूप[22] चंद्रचूड़[23],
हे त्रिनेत्र[24] हे रे सूर्य ।

दया, क्षमा, मुक्ति मिले हे रे गंगधारी,
थिरक थिरक नृत्य सजे हे रे त्रिपुरारी ।

1. तीन शहरों (पुर) के शत्रु ; 2. जिसका अंत न हो, असीम, अक्षय ; 3. अखंडित, न टूटने वाला ; 4. जहाँ से सारे संसार का जन्म होता है ; 5. नीले गले वाले ; 6. निर्माण, रचना, उत्पत्ति, पैदाइश, संसार, प्रकृति, जगत ; 7. विनाश ; 8. बुरे विचार, बेवकूफी ; 9. वैर, शत्रुता, राग का विरोधी भाव 10.

पाखंड, मिथ्या अभिमान, आडम्बर ; 11. त्रिशूल धारण करने वाले ; 12. सबसे अधिक उत्तम, मंगलकारक, शुभ ; 13. राग रहित, निस्पृह ; 14. बदसूरत आँख वाले ; 15. जिसके यशोगान से पुण्य हो ; 16. सर्वव्यापक, संसार के सभी रूपों में विद्यमान ; 17. बड़ी आँखों वाले ; 18. सुनहरे गर्भ वाले, सूक्ष्म शरीर ; 19. दयावान, करुण हृदय ; 20. सबसे अधिक सत्य, श्रेष्ठ जीव ; 21. वीर, बहादुर ; 22. तीर्थ की तरह पूजे जाने वाले ; 23. जिनकी चोटी पर चंद्रमा है ; 24. तीन आँखों वाले ।

(19.12.2012)
सिडनी

146. जाने क्यों मेरा मन व्याकुल.......

जाने क्यों मेरा मन व्याकुल[1],
निसदिन जीता हूँ मैं घुटकर ।
मन करता मैं आकर रोऊँ,
तेरे आँचल में माँ छिपकर ।

कौन है मेरा तेरे सिवा जो,
माथे को आकर सहलाए ।
झरझर बहते आँसू पोंछे,
मेरे सर पर हाथ फिराए ।

कौन है मुझको जो पुचकारे,
थपकी दे दे मृदुस्वर भरकर ।
मन करता यह आकर रोऊँ,
तेरे आँचल में माँ छिपकर ।

कौन है मेरा तेरे सिवा जो,
मेरे सब अवसाद[2] भुला दे ।
मेरे प्यासे मन मरुथल पर,
फिर से गंगा आए बहा दे ।

कौन कहे अब भूल भी जाओ,
बात पुरानी अब सब हँसकर ।
मन करता यह आकर रोऊँ,
तेरे आँचल में माँ छिपकर ।

कौन है मेरा तेरे सिवा जो,
मन में मेरे भर दे गुंजन ।
मन में मेरे कोयल कुहके,
गाये जैसे बुलबुल उपवन[3] ।

मैं फिर से वैसे मुस्काऊँ,
गाऊँ जैसे गुनगुन मधुकर[4]।
मन करता यह आकर रोऊँ,
तेरे आँचल में माँ छिपकर।

1. उद्विगन्, परेशान, उतावला, बेचैन ; 2. उदासी, सुस्ती, खेद, हार, थकावट ; 3. बगीचा ; 4. भँवरा, भौंरा ।

(20.12.2012)
सिडनी

147. नमन देश के जनगणमन.......

नमन देश के जन[1]गण[2]मन,
तुमसे भारत शुभनाम सजे ।
तुमसे भारत का गर्व[3] सजे,
तुमसे भारत सम्मान सजे ।

है कहाँ न उगता नभ[4] सूरज,
हैं कहाँ नहीं झिलमिल तारे ।
हैं कहाँ न छितरें चन्द्रकिरण,
हैं कहाँ न जगते उजियारे ।

हैं कहाँ नहीं दिन और रातें,
कहाँ न सुबह–ओ–शाम सजे ।
तुमसे भारत का गर्व सजे,
तुमसे भारत सम्मान सजे ।

हैं कहाँ न घिरते नभ बादल,
है कहाँ न वर्षा सुर वाली ।
है कहाँ न दिखता इंद्रधनुष,
है कहाँ न फैली हरियाली ।

है कहाँ न उड़ते नभ पंछी,
कहाँ न मधुमय[5] गान सजे ।
तुमसे भारत का गर्व सजे,
तुमसे भारत सम्मान सजे ।

हैं कहाँ नहीं गिरि[6] और घाटी,
हैं कहाँ नहीं नदियाँ नाले ।
हैं कहाँ नहीं वन और उपवन,
हैं कहाँ नहीं पशु[7] मतवाले ।

हैं कहाँ नहीं सजते निर्झर[8],
कहाँ न झरझर तान सजे ।
तुमसे भारत का गर्व सजे,
तुमसे भारत सम्मान सजे ।

है कहाँ न होते हैं मौसम,
है कहाँ न लगती लगन सदा ।
है कहाँ न होती किलकारी,
है कहाँ नहीं सब मगन सदा ।

है कहाँ बताओ इस भू[9] पर,
कहाँ न दृश्य अभिराम[10] सजे ।
तुमसे भारत का गर्व सजे,
तुमसे भारत सम्मान सजे ।

1. जनता, सर्वसाधारण, लोक, लोग, प्रजा ; 2. समूह, वर्ग, श्रेणी, गिरोह ; 3. अभिमान, घमंड, अहंभाव ; 4. आसमान, गगन ; 5. मिठास, माधुर्य ; 6. पर्वत, पहाड़ ; 7. जानवर ; 8. झरना ; 9. जमीन, पृथ्वी, धरा ; 10. अच्छा लगने वाला, मोहक, सुखद ।

(23.12.2012)
सिडनी

148. बात दिल की कहूँ......

बात दिल की कहूँ ओ मेरे साथिया,
मुस्कराना न तुम जो भी मैंने कहा ।

मुझसे टूटें न नभ[1] के सितारे कभी,
काट लाऊँ न दरिया किनारे कभी ।
मैं बता दूँ कि मैं हूँ बहुत आम सा,
मोड़ पाऊँ समय के न धारे कभी ।

रूठ जाना न तुम जो भी मैंने कहा,
मुस्कराना न तुम जो भी मैंने कहा ।

मैं न राँझा[2] हूँ मजनूं[3] हूँ महिवाल[4] हूँ,
रोमियो[5] हूँ न ढोला[6] न फरहाद[7] हूँ ।
जान ले तू ही इतना है काफी मुझे,
मैं हूँ जैसा भी हरदम तेरे साथ हूँ ।

भूल जाना न तुम जो भी मैंने कहा,
मुस्कराना न तुम जो भी मैंने कहा ।

मैं न कहता हूँ तुम ही हो चाहत मेरी,
मैं न कहता हूँ तुम ही जरुरत मेरी ।
पर तेरा साथ ही हो सदा के लिए,
यह तमन्ना[8] भी मेरी इबादत[9] मेरी ।

खिलखिलाना न तुम जो भी मैंने कहा,
मुस्कराना न तुम जो भी मैंने कहा ।

मैं न कहता कि तुम ही तो एक हूर[10] हो,
मैं न कहता कि तुम मेरी तक़दीर हो ।
पर बनाई थी मैंने कभी सोच में,
जीती जगती वही तुम ही तस्वीर हो ।

गुनगुनाना न तुम जो भी मैंने कहा,
मुस्कराना न तुम जो भी मैंने कहा ।

1. आसमान, गगन, आकाश ; 2. पंजाब की प्रेम कथा का नायक, पंजाबी संत कवि वारिस शहर ने प्रसिद्ध बनाया (हीर-राँझा) ; 3. अरब की प्रेम कथा का नायक, कथा फारसी कवियों द्वारा सँवारी गयी (लैला-मजनू) ; 4. पंजाब की प्रेम कथा का नायक (सोहनी-महिवाल) ; 5. इटली की प्रेम कथा का नायक, जिसको शेक्सपियर ने अपने नाटक (रोमियो-जूलियट) से प्रसिद्ध बनाया ; 6. राजस्थान की प्रेम कथा का नायक (ढोला-मारू) ; 7. ईरान की प्रेम कथा का नायक, फिरदौसी के शाहनामा में वर्णित (शीरीं-फरहाद) ; 8. इच्छा, चाहत, कामना, आकांक्षा ; 9. पूजा, उपासना ; 10. स्वर्ग की अप्सरा ; 11. क़िस्मत, भाग्य ।

(24.12.2012)
सिडनी

149. कौन है तू ही बता तेरे.......

कौन है तू ही बता तेरे सिवा फिर कौन है,
कौन है तू ही बता तेरे सिवा फिर कौन है ।

कौन है तेरे सिवा जब देख लूँ देखा करूँ,
कौन है तेरे सिवा जब सोच लूँ सोचा करूँ ।
मैं जिसे मागूँ सदा ही साथ मेरे वह रहे,
ईश से यही वंदना अर्चन करूँ पूजा करूँ ।

कौन है तू ही बता तेरे सिवा फिर कौन है,
कौन है तू ही बता तेरे सिवा फिर कौन है ।

कौन है तेरे सिवा मेरा है अपना कह सकूँ,
साथ चाहे मैं हसूँ और चाहे जितना रो सकूँ ।
कौन है जो कह रहे कि मैं भी तेरे साथ हूँ,
जिसके आँचल में हमेशा चैन से मैं सो सकूँ ।

कौन है तू ही बता तेरे सिवा फिर कौन है,
कौन है तू ही बता तेरे सिवा फिर कौन है ।

कौन है जो नम नयन को पोंछने आगे बढ़े,
कौन है तेरे सिवा मुझको लगा ले जो गले ।
कौन है ऐसा कहे कि यूँ ही तुम बढ़ते चलो,
देख लेना आएगी मंजिल कभी कदमों तले ।

कौन है तू ही बता तेरे सिवा फिर कौन है,
कौन है तू ही बता तेरे सिवा फिर कौन है ।

(25.12.2012)
सिडनी

150. जिंदगी इतनी यही है.......

जिंदगी इतनी यही है यह समझ पहचान लो,
देख लो कि क्या हसीं सा काम बाकी रह गया ।
है डगर ऐसी कि जिस पर लौटना न हो कभी,
सोचना मत तुम कभी आराम बाक़ी रहा गया ।

क्या नहीं भरपूर देखा भोर को जगते हुए,
क्या नहीं भरपूर देखा चाँदनी खिलते हुए ।
या नहीं देखा कि कैसे कब सजा करती धरा,
क्या नहीं भरपूर देखा तारों को हँसते हुए ।

भर चुके सौन्दर्य सारा श्वास में अपनी कहो,
पी चुके क्या सारी मदिरा ज़ाम बाक़ी रह गया ।
है डगर ऐसी कि जिस पर लौटना न हो कभी,
सोचना मत तुम कभी आराम बाक़ी रहा गया ।

क्या हँसे हो मुस्कराए दूसरों के संग कभी,
साथ सुर में गीत गाए दूसरों के संग कभी ।
कोई झरते देख नयना क्या किया तुमने कहो,
क्या कभी आँसू बहाए दूसरों के संग कभी ।

हाथ में कोई हाथ लेकर दूर तक क्या तुम चले,
वह गया पर दिल तुम्हारे नाम बाक़ी रह गया ।
है डगर ऐसी कि जिस पर लौटना न हो कभी,
सोचना मत तुम कभी आराम बाक़ी रहा गया ।

क्या सजाईं राह में तुमने कभी फुलवारियाँ,
या कभी भी सींच दीं पथ पड़ी कुछ क्यारियाँ ।
क्या कभी पथ को बनाया दूसरों को भी सुगम,
क्या कभी भी दूर कीं दूजों की भी दुश्वारियाँ ।

क्या किया ऐसा यहाँ पर शान से तुम कह सको,
मैं मरूँ या अब जिऊँ ये निशान बाक़ी रह गया ।
है डगर ऐसी कि जिस पर लौटना न हो कभी,
सोचना मत तुम कभी आराम बाक़ी रहा गया ।

(26.12.2012)
सिडनी

151. सुदिन है सूर्य उग रहा.......

सुदिन[1] है सूर्य उग रहा दिक्–दिगंत[2] भोर है,
फिर गगन में उठ रहा पंछियों का शोर है ।
हर दिशा में हो रहा मंगलीय गान है,
आगे आगे बढ़ रहा ये मनुज[3] महान है ।

वृक्ष वृक्ष खिल रहे भाँति भाँति के सुमन[4],
एक नयी सुरभि[5] लिए बह रहा है ये पवन ।
गर्व[6] से तना है सर और प्रफुल्ल[7] प्राण है,
आगे आगे बढ़ रहा ये मनुज महान है ।

ढूँढ़ लूँ मैं कुछ नया देख लूँ नया सपन,
चाह यह कि चूम लूँ मैं कोई नया गगन ।
कल्पना के पंख धरा नित[8] नयी उड़ान है,
आगे आगे बढ़ रहा ये मनुज महान है ।

संकटों के सामने वह कभी झुका नहीं,
कंटकों[9] को देख कर वह कभी रुका नहीं ।
लक्ष्य दृष्टि में भरे उर[10] लिए उतान[11] है,
आगे आगे बढ़ रहा ये मनुज महान है ।

ऊँची ऊँची चोटियाँ कभी पड़ीं हैं राह में,
गहरी गहरी घाटियाँ कभी मिलीं हैं राह में ।
है अदम्य[12] साहसी सबसे शक्तिमान है,
आगे आगे बढ़ रहा ये मनुज महान है ।

आस से भरे कदम बार बार उठ रहे,
गीत और रागरंग उर सदा ही खिल रहे ।
है सदा ही सहृदय और बुद्धिमान है,
आगे आगे बढ़ रहा ये मनुज महान है ।

दीप ज्ञान का जला साथ ले के चल रहा,
सत्य शील[13] और अभय[14] साथ संग पल रहा ।
आगे आगे वह चले पीछे सब ज़हान है,
आगे आगे बढ़ रहा ये मनुज महान है ।

शेष[15] हो किसी जगह ऐसी श्रृंखला[16] नहीं,
रुके रहे कभी कहीं यह कभी हुआ नहीं ।
जाने चलना जिंदगी रुकना मृत्यु नाम है,
आगे आगे बढ़ रहा ये मनुज महान है ।

1. शुभ दिन, अच्छा दिन ; 2. चारों ओर ; 3. मनुष्य, आदमी ; 4. फूल ; 5. खुशबू ; 6. अभिमान, घमंड, अहंभाव ; 7. प्रसन्न, खिला हुआ, विकसित ; 8. नित्य, लगातार ; 9. बाधाएँ, काँटे, कष्टदायक ; 10. हृदय, छाती ; 11. छाती का तना होना ; 12. जो दबाया न जा सके, प्रचंड, प्रबल ; 13. नैतिक आचरण और व्यवहार ; 14. निर्भयता, भय का अभाव ; 15. बचा हुआ, बाक़ी ; 16. कतार, श्रेणी, क्रम से आने वाली घटनाएँ, वस्तुएँ आदि ।

(30.12.2012)
सिडनी


प्रकाशक एवं मुद्रक :
अखिल पब्लिशर्स एण्ड प्रिन्टर्स
11, प्रथम तल, जिला परिषद् मार्केट, कोर्ट रोड,
काला आम, बुलन्दशहर-203001, उत्तर प्रदेश, भारत.
मोबाइल : +91-9412744467.
मूल्य : रुपये 250/-